पराग

अप्रैल १९६९

१३२ वां अंक

संपादक : आनंदप्रकाश जैन

अतापता

kissekahani.com

मुखपृष्ठ :

अभी तो जाड़ा लगता है : दीवानसिंह कुमाया १

सरस कहानियां :

पत्थर ही पत्थर : लीला ढड्ढा १२
तलवार का वार : मनहर चौहान १६
सुंदर लड़की : विश्वनाथ गुप्त १९
टेढ़ा शंकर : हसनजमाल छीपा २०
भविष्यवक्ता : गिरधर दासवानी २४
आखिरी रात एक चोर की : लीला सरन २८
लल्लू महाराज : हमीदुल्ला खां ३६
समंद के टुकड़े : स्नेह अग्रवाल ३९
अफसरों की सौगात : निखिलचंद्र जोशी ४०
बचन : गोपालदास नागर ४४

धारावाही 'स्पाई-थ्रिलर' :

डबल सीक्रेट एजेंट...(चौथी किस्त) : चंदर ४

चटपटी कविताएं :

ताक धिनाधिन् ताक् : श्रीप्रसाद ३२
टिकट : शाहिद अब्बास अब्बासी ५२
टक्कर : मंगलूराम मिश्र ५२
गुड़ की चाय : करनजीतसिंह सरन ५३
तोता की खोज : माधराम 'रसेंद्र' ५३
बिल्ली का सपना : नारायणलाल परमार ५३

मज़ेदार कार्टून-कथाएं :

छोटू और लंबू : मेहाब ८
बुद्धूराम : आबिद सुरती १५

अन्य रोचक सामग्री :

सहयोग का महत्त्व (बोध कथा) : हीरालाल ठाकुर १८
१९६८ के डाक-टिकट : लज्जाराज जैन ४८

स्थायी स्तंभ :

कुछ अटपटे कुछ चटपटे : संपादक १०
भोलभाई की भूलभुलैया—११ : २३
कहो कैसी रही (चुटकुले) : [illegible] २६
छोटी छोटी बातें : मिसरा ४३
[illegible] का [illegible] : [illegible] ५६
[illegible] प्रतियोगिता—८२ : [illegible]

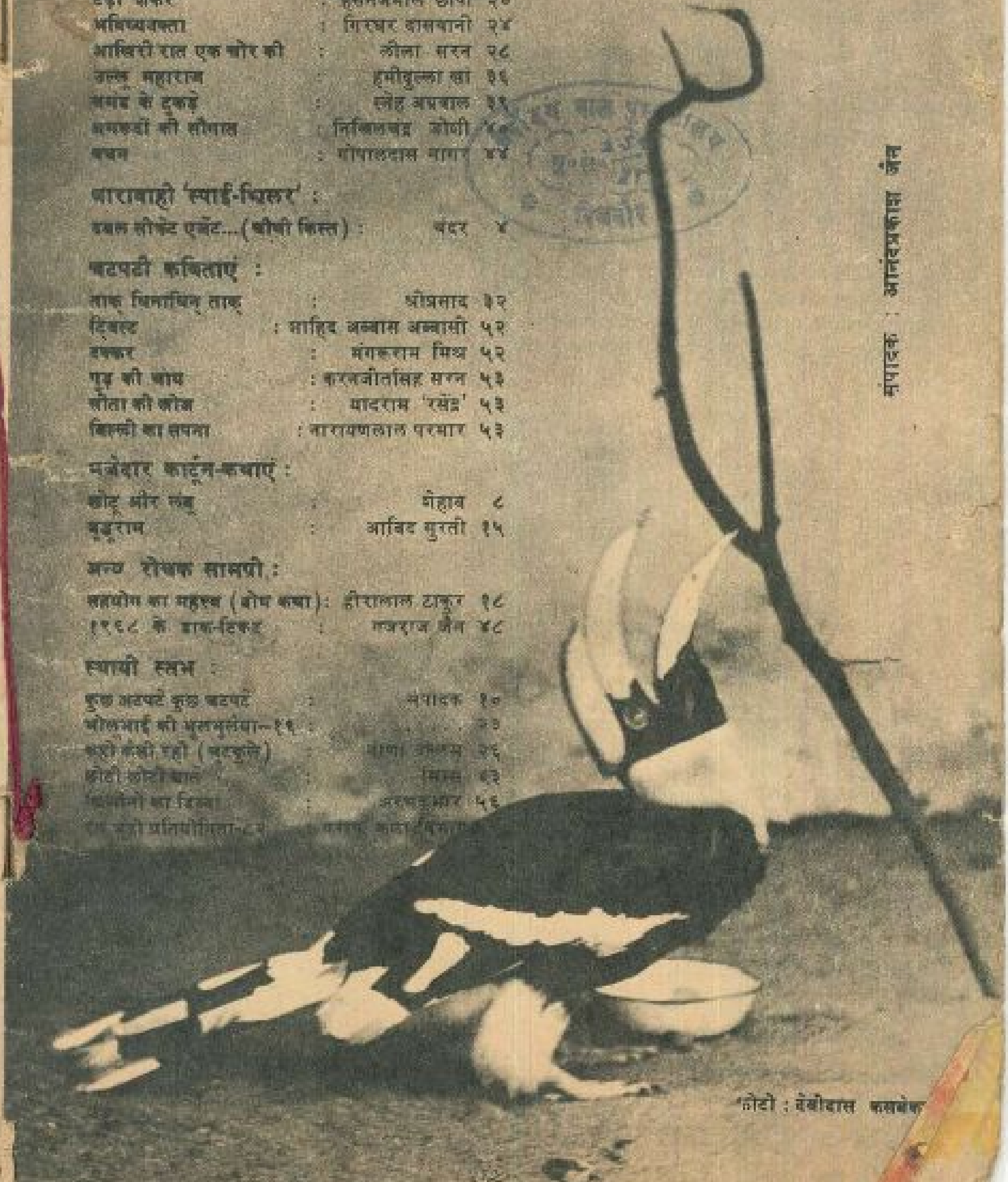

फोटो : देवीदास कसबेकर

kissekahani.com

धारावाही 'स्पाई थ्रिलर'

डबल सीक्रेट एजेंट

kissekahani.com

अब तक आपने पढ़ा था :

एक अध्यापक ने हंसी हंसी में एक बातूनी लड़की के मुंह पर मेडिकल टेप चिपका दी. इसपर छात्रों में तनाव छा गया. बनवारी और शकुनि नाम के दो छात्र प्रिंसिपल के कमरे में ही आग लगाने वाले थे कि एक और छात्र कालेराम मुग्दर लेकर रास्ते में आ धमका. मामा ने उसकी पसलियों में छुरा भोंक दिया और दोनों भाग निकले.

उस दिन जब स्कूल खुला, तो नवें दरजे में दो नए विद्यार्थी नजर आए—राम और श्याम. बड़ी उम्र के दो शैतान छात्रों—दीपक और रंगनाथ—ने उनकी मरम्मत करनी चाही. जवाब में राम और श्याम ने ऐसे हाथ दिखाए कि दोनों का हुलिया देखने लायक हो गया. अकेले में राम और श्याम ने दीपक और रंगनाथ के डेस्कों की तलाशी ली. उन्हें एक किताब में एक परचा मिला जिस पर लिखा था—'शाम को बोरीवाली जगह.'

संध्या को वहां यानी टाउन हाल में दीपक और रंगनाथ अपना दुखड़ा उस्ताद बनवारी और मामा शकुनि से सुना ही रहे थे कि राम और श्याम आ पहुंचे. खासी भिड़ंत हुई. दीपक और रंगनाथ बेहोश हो गए और उस्ताद तथा मामा को भागना पड़ा. दोनों बेहोश बच्चों को पुलिस उठा कर ले गई. वहां उन्होंने कोतवाल के सामने सारा भेद उगल दिया कि उस्ताद बनवारी और मामा शकुनि इन छात्रों के द्वारा विद्यार्थियों में नशे की कुछ विचित्र गोलियों का प्रचार करवा रहे थे. उधर बनवारी और शकुनि अपने बॉस के पास पहुंचे. **अब आगे पढ़िए :**

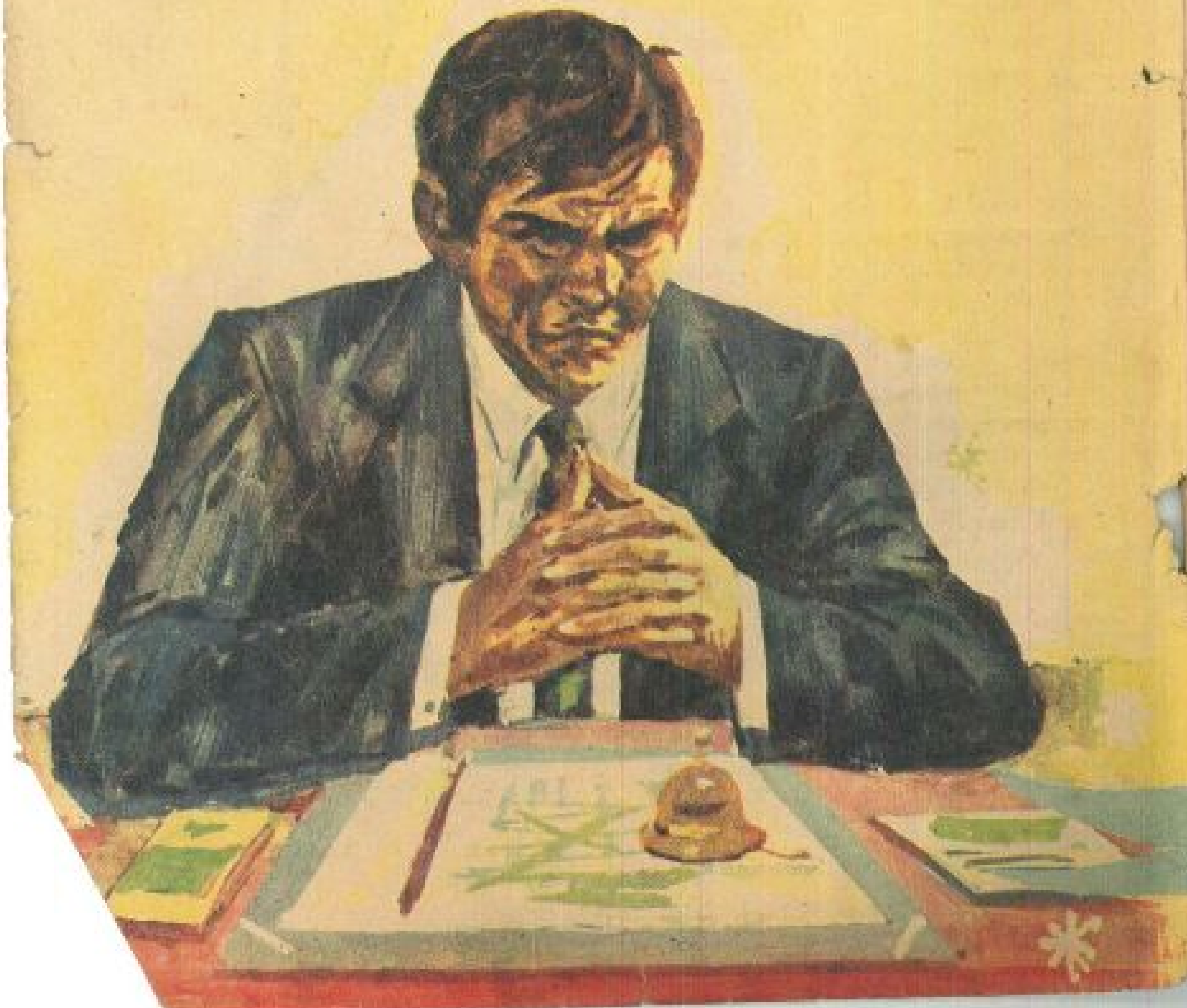

00

"खटमल और
और एक
मसल सके! तुम
उस्ताद घूसेबाज और
वह आदमी नफ
लला! जिओ जिओ

उस्तादों के
आदमी हंस पड़े.

"वे दोनों खा
बनवारी ने अपना
'वे लोग ऊंचे कुश
होते हैं. जरूर कि

"उस्ताद सही
पिनपिने स्वर में
कुश्ती में उनसे
दिन तक मालिश

सामने
कलूटा आदमी जो
साथ लड़कों के
शकुनि ने उस्ताद
कहीं उसके मुंह से

"हो न हो,
ने कहा.

"बॉस," पी
पर पुलिस रेड न
बारह बजे तक

"उन दोनों
बॉस ने छिपकली

"वाह, बॉस
बार में भी निक
टाउन हॉल में
वजह से आपस

00½

(५)

"खटमल और पिस्सू ! अरे, तुम लोग एक खटमल और एक पिस्सू को पकड़कर चुटकियों में नहीं मसल सके! तुम आदमी हो या. . ." सामने खड़े उस्ताद घूंसेबाज और मामा शकुनि की तरफ देखते हुए वह आदमी नफरत के साथ बोला—"हाय हाय, रे लला! जिओ जिओ, रे लला!"

उस्तादों के पीछे खड़े दो मजबूत और कद्दावर आदमी हंस पड़े.

"वे दोनों खालिस अखाड़े-बाज ही नहीं हैं," उस्ताद बनवारी ने अपना बचाव करते हुए दृढ़ता के साथ कहा. "वे लोग ऊंचे कुश्तीबाजों के सिखाए हुए छोकरे मालूम होते हैं. जरूर किसी नामी पहलवान के बेटे हैं."

"उस्ताद सही कहता है," मामा शकुनि ने अपने पिनपिने स्वर में कहा. "मैं दावा करता हूं कि फ्री-स्टाइल कुश्ती में उनसे दारासिंह जीत भले ही जाए, पर दो दिन तक मालिश करवाएगा हड्डियों की!"

सामने खड़ा बिल्लियों-सी आंखों वाला काला-कलूटा आदमी जोर से ठहाका लगाकर हंस पड़ा. उसका साथ लड़कों के पीछे खड़े आदमियों ने भी दिया. मामा शकुनि ने उस्ताद बनवारी की ओर इस तरह देखा कि कहीं उसके मुंह से कोई गलत बात तो नहीं निकल गई.

"हो न हो, वे पुलिस के गुर्गे हैं," उस्ताद बनवारी ने कहा.

"बॉस," पीछे खड़े दो में से एक ने कहा, "फ्रूट-शॉप पर पुलिस रेड नहीं हुई. हम लोग तैयार थे उसके लिए. बारह बजे तक शॉप की सारी सप्लाई हटा दी गई थी."

"उन दोनों लड़कों के बारे में मालूम किया?" बॉस ने छिपकली की तरह आंखें स्थिर करके पूछा.

"वाह, बॉस," दूसरे आदमी ने कहा. "आज के अखबार में भी निकला है कि कल शाम पुलिस को दो लड़के टाउन हॉल में बेहोश पड़े मिले. लगता था कि वे किसी वजह से आपस में लड़ पड़े और ज्यादा चोटें खा गए.

- चंदर

उनके नाम भी दिए हैं—दीपक और रंगनाथ. पुलिस स्टेशन पर उन्हें फर्स्ट-एड दी गई. फिर रात को ही उन्हें सिविल अस्पताल में दाखिल कर दिया गया. ऐसा मालूम होता है कि पुलिस को कोई शक नहीं हुआ, बॉस."

"आई डोंट बिलीव इट (मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता)," बॉस ने अपनी बिल्लियों की तिल्लियों को नचाते हुए कहा. "मैं जानना चाहता हूं कि उन्होंने असल में पुलिस को कुछ बताया है या नहीं—और. . ." उसने घूरकर मामा शकुनि की ओर देखा— "इस गधे के बच्चे ने जो शीशी-की-शीशी उन्हें थमा दी थी, वह भी उनके पास ज्यों-की-त्यों है या नहीं."

"ओ. के., बॉस," पहले आदमी ने तत्परता से कहा.

"ध्यान रखो— अगर जरा भी यह शुबा हो कि उन्होंने पुलिस को कुछ बता दिया है, अगर पुलिस इन गोलियों के चक्कर में पड़ चुकी हो, तो. . ." बॉस की आंखें बिल्ली की तरह ही चमककर सिकुड़ गईं— "इन दोनों हरामी के पिल्लों को और उन दोनों कंबख्तों को काली गोली खिला दी जाए. मैं अपने साथ निकम्मे लोगों को नहीं चाहता."

उस्ताद बनवारी और मामा शकुनि उस काली गोली की करामात पहले भी सुन चुके थे. उससे जबान अकड़कर सूज जाती थी, मुंह टेढ़ा हो जाता था और आदमी बोलने से बिल्कुल वंचित हो जाता था. कुछ समय के लिए उसका स्वाद मारा जाता था और वह उस भोजन को पचाने में लाचार हो जाता था, जिसको दांतों से ज्यादा चबाने की और चबाते समय मुंह में बनने वाले पाचक रस की जरूरत पड़ती है. उन दोनों के हलक यह सुनते ही सूख गए.

"ओ. के., बॉस," पहले आदमी ने बॉस की आज्ञा पर मानो मुहर लगा दी. "इन दोनों को तब तक यहीं, बराबर के कमरे में रख देता हूं."

बॉस ने नाक चढ़ाकर दोनों हाथों की उंगलियां हिलाईं, मानो इन दोनों गंदगियों को वहां से हटा ले जाने की आज्ञा दे रहा हो. पीछे खड़े दोनों आदमियों ने उन दोनों की बांहें अपनी मजबूत बांहों में फंसाईं और कमरे से बाहर ले गए—दूसरे कमरे में बंद करने के लिए.

जब वे वापस बॉस के कमरे में लौटे, तो उन्होंने देखा कि बॉस अखबार पढ़ने में तल्लीन है. जब तक उसने सिर नहीं उठाया, वे उसके जरखरीद गुलामों की तरह मुस्तैद खड़े रहे. फिर अखबार पढ़ते पढ़ते ही बॉस ने कहा—

"रोशनसिंह, क्या वह कुत्ते का पिल्ला ठीक कह रहा था?"

रोशनसिंह बहुत सतर्क आदमी था. वह शहर का सब से कुशल छुरेबाज था. अब तक अनेक हत्याएं उसके नाम मानी जाती थीं, लेकिन पुलिस को किसी के बारे में भी पक्का सबूत नहीं मिला था. लेकिन पुलिस कभी १०९, कभी ११० में उसे गिरफ्तार कर लेती थी और साल-छह महीने को जेल में ठूंस देती थी. जब से बॉस के साथ उसका संपर्क हुआ था, तब से पुलिस की वह तवालत पता नहीं किस जादू के जोर से गायब हो गई थी. बॉस के हाथ लंबे थे.

"जी, हो सकता है वह अपनी खाल बचाने के लिए कह रहा हो कि वे छोकरे पुलिस के छोड़े हुए हैं. आज तक पुलिस या सी. आई. डी. में छोकरों की भरती होते नहीं सुनी. आप फिकर न करें, मैं चंदन को भेजकर एक-दो दिन में ही पता लगा लेता हूं कि वे किस नस्ल के हैं."

"गुड! लेकिन अगर पुलिस ने यह अनहोनी भी कर दिखाई हो, तो मैं चाहता हूं कि इस तरह की कोशिश जितनी जल्दी नापैद कर दी जाए, उतना ही अच्छा. दो दिन के अंदर अंदर दोनों के पेट में छुरा उतर जाना चाहिए."

"येस, बॉस," रोशनसिंह ने प्रसन्न होते हुए कहा. किसी के पेट में छुरा उतार देने पर उसे फी पेट एक हजार रुपये का बोनस मिलता था. वह मन ही मन सोच रहा था कि अगर वे छोकरे पुलिस के द्वारा नियुक्त नहीं भी होंगे, तो भी वह कुछ ऐसे सबूत जुटाने की कोशिश करेगा, जो उन दोनों को इस दुनिया से चलता कर देने के लिए पर्याप्त कारण माने जा सकें.

"अब मैं मिस डोरियन से बात करूंगा," बॉस ने कहा. "उसने ग्यारह बजे का वक्त दिया था, और अब ग्यारह बजने में तीन मिनिट हैं."

"येस, बॉस," कहकर रोशनसिंह चंदन को साथ लेकर कमरे से बाहर निकल गया. दो मिनिट कमरे के अंदर एक दम शांति छाई रही. बॉस ने अखबार भी नहीं उठाया. उंगलियों में उंगलियां फंसाए वह सामने मेज पर हाथ रखे बैठा रहा और दत्तचित्त होकर दरवाजे की तरफ देखता रहा.

दीवार पर लगी पुराने ढर्रे की घंटा-घड़ी ने ग्यारह के घंटे बजाने शुरू किए. ठीक जब ग्यारहवां घंटा बजा, तो कमरे का दरवाजा खुला. उस में से मिस डोरियन कमरे की भीतर दाखिल हुई. उसके पीछे दरवाजा अपने आप बंद हो गया. मिस डोरियन ने उसे पीठ से धक्का दिया. लैच के खटके की आवाज आई.

मिस डोरियन सोलह वर्ष की एक तसवीर नजर आ रही थी. वास्तव में उसकी उमर उन्नीस वर्ष, ग्यारह महीने, उनतीस दिन से कम नहीं थी. मगर वह टीने-

कमाल

इस

जरों की सब से प्रि
'टीन' नाइलटीन से
में टीनेजर थी. उ
वह उसके माथे पर

"हाय, डोरियन

"हाय, जोसेफ
कानों तक फैलाकर

जोसेफ की न
डोरियन सिर्फ बॉब-
वह अपने आप को
तंग मोहरी की पै
कमीज यानी टी-शर्ट
नुमा कपड़े की कोट
एड़ी की चप्पलें—
सांप की छतरीनुमा
हल्की-सी लिपस्टि
भौंहें, सुती हुई लंबी
होंठों पर हमेशा आ
चिट्टा रंग. वह थी

कमाल चश्मे का!

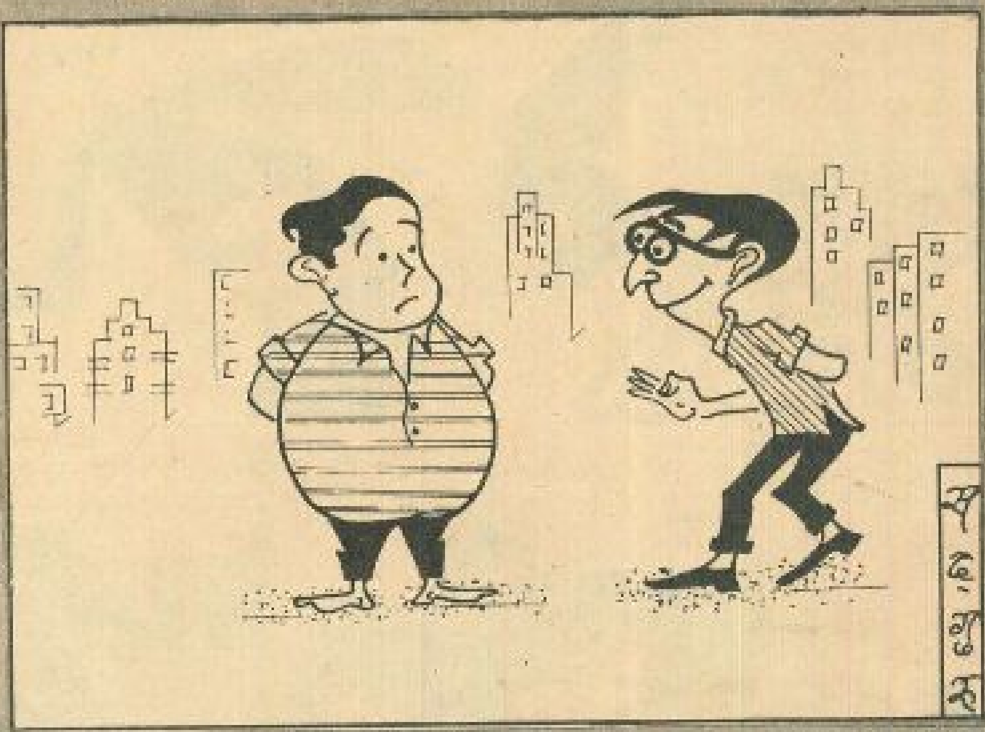

इस चश्मे को लगाकर मैं उल्लू की तरह लगता हूं, लेकिन अगर मैं इसे उतार लूं तो तुम मुझे उल्लू की तरह लगने लगोगे!

जरो की सब से प्रिय टीनेजर थी, और अंगरेजी में 'टीन' नाइनटीन से ऊपर नहीं आता, इसलिए वह मजे में टीनेजर थी. उसकी उमर कोई पूछता ही नहीं था. वह उसके माथे पर लिखी रहती थी—सिक्सटीन!

"हाय, डोरियन!" बॉस ने कहा.

"हाय, जोसेफ!" डोरियन ने अपने लंबे होंठ कानों तक फैलाकर कहा.

जोसेफ की नजरें डोरियन पर थोड़ी देर टिकी. डोरियन सिर्फ बॉब-कट में ही विश्वास नहीं रखती थी, वह अपने आप को बीटिल-धर्म में दीक्षित मानती थी. तंग मोहरी की पैंट, लंबी खड़ी धारियों की मरदानी कमीज यानी टी-शर्ट, बटरफलाई टाई, एक मोटे कंबल-नुमा कपड़े की कोटी, पैरों में मोटे सोल की और चपटी एड़ी की चप्पलें— और फिर आ गया सिर— सिर पर सांप की छतरीनुमा बाल. इस वक्त उसने होंठों पर हल्की-सी लिपस्टिक भी लगा रखी थी. मोटी मोटी भौंहें, तुली हुई लंबी नाक, लंबे कान तक चिर जाने वाले होंठों पर हमेशा आधी हंसी, आधी मुसकराहट—गोरा-चिट्टा रंग. यह थी मिस डोरियन-डे की तसवीर.

"तुम एकदम ठीक वक्त पर आईं," जोसेफ ने प्रसन्न होकर अंगरेजी में कहा.

"टाइम और ट्यून दोनों एक ही चीज के दो नाम हैं," डोरियन ने खिलखिलाकर कहा.

"लेकिन तुम यह भूल जाती हो कि तुम एक बीटिल हो, और बीटिलों के लिए टाइम ठहर कर चलता है," जोसेफ ने कहा.

"सो स्वीट आफ यू, जोसेफ (कितने अच्छे हो तुम)!"

"खबर आज के अखबार में आ गई है," स्वीट जोसेफ ने कुरसी की ओर संकेत करते हुए कहा.

"देख ली है," डोरियन ने भी अंगरेजी में ही कहा. "वे लोग आ रहे हैं, जोसेफ. वे आ रहे हैं. ओह, माई!" कहते हुए मिस डोरियन ने दोनों नन्हे नन्हे हाथ अपने घुटनों में दबाए और झूम उठी. फिर गाने लगी— "मोर बर्ड फैन सिंग—" और साथ ही उसने चीखने के लिए मुंह खोला.

(कृपया पृष्ठ ३४ देखिए)

kissekahani.com

अरे बाप रे, लोग हमें भागते देख कर 'चोर-चोर' चिल्लाने लगे!
देखते ही देखते भीड़ में कुछ कुत्ते भी शामिल हो गए और पुलिसवाले भी...
चोर भागने न पाएं!
चोर तब भागते रहे और लोग बड़ी तादाद में उन्हें खदेड़ते रहे. सहसा...
अरे बाप रे! बड़ी जोर की ठोकर लगी!
खबरदार! अगर जरा भी हिले तो गोली मार दी जाएगी!
हुजूर, हम चोर नहीं हैं! यह लिफाफा सड़क पर पड़ा हुआ मिला! हमने इसे उठाया ही था कि लोग 'चोर-चोर' कह कर पीछे लग गए!
लिफाफा सादा था. उसमें केवल एक चीज थी...
सत्यानाश! लिफाफे में नोटों की साइज के कागजों का एक बंडल है जिस पर लिखा है — 'अप्रैल फूल!'

ओमप्रकाश भाटिया, ग्वालियर :

राम और लक्ष्मण की पत्नियों के नाम तो हम जानते हैं, लेकिन भरत और शत्रुघ्न की पत्नियों के नाम हमने कहीं नहीं पढ़े. क्या उन्होंने शादी नहीं की थी?

आपने रामायण नहीं पढ़ी, तो रामायण ही नहीं लिखी गई थी!

हरीशकुमार पंडित, रतलाम :

'पराग' देश-विदेश में पहुंचाया जाता है परंतु स्वर्ग और नरक में क्यों नहीं पहुंचाया जाता?

स्वर्ग में तो पहले से ही एक पाठक बुक कर चुके हैं—हां, नरक की एजेंसी आप को दी जा सकती है!

विक्रमसिंह, कोटा :

यदि 'मंद' का अर्थ धीमा या कम होता है, तो फिर अक्लमंद का मतलब बुद्धिमान क्यों?

अकलमंदी की बात है!

हरजीतसिंह परवाना, गोंदिया :

जब वैज्ञानिकों ने 'आक्सीजन' की खोज नहीं की थी, उस समय लोग कैसे जिंदा रहते थे?

आक्सीजन ने लोगों की खोज कर ली थी!

माला वर्मा, पटना :

बच्चे कल के कर्णधार हैं, तो आज के?

पत्थरधार!

अरुणकुमार सिन्हा, आरा :

गाने की किताब के गाने जल्द याद होते हैं, पर पुस्तक के दोहे उतनी जल्दी याद नहीं होते?

सिनेमाघर में अगली कक्षा का टिकट जल्दी मिल जाता है!

सुरेशचंद्र शाह, बैतूल :

उल्लू की दुम कितनी बड़ी होती है?

अपने मास्टर साहब से कहिए, वह तुरंत नाप देंगे!

एम. कुमार, झुमरीतिलैया :

स्वर्ग का पता क्या है?

पहले टिकट कटाइए, फ्री पास कतई बंद!

कमल केसवानी, नई दिल्ली :

मैंने कमल के फूल से लेकर 'अप्रैल फूल' तक सभी फूलों का पराग जांच लिया, पर आपका 'पराग' किसी फूल में नहीं मिला. फिर यह किस फूल का पराग है?

आप ही का है!

जैन एम. कुमार, झुमरीतिलैया :

विदेश यात्रा के दौरान हमारे मंत्रियों को विदेशवाले जानवर क्यों भेंट करते हैं?

चिड़ियाघर के प्रतिनिधियों को और भेंट ही क्या दी जाए!

बहुत से साधु-महात्मा और आजकल के 'बिटिल' आदि लंबे बाल क्यों रखते हैं?

जिससे उनके मस्तिष्क के आकार का पता न चल सके!

रैमन सामुएल, गोंदिया :

अगर कोई बौना चांद को छूने का प्रयत्न करे, तो?

अगर आप भी बौने हुए, तो आपकी चांद की खैर नहीं!

गिरीशनंदनप्रसाद, मुजफ्फरपुर :

क्या गधे भी 'पराग' पढ़ते हैं?

आप पढ़ते हैं— यही बहुत है!

अखिलकुमार, अलीगढ़ :

कहते हैं—घोड़े के पिछाड़ी, अफसर के अगाड़ी नहीं चलना चाहिए. यदि अफसर घोड़े पर चढ़ा हुआ हो, तो?

घोड़े से ही कहिए न कि यह खिदमत आपको अंजाम करने का मौका दे!

राजेंद्रप्रसाद खंडेलवाल, जयपुर :

हर मां को अपने पुत्र का स्वास्थ्य गिरा हुआ क्यों लगता है?

घर के मोर्चे पर अपनी ओर से एक पहलवान खड़ा करने के लिए!

उत्तरकुमार, धामपुर :

मेरा नाम उत्तर है, लेकिन फिर भी मुझसे प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए जाते?

जो आपसे प्रश्न करे आप स्वयं उसके सिर पर सवार हो जाइए!

राजेशकुमार त्रिवेदी, रायपुर :

अवतारसिंह की कहानियों वाले दादा जी और आप दादा जी में क्या अंतर है?

वह अभी दादागीरी सीख रहे हैं!

बच्चों के अटपटे प्र
स्तंभ में छापते हैं.
होंगे, उन्हें सुंदर सुं
स्कार मिले हैं उनके
लगा है. प्रश्न कार्ड
तीन से ज्यादा मत
के उत्तर नहीं दिए
संपादक, 'पराग
नं. २१३, टाइम्स

ऋषिकुमार सक्सेना,
रसगुल्ले का ना
आ जाता है?
मिठाइयों के राजा
के लिए!
निर्मलकुमारसिंह,
हमारे दो कान
काम चल सकता है
एक मास्टर जी के
जयप्रकाश श्रीवास्त
क्या कारण है
ही मुझे आपकी शक
यही सलाह दूसरे
फोटोग्राफर बहुत महंगे
लक्ष्मण बी. अमर,
भिखारी के घ
होता है?
कुम्हार, बुनकिए
हो जाने पर!
धर्मपाल चावला,
भगवान ने एक
दी? अभी तो जो
जाए!
अगर आप चपत
तो आंख मींचकर
यादवेंद्रप्रतापसिंह,
सब से बड़ा बर्त
प्रशांत महासागर
शंभूप्रसाद, सौंदा (
संस्कृत अनेक
जाती है, तो संस्कृ
संस्कृति!

बच्चों के अटपटे प्रश्नों के चटपटे उत्तर हम इस स्तंभ में छापते हैं. जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदर सुंदर पुरस्कार मिलेंगे. जिन्हें पुरस्कार मिले हैं उनके नाम के पहले ★ का निशान लगा है. प्रश्न कार्ड पर ही भेजो और एक बार में तीन से ज्यादा मत भेजो. इस स्तंभ में पहेलियों के उत्तर नहीं दिए जाएंगे. पता याद कर लो: संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई-१.

ऋषिकुमार सक्सेना, ओबेदुल्लागंज (भोपाल) :

रसगुल्ले का नाम सुनते ही मुंह में पानी क्यों आ जाता है?

मिठाइयों के राजा के स्वागत में छिड़काव करने के लिए!

निर्मलकुमारसिंह, सिताबदियरा (छपरा) :

हमारे दो कान क्यों हैं, जब कि एक से भी काम चल सकता है?

एक मास्टर जी के उखाड़ने के लिए!

जयप्रकाश श्रीवास्तव, मधुपुर (दुमका) :

क्या कारण है कि आप की शक्ल देखे बिना ही मुझे आपकी शक्ल नजर आती है?

यही सलाह दूसरे पाठकों को भी दीजिए—आजकल फोटोग्राफर बहुत महंगे हो गए हैं!

लक्ष्मण बी. अमर, जोधपुर :

भिखारी के घर का चिराग कब रोशन होता है?

कुम्हार, धुनकिए और तेली—तीनों की मेहरबानी हो जाने पर!

धर्मपाल चावला, सहारनपुर :

भगवान ने एक आंख पीछे क्यों नहीं कर दी? अभी तो जो चाहे वही पीछे से चपत मार जाए!

अगर आप चपत खाने की ही योग्यता रखते हैं, तो आंख मींचकर खड़े हो जाएंगे!

यादवेंद्रप्रतापसिंह, लखनऊ :

सब से बड़ा बर्तन कौनसा है?

प्रशांत महासागर!

शंभुप्रसाद, सौंदा (हजारीबाग) :

संस्कृत अनेक भाषाओं की जननी कही जाती है, तो संस्कृत की जननी?

संस्कृति!

सुरेशकुमार तथा राजकुमार टाटिया, कलकत्ता :

मुझे रोज घर में मार खाने की आदत हो गई है, इससे मैं छुटकारा कैसे पा सकता हूं?

घर के जरा कमजोर पड़ते हैं—कुछ बाहर के लोगों को सेवा करने का अवसर दीजिए, आदत छूट जाएगी!

नंदलाल प्रसाद लाल, बैरगनियां :

किसी की तकदीर का फाटक खुलते खुलते रुक जाए, तो?

जितना खुल गया हो, वही बंद न हो जाए, इसकी चिंता करनी चाहिए!

कमरवहीद नकवी, वाराणसी :

मनुष्य के बाल और नाखून क्यों बढ़ते हैं?

इसलिए कि बेचारे नाई लोग भूखों न मर जाएं!

जसबीरकौर बाहिया, कलकत्ता :

यदि दाढ़ियों पर भी कर लगाया जाए, तो आप क्या करेंगे?

दाढ़ी को ही उतार कर सरकार के मुंह पर लगा देंगे!

आनंदकुमार जोतवानी, भाटापारा :

रात के अंधेरे और दिन के अंधेरे में क्या अंतर है?

पहला परीक्षा से पहले पहले रहता है, दूसरा परिणाम देखकर आता है!

आशुतोषकुमार रस्तोगी, मुरादाबाद :

हम नाड़े से कमर बांधते हैं या पायजामा?

एक शायर के मुताबिक—अगर आपके कमर ही न हो, तो आप पायजामा कहां बांधेंगे!

सुरेंद्र मखीजा पंजाबी, बिलासपुर :

आजकल विजय सदैव बहुमत की होती है, परंतु एक मछली पूरे तालाब को गंदा कैसे कर देती है?

बंबई की 'शिवसेना' कर तो रही है!

★ **अमरेशकुमारसिंह, द्वारा अवधलालप्रसाद, स्टेशन मास्टर, सरदारनगर रेलवे स्टेशन, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) :**

कुछ दिनों से अंग्रेजी में सपने देखा करता हूं, क्या आप उसका हिंदी अनुवाद कर देंगे?

आप सोते हुए देखते होंगे. अभी हमारा देश उन्हीं के सपनों का अनुवाद कर रहा है, जो उन्हें जागते हुए देखते हैं!

★ **अशोककुमार जावर, कक्षा ८ बी, आर. एस. डी. हाई स्कूल, डबवाली रोड, सिरसा (हरियाणा) :**

बच्चे राष्ट्र की संपत्ति हैं, तो बड़े?

कच्चे पुल तैयार करने वाले ठेकेदार!

न जाने कौन बुद्धू होगा जिसने 'फर्स्ट अप्रैल फूल' (मूर्ख) बनाने का रिवाज चलाया होगा. मुझे ऐसी बातें बिल्कुल अच्छी नहीं लगती. बीनू ने पिछले साल मुझे फूल (मूर्ख) बनाया था. बड़ी पक्की सहेली की दुम बनती है. सारे में मेरी वह खिल्ली उड़वाई थी कि मैं महीने भर बीनू से बोली नहीं. वह तो बीनू का 'बर्थ डे' न आता तो मैं उससे तब भी न बोलती.

मालूम है, उसने क्या किया था? उसने न जाने कैसे एक कागज पर गधी की तसवीर बनाकर मेरी ड्रेस के पीछे चिपका दी थी. उस पर लिखा था—''मैं पत्थर हूं. बच के निकलना!'' सारे दिन सब बच्चे मेरा मजाक बनाते रहे—'भई, बच के चलो, कहीं लग न जाए!' और शाम को घर आने पर मम्मी ने वह कागज निकालकर मुझे दिखाया था. यह बहादुरे का बच्चा है न हमारा नौकर,

एक पथरीली कहानी

पत्थर ही पत्थर

मुझे देखकर हंसते हंसते लोटपोट हो गया था. बदतमीज कहीं का! मुझे ऐसा रोना आया था कि क्या बताऊं!

बीनू और इन सबने मुझे तंग न किया होता, तो मैं कभी भी इन सबको 'अप्रैल फूल' बनाने की न सोचती. मैं हरगिज ऐसी बुद्धूपने की बातों में न पड़ती, पर क्या बताऊं. . . !

जनवरी में हमारे पड़ोस की कोठी में एक एस. डी. ओ. साहब बदली हो कर आए थे. उनकी लड़की रेखा उम्र में हमारे ही बराबर है. पर वह मथुरा में ही अपनी बुआ के पास रह गई थी. लेकिन होली पर वह अपने पापा-मम्मी के पास आ गई थी. जिस दिन मथुरा लौटने वाली थी, उसी दिन उसे तेज बुखार आ गया और टायफायड हो गया. अब ठीक होकर वह चार-पांच अप्रैल को वापस मथुरा जाने वाली थी.

मैंने भी सोचा कि रेखा के जन्मदिन के बहाने पिछले साल का बदला सबसे एक साथ लिया जाए—ऐसा बदला कि सारे के सारे हमेशा याद रखें!

पापा के एक दोस्त नाई की मंडी में रहते हैं. उनका लड़का परेश तेरह साल का है, मुझसे तीन-चार साल बड़ा. मैंने उसी को अपना हमराज बनाया. उसने बड़े सुंदर सुंदर अक्षरों में एक निमंत्रण पत्र लिखा—रेखा की मम्मी की तरफ से, कि सब बच्चों को रेखा के जन्मदिन के उपलक्ष्य में पहली अप्रैल को चाय का निमंत्रण है. सभी बच्चे जरूर जरूर आवें. नीचे निमंत्रित बच्चों के नाम थे, जिनमें सबसे ऊपर मेरा नाम था. (जिससे किसी को मेरे ऊपर शक न हो.) नीचे एक छोटी-सी सूचना भी थी कि कोई भी रेखा से इसका जिक्र न करें; क्योंकि अचानक सबको देखकर उसे बड़ी प्रसन्नता होगी. यह सब लिखवाने और किसी से न कहने के लिए परेश को पूरे डेढ़ रुपये वाली चाकलेट की घूस देनी पड़ी. मैंने सोचा था, आधी चाकलेट तो वह मुझे देगा ही और इस तरह मेरे आधे पैसे वसूल हो जाएंगे, पर उसने सिर्फ एक चौकोर टुकड़ा मेरे हाथ में थमा दिया, बाकी सब खुद हड़प गया. नदीदा कहीं का!

अब सवाल था, कि वह निमंत्रण किससे भिजवाया जाए. सो मैंने रेखा के घर की महरी को पकड़ा और खूब समझा दिया कि सिवाय रेखा के वह सबके पास इस

चिट्ठी को देकर दस्तख
लगी मुफ्त में मेरा काम
इस काम के लिए देना
रुपये जमा हुए थे, उसीमें

अब बीनू, पिंकी,
मैं भी बड़ी खुश. इसीके
जब भी सब मिले, तो
कर पार्टी में जाएगा. रे
जाएगा? पिंकी फाउंटेन
राइटिंग पैड और लिफा
रेखा मथुरा में रहती है
काम आएगा. साथ में
भी था. छुटू ने एक ग्लोब

ले
दोनों
नहीं
पाप
लाए
ही
कि

सुबह
देखने
सब अपने अपने प्रेजेंट
उसकी मम्मी परेशान-सी
कर कहेंगी कि 'अरे, हम
रेखा का जन्म-दिन तो
खिसियानी सूरतें देखने
आएगा! सारे के सारे
सा मुंह लेकर लौटेंगे.

चिट्ठी को देकर दस्तखत करा लाए. पर वह क्यों करने लगी मुफ्त में मेरा काम? और उसको भी पूरा एक रुपया इस काम के लिए देना पड़ा. मेरी गुल्लक में सवा तीन रुपये जमा हुए थे, उसीमें से यह सब खर्चा किया था मैंने.

अब बीनू, पिंकी, खुन्नू, दीना, पांचू सभी बड़े खुश. मैं भी बड़ी खुश. इसीके लिए तो ढाई रुपये खर्च किए थे. जब भी सब मिले, तो यही बातें हुईं कि कौन क्या पहन कर पार्टी में जाएगा. रेवा के लिए कौन क्या प्रेजेंट ले जाएगा? पिंकी फाउंटेन पेन दे रही थी. बीनू की मां एक राइटिंग पैड और लिफाफे लाई थी— यह सोचकर कि रेवा मथुरा में रहती है; मां-बाप को चिट्ठी लिखने के काम आएगा. साथ में तसवीरों वाले पोस्ट कार्डों का सेट भी था. खुन्नू ने एक ग्लोब खरीदा था. दीना और पांचू क्या

ले जाएंगे, पता नहीं था, क्योंकि उन दोनों ही के पापा अभी तक कुछ लाए नहीं थे. मैंने भी कह दिया कि 'मेरे पापा ने कहा है कि कोई बढ़िया चीज लाएंगे, देखो क्या लाकर देते हैं.' मन ही मन मुझे बड़ी हंसी आ रही थी कि सारे के सारे खूब उल्लू बन रहे हैं.

दूसरे दिन ही पहली अप्रैल थी. सुबह से मेरे मन में शाम का नजारा देखने की बेचैनी थी—जब कि सबके सब अपने अपने प्रेजेंट लेकर जाएंगे और रेवा और उसकी मम्मी परेशान-सी सब के मुंह ताकेंगी और घबड़ा कर कहेंगी कि 'अरे, हमने तो किसी को नहीं बुलाया था. रेवा का जन्म-दिन तो आज है भी नहीं.' उस समय सबकी खिसियानी सूरतें देखने काबिल होंगी. वाह, क्या मजा आएगा! सारे के सारे नवीदे मिठाई खाने के बदले पिटा-सा मुंह लेकर लौटेंगे.

कल पिंकी कह रही थी कि कहीं हमें 'अप्रैल फूल' तो नहीं बनाया जा रहा है, तो पांचू और दीना दोनों ही बोले—"वाह, रेवा की मम्मी हमें क्यों बेवकूफ बनाने लगीं? यदि रेवा बुलाती तो कोई बात भी सोचने की." सभी ने यह बात मान ली थी.

सारे दिन स्कूल में मेरा मन नहीं लगा. लेकिन एक बात सबसे मुश्किल थी. वह यह कि मुझे तो मालूम ही है कि सबको बेवकूफ बनाया जा रहा है, इसलिए मैं जाऊं या नहीं. बिना गए सब की खिसियानी सूरतें देखूंगी तो कैसे? जाऊं तो कुछ प्रेजेंट ले जाना चाहिए या नहीं?

शाम को घर आकर मैंने जल्दी से एक डिब्बा लिया. उसमें खूब से कागज भरे, बीच में कागज लिपटा एक पत्थर रखा. उस पर लिखा : 'फर्स्ट अप्रैल फूल!' फिर डिब्बे पर एक लाल कागज चढ़ाया और सादी-सी फ्रॉक पहन कर रेवा के घर चल दी. सोचा था बाहर से

— शीला इंद्र —

ही रेवा को दे दूंगी कि मुझे जरूरी काम से जाना है, मैं आ न सकूंगी.

रास्ते में सोचती जा रही थी कि ये लोग लौटते हुए या रेवा के घर से निकलते हुए दिखाई दे जाएं, तो ही मजा रहे. पर न तो मुझे रास्ते में कोई दिखा, न रेवा के घर से निकलता हुआ ही मिला. हाय राम! कहीं ऐसा तो नहीं कि वे लोग आए ही न हों और सबको पता लग गया हो कि वे बुद्धू बनाए जा रहे हैं.

इसी उलझन में मैं बाहर के दरवाजे तक पहुंची, तो सामने महरी बैठी तमाखू खा रही थी. मुझे देखते ही काली काली बत्तीसी निपोरकर बोली— "आवो, मिश्री रानी, आवो. सबके सब खाय रहे हैं. तुमहु आवो, माल उड़ावो. तुम्हार चिठिया ने तो खूब काम बनावो."

"क्या सब खा रहे हैं?" मैं हैरान-सी महरी का मुंह ताकती रह गई. "क्या कह रही है तू?"

तभी रेवा मुझे दरवाजे पर देखकर भागती हुई आई. "आओ, मिश्री, आओ. तुमने बड़ी देर कर दी. तुम्हारा इंतजार करते करते अभी अभी खाना शुरू किया है."

मैं घबड़ा गई: "क्या तेरा सचमुच आज जन्म दिन है"

चिट्ठी को देकर दस्तखत करा लाए. पर वह क्यों करने लगी मुफ्त में मेरा काम? और उसको भी पूरा एक रुपया इस काम के लिए देना पड़ा. मेरी गुल्लक में सवा तीन रुपये जमा हुए थे, उसीमें से यह सब खर्चा किया था मैंने.

अब बीनू, पिंकी, छुन्नू, दीना, पांचू सभी बड़े खुश. मैं भी बड़ी खुश. इसीके लिए तो ढाई रुपये खर्च किए थे. जब भी सब मिले, तो यही बातें हुई कि कौन क्या पहन कर पार्टी में जाएगा. रेवा के लिए कौन क्या प्रेजेंट ले जाएगा? पिंकी फाउंटेन पेन दे रही थी. बीनू की मां एक राइटिंग पैड और लिफाफे लाई थी— यह सोचकर कि रेवा मथुरा में रहती है; मां-बाप को चिट्ठी लिखने के काम आएगा. साथ में तसवीरों वाले पोस्ट कार्डों का सेट भी था. छुन्नू ने एक ग्लोब खरीदा था. दीना और पांचू क्या

कल पिंकी कह रही थी कि कहीं हमें 'अप्रैल फूल' तो नहीं बनाया जा रहा है, तो पांचू और दीना दोनों ही बोले—"वाह, रेवा की मम्मी हमें क्यों बेवकूफ बनाने लगीं? यदि रेवा बुलाती तो कोई बात थी सोचने की." सभी ने यह बात मान ली थी.

सारे दिन स्कूल में मेरा मन नहीं लगा. लेकिन एक बात सबसे मुश्किल थी. वह यह कि मुझे तो मालूम ही है कि सबको बेवकूफ बनाया जा रहा है, इसलिए मैं जाऊं या नहीं. बिना गए सब की खिसियानी सूरतें देखूंगी तो कैसे? जाऊं तो कुछ प्रेजेंट ले जाना चाहिए या नहीं?

शाम को घर आकर मैंने जल्दी से एक डिब्बा लिया. उसमें खूब से कागज भरे, बीच में कागज लिपटा एक पत्थर रखा. उस पर लिखा : 'फर्स्ट अप्रैल फूल!' फिर डिब्बे पर एक लाल कागज चढ़ाया और सादी-सी फ्रॉक पहन कर रेवा के घर चल दी. सोचा था बाहर से

kissekahani.com

ही रेवा को दे दूंगी कि मुझे जरूरी काम से जाना है, मैं आ न सकूंगी.

रास्ते में सोचती जा रही थी कि ये लोग लौटते हुए या रेवा के घर से निकलते हुए दिखाई दे जाएं, तो ही मजा रहे. पर न तो मुझे रास्ते में कोई दिखा, न रेवा के घर से निकलता हुआ ही मिला. हाय राम! कहीं ऐसा तो नहीं कि वे लोग आए ही न हों और सबको पता लग गया हो कि वे बुद्धू बनाए जा रहे हैं.

इसी उलझन में मैं बाहर के दरवाजे तक पहुंची, तो सामने महरी बैठी तमाखू खा रही थी. मुझे देखते ही काली काली बत्तीसी निपोरकर बोली— "आवो, मिश्री रानी, आवो. सबके सब खाय रहे हैं. तुमहु जावो, माल उड़ावो. तुम्हार चिठिया ने तो खूब काम बनावो."

"क्या सब खा रहे हैं?" मैं हैरान-सी महरी का मुंह ताकती रह गई. "क्या कह रही है तू?"

तभी रेवा मुझे दरवाजे पर देखकर भागती हुई आई. "आओ, मिश्री, आओ. तुमने बड़ी देर कर दी. तुम्हारा इंतजार करते करते अभी अभी खाना शुरू किया है."

मैं घबड़ा गई: "क्या तेरा सचमुच आज जन्म दिन है?"

ले जाएंगे, पता नहीं था, क्योंकि उन दोनों ही के पापा अभी तक कुछ लाए नहीं थे. मैंने भी कह दिया कि 'मेरे पापा ने कहा है कि कोई बढ़िया चीज लाएंगे, देखो क्या लाकर देते हैं.' मन ही मन मुझे बड़ी हंसी आ रही थी कि सारे के सारे खूब उल्लू बन रहे हैं.

दूसरे दिन ही पहली अप्रैल थी. सुबह से मेरे मन में शाम का नजारा देखने की बेचैनी थी—जब कि सबके सब अपने अपने प्रेजेंट लेकर जाएंगे और रेवा और उसकी मम्मी परेशान-सी सब के मुंह ताकेंगी और घबड़ा कर कहेंगी कि 'अरे, हमने तो किसी को नहीं बुलाया था. रेवा का जन्म-दिन तो आज है भी नहीं.' उस समय सबकी खिसियानी सूरतें देखने काबिल होंगी. वाह, क्या मजा आएगा! सारे के सारे नदीदे मिठाई खाने के बदले पिटा-सा मुंह लेकर लौटेंगे.

आपकी सफलता सुरक्षित

ग्लोब

के निरिक्षण में

A
KASHYAP
PRODUCT

अन्य प्रसिद्ध ज्योमेट्री बाक्स - डेल्टा, को-हि-नूर, हार्स इत्यादि

निर्माता :

जी. एस. कश्यप एंड सन्स

पटोदी हाउस, दरिया गंज देहली-६ फोन : २७१६९४

आप मेरा समय नष्ट क
की बातें इतनी अटपटी
हुआ, कहीं यह पागल तो
लेकिन महंत की आं
पागल की आंखों में न
उसने गंभीरता से कहा,
दें तो. . . पूरे एशिया पर
की होगी."
"महंत, मैं फिर से क
कर रहे हैं. हट जाइए
सैनिक इंतजार कर रहे हैं
यहां से उठा लेना है."
सवार होने ही वाला था
माइनर की प्रजा की
मेरा विश्वास है कि गांठ
नहीं लगेगा. यदि आप
जाएंगे, तो प्रजा को दुःख
"ओह!" सिकंदर
कुछ ही देर बाद
पास खड़ा दिखाई दिया.
था. जैसा कि महंत ने ब
से सचमुच एक रस्सा बं
से बंधी थी बैलगाड़ी.
खंभे के बीचोंबीच लगाई
सिकंदर देखता रह
गांठ थी. वह दो रस्सों
थी, लेकिन दोनों रस्सों
खूबी से समा गए थे कि
असंभव था.
"यह गांठ हमारे
यह बैलगाड़ी उन्हीं की
उसके मुंह से एक वि
बैलगाड़ी और एक रा
महंत की ओर देखने

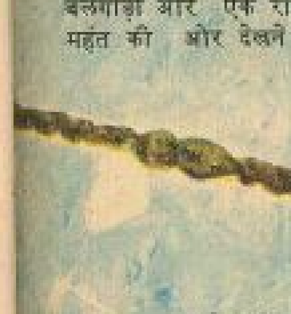

महाराज, यह बैलगाड़ी
थियों ने एक खास
कि उस दिन सुबह जो
के सामने से गुजरे, उसे
उस दिन सुबह यहां से
से पहले गुजरा. वह
जनता और सैनिकों ने
राजा बना दिया गया.

आप मेरा समय नष्ट कर रहे हैं." सिकंदर को महंत की बातें इतनी अटपटी लगी रही थीं कि उसे शक हुआ, कहीं यह पागल तो नहीं है.

लेकिन महंत की आंखों में जो चमक थी, वह किसी पागल की आंखों में नहीं हो सकती थी. "महाराज," उसने गंभीरता से कहा, "यदि आप उस गांठ को खोल दें तो. . . पूरे एशिया पर निश्चित रूप से विजय आप की होगी."

"महंत, मैं फिर से कहता हूं, आप मेरा समय नष्ट कर रहे हैं. हट जाइए सामने से; जाने दीजिए. मेरे सैनिक इंतजार कर रहे हैं. मुझे आज ही अपना शिविर यहां से उठा लेना है." सिकंदर फिर से अपने घोड़े पर सवार होने ही वाला था कि महंत ने कहा, "मैं पूरे एशिया माइनर की प्रजा की ओर से निवेदन कर रहा हूं. . . मेरा विश्वास है कि गांठ खोलने में आप को विशेष समय नहीं लगेगा. यदि आप इस कार्य को किए बिना आगे जाएंगे, तो प्रजा को दुःख होगा."

"ओह!" सिकंदर ठिठक गया.

कुछ ही देर बाद सिकंदर उस रहस्यमय गांठ के पास खड़ा दिखाई दिया. महंत उसकी बगल में ही मौजूद था. जैसा कि महंत ने बताया था, गुरु के मंदिर के खंभे से सचमुच एक रस्सा बंधा हुआ था. रस्से के दूसरे छोर से बंधी थी बैलगाड़ी. रस्से की वह गांठ बैलगाड़ी और खंभे के बीचोंबीच लगाई गई थी.

सिकंदर देखता रह गया. सचमुच वह एक विचित्र गांठ थी. वह दो रस्सों को जोड़ने के लिए लगाई गई थी, लेकिन दोनों रस्सों के छोर गांठ के भीतर इतनी खूबी से समा गए थे कि बाहर से उन्हें देखना बिल्कुल असंभव था.

"यह गांठ हमारे राजा गार्डियस ने लगाई थी. यह बैलगाड़ी उन्हीं की है," महंत ने कहा. इस बार भी उसके मुंह से एक विचित्र बात ही निकली थी—बैलगाड़ी और एक राजा की! सिकंदर अचरज से महंत की ओर देखने लगा. महंत मुस्कराया, "हां,

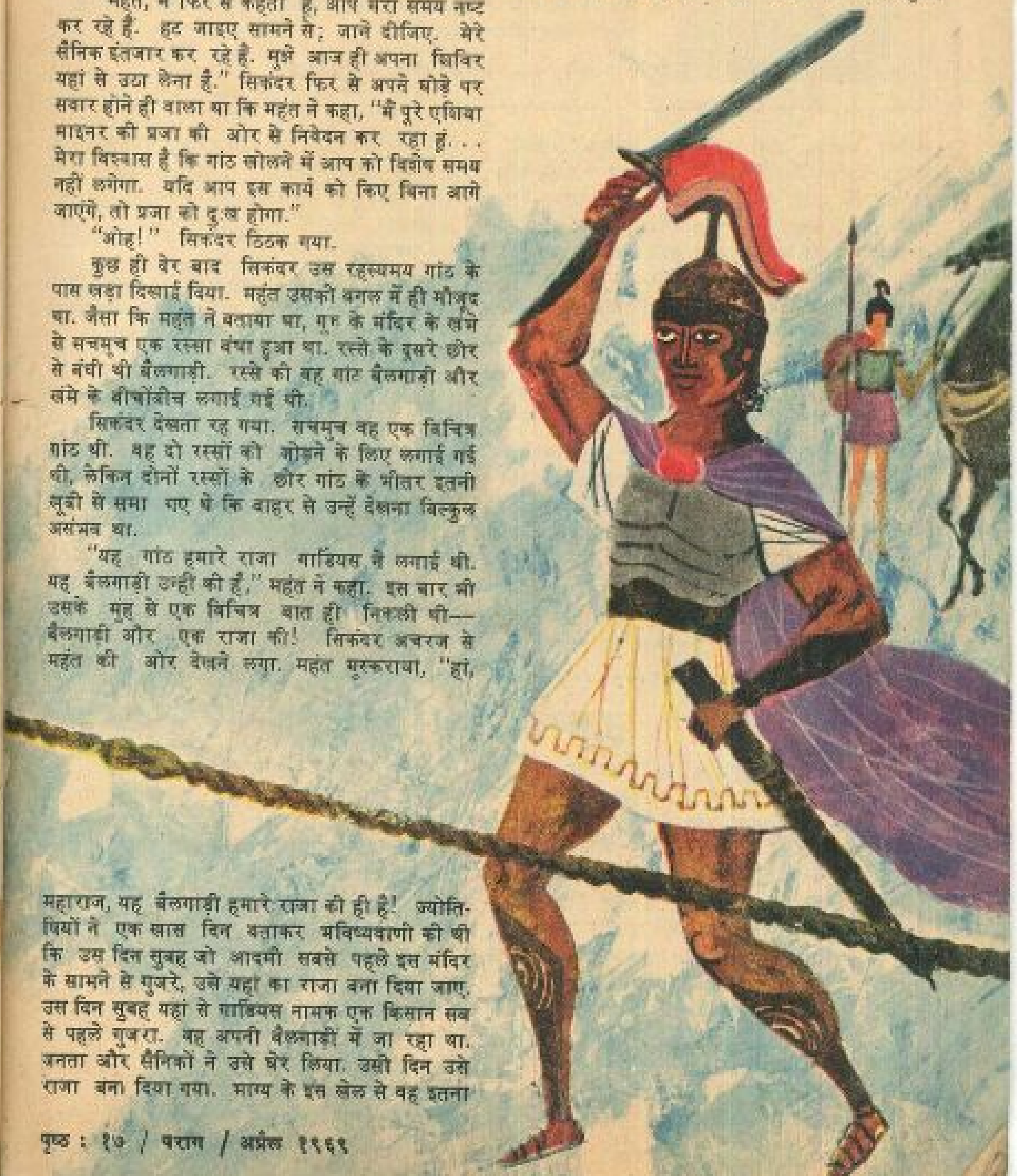

महाराज, यह बैलगाड़ी हमारे राजा की ही है! ज्योतिषियों ने एक खास दिन बताकर भविष्यवाणी की थी कि उस दिन सुबह जो आदमी सबसे पहले इस मंदिर के सामने से गुजरे, उसे यहां का राजा बना दिया जाए. उस दिन सुबह यहां से गार्डियस नामक एक किसान सब से पहले गुजरा. वह अपनी बैलगाड़ी में जा रहा था. जनता और सैनिकों ने उसे घेर लिया. उसी दिन उसे राजा बना दिया गया. भाग्य के इस खेल से वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने भगवान गुरु का आभार प्रकट करने के लिए अपनी बैलगाड़ी इसी मंदिर से बांध दी. तब से बैलगाड़ी यहीं बंधी है. आप ही देखिए, राजा गार्डियस द्वारा लगाई गई यह गांठ कितनी अटपटी है. रस्सों के दोनों छोर इस गांठ के भीतर हैं—इसे आप कैसे खोलेंगे? किधर से खोलेंगे?"

"हूं. . . तो यह बात है!" कहता हुआ सिकंदर गांठ के पास उकडूं बैठ गया. उसने गांठ को छुआ,

इस कहानी के लेखक से मिलिए

'पराग' के दिसंबर १९६८ के अंक में प्रकाशित जिस कहानी 'बुरे लोग' को 'हमारी पसंद प्रतियोगिता' के अंतर्गत हमारे पाठकों ने सर्वश्रेष्ठ ठहराया था, उसके लेखक हैं श्री मनहर चौहान. मातृभाषा गुजराती होते हुए भी आपने अपना सारा साहित्य हिंदी में ही लिखा. अब तक आपके लगभग दर्जन भर उपन्यास तथा कई कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं. स्वतंत्र लेखक और पत्रकार हैं.

पता : के– १०३ कीर्तिनगर, नई दिल्ली-१५.

टटोला, दबाया, दोनों रस्सों को पकड़कर खींचा. समस्या अजीब थी. जब एक भी छोर हाथ में न हो, गांठ आखिर कैसे खोली जाए? उससे भी बड़ी बात—ऐसी गांठ आखिर लगाई किस तरह गई? सिकंदर के होंठों पर उलझन-भरी मुस्कान आने लगी, मगर मुस्कान को गायब होते भी देर न लगी. एक मामूली-सी गांठ सिकंदर जैसे महान योद्धा को चुनौती दे रही थी, उलझा रही थी.

सिकंदर के मंत्री खड़े हैं. सिकंदर के सेनापति खड़े हैं. सिकंदर की दासियां खड़ी हैं. इन सबके सामने क्या सिकंदर एक गांठ से हार मान जाएगा?

महंत बुदबुदाया, "एशिया माइनर की प्रजा का विश्वास है, महाराज, कि जो भी व्यक्ति इस गांठ को खोलने में सफल हो जाएगा, वही पूरे एशिया का विजेता बनेगा. . . खोलिए, महाराज! इस गांठ को खोलिए. दोनों रस्सों को अलग अलग कर दीजिए."

सिकंदर को बड़ी कोफ्त हो रही थी. एक मामूली-सी गांठ को खोलने में इतनी देर? इतनी उलझन? लानत है! और सिकंदर ने अपनी तलवार निकाल ली.

महंत कांप गया. उसे यही लगा कि तलवार का वार उसीपर होने वाला है. अपना समय नष्ट करने के लिए सिकंदर को महंत पर गुस्सा आ गया होगा. . .

तलवार उठी.

तलवार गिरी.

लेकिन वह थरथर कांपते महंत पर नहीं गिरी. वह तो गिरी उस गांठ पर. गांठ खच्च से कटकर दो टुकड़े हो गई. एक रस्सा इधर गिरा, एक उधर.

सन्नाटा छा गया.

"आपने यह क्या किया, महाराज!" महंत थर्राई आवाज में बोला, "भगवान गुरु आपसे नाराज हो जाएंगे. . .आपने तो गांठ को खोलने के बजाए उसे. . . उसे. . ."

सिकंदर तलवार को म्यान में रखता हुआ बोला, "योद्धाओं का यही तरीका है!" —और वह अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ दूर चला गया.

और जब उसकी सेनाओं ने एशिया में प्रवेश किया, तो एक-एक कर सब राज्य उसके सामने घुटने टेकते गए! ●

बोधकथा

सहयोग का महत्त्व

एक दिन कुम्हार को अपने आपपर बड़ा गर्व हो आया. वह सोचने लगा—'यह घड़ा मेरा बनाया हुआ है. यह मेरी मेहनत का फल है.'

मिट्टी कुम्हार के इस गर्व को सहन न कर सकी. उसने कुम्हार से कहा, "अगर मैं न होती, तो तुम घड़ा कैसे बनाते?" कुम्हार चुप रहा. परंतु मिट्टी की यह बात पानी को न सुहाई. उसने मिट्टी से कहा, "मिट्टी बहन, अगर मैं न होता, तो तुम और कुम्हार क्या कर लेते?"

चाक यह सब सुन रहा था. उसने तीनों से कहा, "अगर आप तीनों होते, परंतु मैं न होता, तो यह घड़ा बनता कैसे?"

आग को इन सबकी मूर्खता पर हंसी आ गई. उसने कहा, "यह क्यों भूल जाते हो कि आप सब होते और मैं न होती, तो यह घड़ा पकता कैसे? मेरी गरमी के कारण ही तो यह पकता है. अगर मैं न रहूं, तो कच्चा घड़ा तुरंत ही टूट-फूट जाएगा. घड़ा तो हम सबके सहयोग का फल है."

उस दिन से किसी ने अपने आपपर गर्व नहीं किया. सबने एक दूसरे की आवश्यकता का अनुभव किया और आपसी सहयोग का महत्त्व समझा.

—हीरालाल ठाकुर

जब शीला दस वर्ष की
पैदा हुई. वह बहुत
रखा गया.

शीला का पिता
दृष्टि से देखता था, ले
प्यार करती थी. कारण
कहती—"मेरी नीलू
कितनी बदसूरत है!"
बुरा लगता था, लेकिन

एक दिन शीला के
शीला की मां को पड़ो
का मौसम था, दोपहर
तरफ छोटी-सी खटि
और दूसरी तरफ शील

शीला की मां ने
थोड़ा काम है. अभी
नीलू जग जाए और रो

शीला पत्रिका प
लेकर अपनी फ्रॉक की

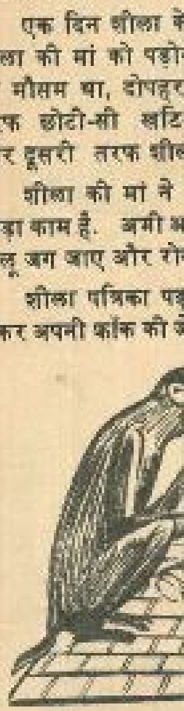

पढ़ने लगी. उसकी

शीला एक मजे
आस-पास बहुत से बं
उठाकर ले जाया कर
बहुत ही शैतान था,
अक्सर घरों में आकर

वही बंदर आया
वह खटिया पर सोई
गया. यह सब इ
देखती ही रह गई.

बंदर ने नीला क
उसकी तरफ एकटक
कलेजा धक्-धक् क
जोर से चिल्ला कर
ऊंगी, तो यह बंदर
फिर पता नहीं इसको

एक भावभरी कहानी

टेढ़ा शंकर

—हसनजमाल छीपा

अब तो विद्यार्थियों के अभिभावकों का भी अंतिम 'अल्टीमेटम' गुरु जी को मिल गया कि या तो शंकर को पाठशाला से निकाला जाए अन्यथा हम अपने बच्चों पढ़ने नहीं भेजेंगे. गुरु जी क्षण भर के लिए विचलित हुए, लेकिन थोड़ी देर बाद पुनः अपने निश्चय पर डट गए. उन्होंने विद्यार्थियों के अभिभावकों को लिख-कर भेज दिया कि कुछ भी हो, शंकर उनकी पाठशाला में रहेगा; वे चाहें, तो अपने बच्चों को कहीं दूसरी जगह भरती करवा सकते हैं.

अभिभावकों को आशा न थी कि गुरु दीन-दयाल जी का ऐसा जवाब मिलेगा. उन्होंने सोच रखा था कि इस अल्टीमेटम से गुरु जी की अकल ठिकाने आ जाएगी और वह एक लड़के की खातिर पाठशाला को ठप्प करना नहीं चाहेंगे. लेकिन गुरु जी अपने निश्चय पर अटल थे. इससे पहले लड़कों ने भी कई बार कहा था कि शंकर का नाम काट दिया जाए, लेकिन इस विषय में गुरु जी हमेशा चुप ही रहे.

गुरु दीनदयाल जी की पाठशाला अपने हलके में बड़ी प्रसिद्ध थी. वह अकेले ही अपनी पाठशाला चलाया करते थे. एक चपरासी था और बस! पांचवीं कक्षा तक उनकी पढ़ाई होती थी. उनकी पाठशाला से निकला हर छात्र 'बाणभट्ट' होता था. स्कूल में जाने के पश्चात् उसे किसी तरह की कठिनाई अनुभव नहीं होती थी. यह गुरु जी के लिए गर्व की बात थी. वह जब नए नए ही आए थे, वकील मेहता साहब के बच्चों का ट्यूशन करते थे. मेहता साहब के बच्चे पढ़ाई में बड़े कमजोर थे, लेकिन दीनदयाल जी के ट्यूशन ने उन्हें होशियार छात्र बना दिया. धीरे धीरे गुरु जी की धाक जमनी शुरू हुई और बाद में उन्होंने एक बड़ा-सा हालनुमा कमरा किराए पर लेकर प्राइवेट स्कूल खोल लिया, जो बाद में 'गुरु जी की पाठशाला' के नाम से प्रसिद्ध हो गया.

गुरु जी की पाठशाला म छात्रों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी. लेकिन एक दिन एक बुढ़िया नौ साल के एक बच्चे के साथ गुरु जी के पास आई और बोली, "यह मेरा पोता शंकर है. इसके मां-बाप मर चुके हैं और अब इसका भार मेरे बूढ़े कंधों पर आन पड़ा है. बड़ा शैतान है यह. अब आप ही इसे सीधा कीजिए."

दादी मां तो अपने पोते शंकर को वहां छोड़कर निश्चिंत हो चली गई, लेकिन गुरु जी के लिए एक मुसीबत छोड़ गई. गुरु जी ने इसे एक चुनौती समझकर मुसीबत को गले लगा लिया.

शंकर शैतान ही न था, चोर-उचक्का भी था और मुंहफट भी. बात बात में गालियां उसके मुंह से यू निकलती थीं जैसे पटाखों की लड़ी छूट रही हो. पढ़ाई-लिखाई में बिल्कुल कोरा था. कई साल आवारा लड़कों के बीच रहकर वह पूरा लफंगा बन चुका था.

गुरु जी ने धैर्य के साथ उसकी आदतें सुधारने का बीड़ा उठाया, लेकिन आदतें तो सुधरते सुधरते सुधरती हैं. कुछ समय बाद ही गुरु जी पर शिकायतों के बाणों की बौछार होने लगी :

"गुरु जी, शंकर ने मेरे
है. जरूर इसने बाजार में
पैसों की चाट खाते देखा है

इतने में संपत बो
पेंसिल नहीं मिल रही है.
के पास देखी है."

"हां, गुरु जी!", राजू
करता.

"शंकर ने मेरी स्ले
बिसूरती हुई गुरु जी के पा

कभी मदन खाली टि
हुए कहता—"यह देखिए
व अचार खा गया है."

गुरु जी शंकर को बु
आकर कहता—"गुरु जी,
मुझे अंटी मारकर गि
छिल गया."

मतलब, शंकर क्या

"गुरु जी, शंकर ने मेरी हिंदी की किताब चुरा ली है. जरूर इसने बाजार में बेच दी है. मैंने इसे बहुतसे पैसों की चाट खाते देखा है!" मोहन कहता.

इतने में संपत बोलता, "गुरु जी, मेरी लाल पेंसिल नहीं मिल रही है. राजू कहता है कि उसने शंकर के पास देखी है."

"हां, गुरु जी!", राजू तुरंत संपत की बात का समर्थन करता.

"शंकर ने मेरी स्लेट फोड़ दी!" कुसुम रोती-बिसूरती हुई गुरु जी के पास आती.

कभी मदन खाली टिफनदान गुरु जी को दिखाते हुए कहता—"यह देखिए, गुरु जी, शंकर मेरी पूड़ियां व अचार खा गया है."

गुरु जी शंकर को बुलाकर समझाने बैठते कि कोई आकर कहता—"गुरु जी, शंकर बहुत बुरा है. कल इसने मुझे अंटी मारकर गिरा दिया. देखिए, मेरा घुटना छिल गया."

मतलब, शंकर क्या आया, गुरु जी के लिए मुसीबत खड़ी हो गई. गुरु जी रोज शंकर को समझाते कि अच्छे बच्चे ऐसा नहीं करते. लेकिन शंकर 'हां-हूं' करके गरदन हिला देता, लेकिन अगले दिन फिर शिकायत तैयार! उसकी शैतानियां कम न हुईं.

एक दिन बच्चों ने एक आवाज होकर गुरु जी से शिकायत की—"हम इस चोर-उचक्के के साथ नहीं पढ़ेंगे. हम इसे पाठशाला में नहीं रहने देंगे."

"मैं इसे नहीं निकाल सकता, बच्चो!" गुरु जी ने बड़े उदास स्वरों में कहा था.

फिर तो बच्चों के मां-बाप की शिकायतें भी आने लगी थीं. गुरु जी सबको मीठा उत्तर देकर रवाना करते थे. फिर एक दिन बच्चों के अभिभावकों ने मिल कर अंतिम 'अल्टीमेटम' भी दे दिया, लेकिन गुरु जी

kissekahani.com

अपनी बात पर अड़े रहे.

इसपर धीरे धीरे बच्चों की संख्या कम होने लगी. लोग सोचने लगे, दीनदयाल जी का दिमाग चल गया है, वरना एक बच्चे के लिए इतना बड़ा संकट क्यों मोल लेते? थोड़े दिनों में गिने-चुने बच्चे गुरु जी की पाठशाला में रह गए. गुरु जी उन्हें पूरे उत्साह से पढ़ाते रहे, लेकिन अंदर ही अंदर उनके मन को कोई कुरेद रहा था—क्या तुम यह जो कर रहे हो, बुद्धिमानी है?

धीरे धीरे शंकर की दादी को भी खबर लगी कि उसके पोते की वजह से गुरु जी की पाठशाला खाली हो गई है, तो उससे रहा न गया, फौरन पहुंची गुरु जी के पास. गुरु जी ने उसे आते देख लिया था, इसलिए दूर से ही बोल पड़े—"गुरुजी को तुम भी सबक सिखाने आई हो, अम्मा!"

"अरे गुरु जी, मैं निपट गंवार! न लिखना जानूं न पढ़ना—मैं क्या सबक सिखाऊंगी! तुम तो बड़े आदमी हो, पर यह तो बताओ, मेरे शंकर की खातिर दूसरों को क्यों नाराज किए हो?" शंकर की दादी ने फर्श पर लाठी रखकर बैठते हुए कहा.

"अब यह न ही पूछो तो अच्छा है!" गुरु जी ने खाली कमरे पर एक नजर डालते हुए कहा—"शंकर को पढ़ाना-लिखाना और एक अच्छा नागरिक बनाना मेरा फर्ज है, जो मैं पूरा किए जा रहा हूं."

"पर, यह कैसा फर्ज है, गुरु जी! अपनी रोजी पर लात मारे हो! मैं आज अपने शंकर को लेने आई हूं!"

"ऐसा नहीं होगा, अम्मा, शंकर यहीं रहेगा..."

"पर क्यों?" बुढ़िया हैरान हुई जा रही थी.

इसपर गुरु जी ने कहा—"तुम समझती क्यों नहीं? शंकर का चरित्र अभी कच्चा है. उसको संस्कार बुरे पड़ गए हैं. उसमें बुरी आदतों ने जड़ पकड़ ली है. उसको मेरी सख्त जरूरत है. दूसरे लड़के तो कहीं भी पढ़ लेंगे इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा, लेकिन शंकर जब दूसरी जगह जाएगा, तो क्या मेरी नाक नहीं कट जाएगी."

"इसमें भला नाक कटने का क्या सवाल?"

"यही तो खास बात है, शंकर की दादी! शंकर जब दूसरे स्कूल में बदमाशियां करेगा और चोरियां करेगा, तो लोग यही कहेंगे न कि दीनदयाल की पाठशाला में पढ़ा है, सो चोरियां ही सीखी हैं; वहां क्या यही पढ़ाई होती है दीनदयाल के यहां? इसलिए मैं शंकर को यहीं रखूंगा. कभी न कभी तो वह लाइन पर आएगा ही."

"यह तो तुम सोच रहे हो, इतनी बात वह शैतान सोचे तब न!" शंकर की दादी ने कहा. अब उसकी नजरें शंकर को ढूंढ रही थीं. शंकर पेशाब करने के बहाने पहले ही बाहर चला गया था और इस समय वह दरवाजे की ओट में खड़ा गुरु जी व दादी मां की बातें सुन रहा था और उसकी आंखें भीगी हुई थीं. आज उसे मालूम हुआ कि गुरु जी उसके लिए कितना बड़ा त्याग कर रहे हैं और एक वह है... धिक्कार है, शंकर! शंकर की सोई हुई आत्मा ने उसे लताड़ना शुरू किया. उसने फौरन निश्चय किया कि अब वह एक अच्छा लड़का बनकर दिखाएगा. मन में आया कि अभी गुरु जी के चरणों में गिरकर फूट-फूटकर रो पड़े; लेकिन नहीं, यह तो कोई बात न हुई. कुछ क्षण सोचकर वह दरवाजे से हटा और बाहर चला गया.

अगले दिन गुरु जी नियत समय पर पाठशाला पहुंचे, तो बहुतसे बच्चे पहले से वहां बैठे थे. और भी भी लड़के एक एक करके आ रहे थे. यह देख गुरु जी सुखद आश्चर्य में डूब गए. उन्हें प्रसन्नता भी हो रही थी और आश्चर्य भी. देखते ही देखते पाठशाला पहले दिनों की भांति फिर विद्यार्थियों से भर गई.

गुरु जी कुछ पूछते, इससे पहले ही पाठशाला का सबसे सीनियर लड़का मदन उठकर कहने लगा—"गुरु जी, आप हैरान न होइए. शंकर ने पश्चाताप कर लिया है. इसने एक एक के घर जाकर रो-रोकर क्षमा मांगी और सौगंध दिलाकर पाठशाला में आने के लिए कहा. गुरु जी, आप ही कई बार कहते हैं कि सुबह का भूला शाम को घर आ जाए, तो उसे भूला नहीं कहते. इसलिए हमने शंकर को माफ कर दिया है. आप भी हम सब को माफ कर दीजिए."

गुरु जी की नजर मदन के चेहरे से हटी, तो देखा शंकर उनके सामने झुका उनके चरण छू रहा है. ●

द्वारा मुंसिफ कोर्ट, बिलाड़ा (राजस्थान).

हमारी पसंद प्रतियोगिता नं. २३ का परिणाम

'हमारी पसंद प्रतियोगिता नं. २३' के अंतर्गत 'पराग' के जनवरी अंक में प्रकाशित कहानियों के बारे में हमने जानना चाहा था कि अपनी पसंद के विचार से कौन-कौन सी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे. इस बार केवल एक बच्चे की पहेली सर्वशुद्ध आई है. बच्चे का नाम और पता नीचे दिया जा रहा है, उसे शीघ्र ही पुरस्कार भेजा जाएगा :

● **प्रदीपकुमार छावछरिया, द्वारा सावलराम छावछरिया, २२०१२ शिवगोपाल बनर्जी लेन, घसुड़ी, हावड़ा (पश्चिम बंगाल).**

जनवरी अंक की कहानियों का सर्वाधिक लोकप्रिय क्रम इस प्रकार है :

१–दो सहेलियां, २– बाले मियां, ३– अमरीका की खोज, ४– हवा कहे, सूरज करे, ५– पश्चात्ताप, ६–मूक विदाई, ७– किस्सा तोता-मैना.

चूंकि 'दो सहेलियां' शीर्षक कहानी सर्वश्रेष्ठ चुनी गई, अतः इसके लेखक डॉ. देवेश ठाकुर को ५० रु. का अतिरिक्त पुरस्कार प्रदान किया जाएगा.

नाक

अपनी समस्याओं के क
होते जा रहे थे.
जो पहले कुल जमा मे
अढ़ाई मीटर लंबी हो ग
कमीज पर शिकन न आ
उसकी तरफ ऐसे देखें,
उसने कोई बड़ा हास्
फिर कहें—"आप नहीं
समस्याएं जिनके साम
नाक पर न बैठिए."

जैसा कि होता अ
राता ही है. एक दिन
हिंदी एम. ए. फाइनल
में उनके यहां आया. अ
आए—"हटाइए, नाक

वह हंसा—बोला
नाक के बारे में हमें कु
हमें यकीन हो जाएगा
अपने मुंह पर चिपका

"पूछो! जरूर पूछो
से बोले.

सुरेश ने कहा—
सही सही मुहावरा आप

अतापता क्या, १५

१– किरकिरी
२– किसी की
३– हर बात मे
४– अचानक
५– बिना इधर
६– किसी बड़े
७– किसी वस्
८– किसी अफ
९– चारों ओ
१०– ठूंस ठूंस
११– दुर्गंध का

भोलू भाई की भूल भुलैया-१६

नाक की मुसीबत

अपनी समस्याओं के कारण भोलूभाई दूर दूर तक मशहूर होते आ रहे थे. यही कारण था कि उनकी नाक जो पहले कुल जमा में अढ़ाई सेंटीमीटर की थी, अब अढ़ाई मीटर लंबी हो गई थी. अकड़फू का यह हाल कि कमीज पर शिकन न आने दें. अगर कोई नाम पूछे, तो उसकी तरफ ऐसे देखें, मानो उनका नाम याद न रखकर उसने कोई बड़ा हास्यजनक अपराध कर डाला हो! फिर कहें—"आप नहीं जानते? हम हैं श्री भोलूभाई, समस्याएं जिनके सामने टिकतीं नहीं. हटाइए, हमारी नाक पर न बैठिए."

जैसा कि होता आया है —सेर को सवा सेर टकराता ही है. एक दिन उनके मामा का लड़का सुरेश, जो हिंदी एम. ए. फाइनल का विद्यार्थी था, होली की छुट्टियों में उनके यहां आया. आप उससे भी इसी मुहावरे में पेश आए—"हटाइए, नाक पर न चिपकिए!"

वह हंसा—बोला, "मिस्टर भोलेनाथ, अगर आप नाक के बारे में हमें कुछ मुहावरे सही सही बता दें, तो हमें यकीन हो जाएगा कि आपने इतनी बड़ी नाक खुद अपने मुंह पर चिपका नहीं रखी है."

"पूछो! जरूर पूछो," भोलूभाई प्रसन्न होकर घड़ाक से बोले.

सुरेश ने कहा—"लो, अतापता हम बताते हैं. सही सही मुहावरा आप बताइए—"

अतापता क्या, १५ अतेपते थे. सो ये हैं :

१– किरकिरी हो जाना.
२– किसी की बात तक न सुनना.
३– हर बात में टांग अड़ाना.
४– अचानक किसी चीज को नापसंद कर देना.
५– बिना इधर-उधर देखे आगे बढ़ते चले जाना.
६– किसी बड़े आदमी का अंतरंग होना.
७– किसी वस्तु के प्रति विरक्ति प्रकट करना.
८– किसी अफसर के सामने गिड़गिड़ाना.
९– चारों ओर आदर-सम्मान होना.
१०– ठूंस ठूंस कर खाना.
११– दुर्गंध का सहन न होना.
१२– बहुत दुर्बल हो जाना.
१३– तकाजा होते ही रुपया अदा कर देना.
१४– किसी को बहुत हैरान करना.
१५– महामूर्ख!

(क्या आप भोलूभाई की समस्या हल कर सकते हैं? यदि हां, तो बताइए भोलूभाई ने सही-सही मुहावरे किस प्रकार बनाए. अपने उत्तर १५ अप्रैल तक पोस्ट कार्ड पर नीचे दिया हुआ टोकन चिपकाकर भेजिए. बिना टोकन चिपके हुए पोस्ट कार्डों पर विचार नहीं किया जाएगा. जिनके उत्तर सही होंगे, उनमें से कार्यालय में आए पहले पच्चीस नाम 'पराग' के जून १९६९ के अंक में छापे जाएंगे.

उत्तर इस पते पर भेजिए : भोलूभाई की भूलभुलैया नं. १६, 'पराग' पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया, बम्बई–१)

भोलूभाई की भूलभुलैया नं. १४
सही उत्तर और परिणाम

नहीं—वे दोनों आदमी पागल नहीं थे. प्यारेलाल एक लिफ्टमैन था और एक कंपनी में दिन भर लिफ्ट को ऊपर से नीचे व नीचे से ऊपर लाता-ले जाता था. शंकर हाथ-रिक्शा चलाने वाला था.

सही हल भेजने वाले बच्चों के नाम इस प्रकार हैं :

प्रदीपकुमार टिबड़ेवाल, संबलपुर; रविंद्रलाल बत्ता, नाभा; राजीवकुमार माहेश्वरी, कलकत्ता; संतोषकुमार तोदी, कलकत्ता; कुमारी सीमा वर्मा, इलाहाबाद.

वह फुटपाथ के किनारे बैठते थे. पास में एक पिंजड़ा होता, उसके अंदर एक चिड़िया. पिंजड़े के बाहर छोटी-सी ट्रे में करीब दो सौ लिफाफे होते. प्रत्येक के भीतर एक चिट पर भविष्यवाणी अंकित रहती. सुबह से शाम तक वह निश्चित जगह पर अपनी इस पूंजी के साथ वहां बैठते थे. पिछले एक वर्ष से एक अस्थाई बोर्ड भी उन्होंने बनवा लिया था, जिस पर मोटे अक्षरों में अंकित था—'राज ज्योतिषी. प्रत्येक प्रश्न का दस पैसा.'

ज्योतिषी जी ठिंगने कद के थे. सांवले मुख पर चेचक के दाग थे. पिछले कुछ दिनों से लाल वस्त्र पहनने लगे थे मानो शरीर के रक्त की कमी को पूरा कर रहे हों. शायद तांत्रिक बन गए थे. कुछ समय से टीन की एक पेटी भी उनके पास रखी रहने लगी थी. उस-पर लिखा था—'अष्टधातु की सिद्ध की हुई सर्व कष्ट-रोग-नाशक, सुख वा समृद्धिदायक, प्रेम में शत प्रतिशत सफलता देने वाली अंगूठी सवा रुपये में.' इधर कुछ दिन पूर्व उन्होंने इसी पेटी पर खाली स्थान में लिखवा दिया था—'अष्टग्रही के घातक प्रभाव को दूर करने में अचूक!'

अष्टग्रही के अनुकूल प्रभाव से ज्योतिषी जी का मंदा व्यापार तेज हो चला था. कोई आता, प्रश्न पूछता, ज्योतिषी जी दस पैसे एडवांस लेते, फिर उससे कहते—"पिंजड़े का दरवाजा खोल

एक फुर्र कहानी

भविष्यवक्ता

दो . . ." द्वार खुलते
लिफाफों की ट्रे पर बै
लिफाफा पकड़कर क
कर पिंजड़े में चली जा
का पुर्जा बाहर निक
भीतर आने-जाने के
था. उसपर धुंधली-
'अच्छे दिन आ रहे
से खतरा है, दान-धर्म
कामना पूर्ण होगी,
राहु की शांति करो'
चमकती लाल रोशन
यह और लिखा रहता

जब ग्राहक इस
की बात पढ़ता, तो
भोंडी आवाज में कह
न करें. आपके लि
अष्टधातु की यह
सवा रुपया देकर ले
ठीक हो जाएगा."

पर 'सवा' रु

दो . . ." द्वार खुलते ही चिड़िया बाहर आती, लिफाफों की ट्रे पर बैठ जाती, फिर चोंच से एक लिफाफा पकड़कर बाहर डाल देती और फुदक कर पिंजड़े में चली जाती. ज्योतिषी जी लिफाफे का पुर्जा बाहर निकालते, जो बार बार बाहर-भीतर आने-जाने के कारण काफी गंदा हो चुका था. उसपर धुंधली-सी स्याही में लिखा होता: 'अच्छे दिन आ रहे हैं, भाग्य खुलेगा, पर शनि से खतरा है, दान-धर्म करो' या 'तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी, पर दान-धर्म करना होगा. राहु की शांति करो' आदि. आजकल तो नई चमकती लाल रोशनाई से अधिकांश चिटों पर यह और लिखा रहता—'अष्टग्रही से भय है!'

जब ग्राहक इस अंतिम लाल स्याही के खतरे की बात पढ़ता, तो ज्योतिषी जी अपने कंठ से भोंडी आवाज में कहते—"जो है शो आप भय न करें. आपके लिए ही अब ग्रह शिद्ध करके अष्टधातु की यह अष्टग्रही अंगूठी बनाई है. शवा रुपया देकर ले जाओ. पहने रहना. शब ठीक हो जाएगा."

पर 'शवा' रुपया देने की हैसियत भी सबकी न होती. ज्योतिषी जी उदारता की मूर्ति बन जाते. हंसते हुए पान-तमाखू मिश्रित पीक को छिड़कते हुए कहते—"कोई बात नहीं, इतना नहीं, तो जो श्रद्धा हो दे दो. मैं तो आप शब का शेवक हूं. आप शब का दुख-दर्द दूर करने के लिए ही तो यह अंगूठी शिद्ध की है."

और फिर एक अठन्नी में सौदा तय हो जाता. इससे कम वह स्वीकार न करते. यदि कोई आग्रह करता, तो कहते—"मैं तो फोकट में भी दे दूंगा शब. पर बात यह है कि इशको शिद्ध करने में आठ आने तो लागत ही आ जाती है. अब यदि कोई लागत खर्च शे कम देकर इशे लेगा, तो यह फल नहीं देगी. आप चाहो तो ले जाओ, पर यदि फल न दे, तो शिकायत मत करना."

अब बताओ, कौन ऐसा होगा जो इसपर भी कम कीमत देगा. यों ज्योतिषी जी विशेष कार्यों के लिए मंत्र-सिद्ध यंत्र भी देते थे, पर अष्टग्रही के सामने सब फीका था. इन दिनों उनके पास दिन में पचास-साठ तक 'ग्राहक' आ जाते थे. बेचारी चिड़िया को जरा भी चैन नहीं मिलता था. उधर ज्योतिषी जी को तो यह भय होने लगा था कि कहीं अंगूठियों का स्टाक ही खतम न हो जाए, अगर ग्राहक बढ़ते रहे.

संयोग की बात, तीन फरवरी को अष्टग्रह का योग सचमुच ही आ गया, खास तौर से ज्योतिषी जी पर ही! बात यह हुई कि ज्योतिषी जी परोपकार की धुन में निज उपकार को भूल गए थे और अष्टग्रही की शांति की अंगूठी उन्होंने खुद नहीं पहनी थी. सो जब वह ग्राहकों की भीड़ देखकर खुश हो रहे थे और चिड़िया लिफाफा खोज रही थी, तो उनका ध्यान जरा दूसरी ओर चला गया. इतने में न जाने कहां से एक बिल्ली आकर चिड़िया पर झपटी और उसे अपने मुंह में दबाकर यह जा, वह जा! सब चौपट हो गया! ज्योतिषी जी के दिल की धड़कन बंद होते होते रह गई! वह फूट फूट कर रो पड़े. चिड़िया के जाते ही ग्राहक भी चले गए और ज्योतिषी जी खाली पिंजड़े को आंसू भरे नयनों से देखते, ठगे-से बैठे रह गए! ●

—गिरधर दासवानी—
२३/७८० चांद बावरी, अजमेर.

kissekahani.com

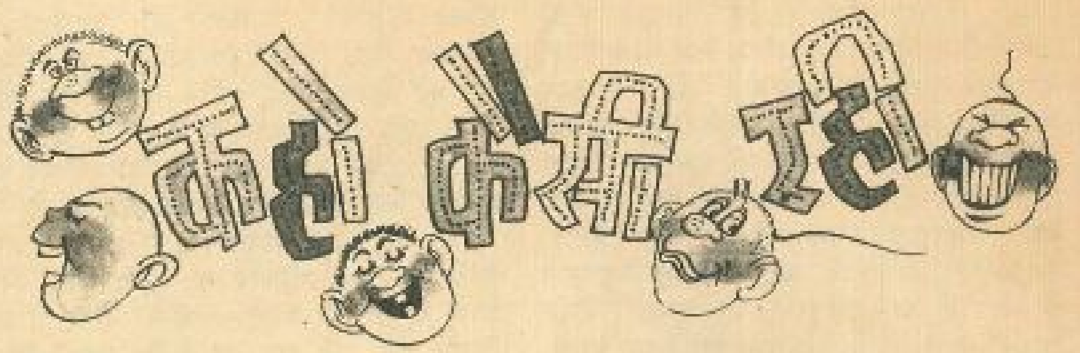

एक म्युनिसिपल बोर्ड का सदस्य : "जनता को छिलके सहित केले खाने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए."

दूसरा : "क्यों? क्या छिलके से शरीर ज्यादा हृष्टपुष्ट बनता है?"

"नहीं, ऐसा करने से फिसल कर गिर पड़ने की दुर्घटनाएं नहीं होंगी!"

•

मकान मालिक : "देखिए, मैं किसी ऐसे आदमी को मकान किराए पर नहीं दे सकता, जो शोर मचानेवाला हो. आपके बाल-बच्चे तो नहीं हैं?"

"जी नहीं."

"क्या रेडियो, ग्रामोफोन या पियानो है?"

"नहीं."

"तोता, बिल्ली, कुत्ता?"

"जी नहीं, लेकिन मेरे फाउंटेन पेन का निब थोड़ा किर्र्-किर्र् की आवाज करता है!"

•

दादी जी बैठी हुई भगवान का नाम जप रही थीं. मुन्ना भागता हुआ उनके पास आकर बोला, "दादी जी, भगवान तो गुसलखाने में हैं!"

"ऐसा कैसे कहते हो, बेटा?"

मुन्ना : "अभी मम्मी बाथरूम के दरवाजे पर खड़ी हुई कह रही थीं— हे भगवान! अभी और कितनी देर तुम अंदर रहोगे?"

•

मुन्ना अपने दोस्तों से कह रहा था, "मुझे सुबह उठाते वक्त मेरी मां कहती हैं— उठो, काफी दिन चढ़ आया. और जब मैं मुंह-हाथ धोकर नाश्ता करके मां के पास पैसे मांगने जाता हूं, तब वह कहती हैं—मुन्ने, कुछ तो खयाल कर, अभी दिन नहीं चढ़ा और तुम पैसा मांगने आ गए!"

•

मंत्री जी सूखाग्रस्त क्षेत्र के दौरे पर निकले. गांव से कुछ दूरी पर उन्होंने कई नए कुएं पानी से भरे देखे. उनको बड़ी हैरानी हुई, बोले, "बरसात नहीं हुई तो क्या, कुओं में तो पानी है. फिर लोग पानी बिना ऐसा कष्ट क्यों उठा रहे हैं?"

बीच में ही सरपंच सहमता हुआ बोला, "हुजूर, उद्घाटन के पूर्व इन कुओं का पानी कोई कैसे छू सकता है. इनका उद्घाटन तो दस दिन बाद आपके हाथों से ही होने वाला है!"

•

दो बकरियां चरते-चरते एक सिनेमा घर के पीछे जा पहुंचीं. वहां उन्हें एक फिल्म की रील पड़ी मिली. एक बकरी उसे चबाने लगी. इस पर दूसरी ने पूछा, "कैसी लगी?"

पहली ने कहा, "किताब इससे ज्यादा मजेदार थी!"

•

दादागीरी का एक नमूना : एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा, "अव्वल तो मैंने तुमसे छाता मांगा नहीं, अगर मांगा, तो तुमने दिया नहीं. अगर तुमने दिया था, तो मैंने लिया नहीं. और अगर मैंने लिया भी था, तो लौटा चुका हूं. पर अगर मैंने नहीं लौटाया है, तो अब लौटाऊंगा भी नहीं, क्योंकि बरसात शुरू होने वाली है!"

•

सेठ जी की रोग-परीक्षा करने के बाद डाक्टर बोला, "आपका केस बड़ा अजीब है. मेडिकल साइंस में आज तक इस तरह का केस देखने में नहीं आया."

सेठ जी डाक्टर की मंशा से घबराकर बोले, "मगर, डाक्टर, मैं अधिक से अधिक इलाज पर पचास रुपये

खर्च कर सकता हूं!"

●

पड़ोसी (चित्रकार से) : "प्रदर्शनी में हम केवल आप ही के बनाए चित्र देखते रहे!"

चित्रकार :" यदि आप दूसरों की कलाकृतियां भी देखते, तो मेरी कला के गुण और भी स्पष्ट हो जाते."

पड़ोसी : "भई, दूसरों के चित्रों के सामने भीड़ बहुत लगी थी!"

●

एक वयोवृद्ध ने नई मोटर खरीदी. उसके बेटे को कार पर लंबे सफर का शौक हुआ. चलते समय उसने पिता से कहा, "आशीर्वाद दीजिए कि मैं सकुशल लौट आऊं और रास्ते में कोई दुर्घटना न हो!"

वयोवृद्ध बोला, "मैं आशीष देता हूं. पर याद रखना कि मेरी बूढ़ी आशीष तीस मील प्रति घंटा से अधिक गति का साथ न दे सकेगी!"

●

राम (अपने मित्र से) : "अब तो तुम्हारे कष्ट के दिन निकल गए. एक लड़का डाक्टर बन गया है और दूसरा वकील."

मित्र : "बीते नहीं, शुरू हुए हैं! कल एक तांगेवाला मुझसे आ टकराया. जरा-सी चोट लग गई. अब मेरा डाक्टर बेटा जोर दे रहा है कि जख्मी टांग को फौरन कटवा दो नहीं तो 'टिटेनेस' हो जाने का डर है. परंतु वकील बेटा कहता है कि जख्म को थोड़ा और खराब हो लेने दो, ताकि वह तांगेवाले पर हर्जाने के लिए मुकदमा चला सके!"

●

ग्राहक (धोबी से) : "अरे, तू तो पूरा साहब बन गया! पैंट पहनना शुरू कर दिया!"

धोबी : "क्या किया जाए, साहब, आजकल धुलाई के लिए धोतियां आती ही कहां हैं!"

●

एक टूरिस्ट जंगल में घूमते-घूमते रास्ता भूल गया. रास्ते में उसने कार रोकी और एक व्यक्ति से पूछा "आगरा जाने का रास्ता कौन-सा है?"

जिससे उसने रास्ता पूछा वह एक सीधा-सादा किसान था. बोला, "मैं नहीं जानता, साहब!"

"और मथुरा जाने का रास्ता?"

"वह भी मैं नहीं जानता."

टूरिस्ट खीझकर बोला, "तो तुम जानते क्या हो?"

किसान उसी सीधे-सादे भाव से बोला, "यही कि मैं रास्ता नहीं भूला हूं!"

●

एक फौजी को वीरता का एक पदक मिला. लौटकर जब वह अपने गांव आया, तो एक दिन चौपाल में बैठकर बताने लगा कि पदक उसे मिला कैसे :

"कप्तान को एक आदमी की जरूरत थी. उसने पूरे दस्ते को एक लाइन में खड़ा करके बताया कि एक खतरनाक काम पूरा करने के लिए एक जवान की जरूरत है. मौत की पूरी संभावना है. पर अगर वह सही-सलामत लौट आया, तो उसे वीरता का एक बड़ा पदक मिलेगा. फिर उसने कहा कि जो जवान उस काम को करने की हिम्मत रखता हो, एक कदम आगे आ जाए."

"और तुम एक कदम आगे बढ़ गए?" एक देहाती ने सवाल किया.

"नहीं, भाई," फौजी बोला, "पूरी बात सुनो तो सही. पूरी की पूरी कतार एक कदम पीछे हट गई और मैं अकेला खड़ा रह गया!"

●

नवागंतुक : "इस कार्यालय का जिम्मेदार आदमी कौन है?"

चपरासी : "अगर जिम्मेदार से आपका मतलब यह है कि जिस आदमी को हमेशा भूल का जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो वह मैं हूं!"

●

ग्राहक : "बैरा, एक गिलास नींबू का शरबत ले आओ."

बैरा : "जी, असली या नकली?"

ग्राहक : "असली और नकली में क्या फरक है?"

बैरा : "असली में नींबू के एसेंस की दो बूंदें पड़ती हैं और नकली में एक बूंद!"

●

इंग्लैंड का बादशाह चार्ल्स दूसरा बड़ा मजाकिया था. एक दिन एक संगीतकार उसके दरबार में आया. उसके संगीत की श्रेष्ठता देखकर सब कल्पना करने लगे कि निश्चय ही उसे एक बड़ा इनाम मिलेगा. पर चार्ल्स ने पुरस्कार देने के बजाए एक कागज पर लिखा—यह संगीतकार एक मूर्ख है. और नीचे उसने अपने हस्ताक्षर कर दिए. फिर उसने संगीतकार को वह कागज देकर कहा कि वह भरे दरबार में उसे पढ़ कर सुनाए. संगीतकार ने उसे इस प्रकार पढ़ा—'यह संगीतकार एक मूर्ख है. चार्ल्स दूसरा!'

—वीणा वल्लभ

एक भेदभरी कहानी

आखिरी रात एक चोर की

आज की रात आखिरी रात थी. आज के बाद संसार के सब सुख-ऐश्वर्यों का द्वार खुला पड़ा था. पूरे एक वर्ष का घोर परिश्रम और चतुराई अब रंग लाने वाली थी.

वर्ष भर पहले वह एक साधू के वेश में इस किले के अंदर घुसा था. उस दिन राजकुमार का जन्म-दिवस था. उत्साह और उमंग से भरी सारी जनता किले में उमड़ आई थी. महाराजा सुमतसिंह और महारानी ने भी जनता के उत्साह को सिर-आंखों लिया. अखंड भोज और दान-दक्षिणा का तांता लगा था. सजे-धजे नन्हे राजकुमार को लोग आशीर्वाद के साथ कुछ उपहार देते और आगे बढ़ जाते.

उस नामी चोर का नाम किरपाल सिंह था. वह साधू के वेश में घुसा था और खा-पीकर दान-दक्षिणा लेकर बजाय बाहर जाने के, चुपचाप एक ओर घने कुंजों की छाया में खिसक गया था.

यह उसका प्रण था कि राजा के यहां एक बार तगड़ी चोरी करने के बाद वह सदा के लिए चोरी का धंधा छोड़कर दूर किसी दूसरे राज्य में जाकर बस जाएगा और सम्मानित जीवन गुजारेगा.

दो-चार दिन में जब उसने काफी तगड़ी चोरी कर ली, तो एक रात उसने चुपचाप किले से निकलने का प्रयत्न किया. किंतु वह जिस भी राह से निकलने का

प्रयत्न करता, उसी राह
खड़े पाता. निराश होकर
लौट आया. वह एक ऐसे
कोई द्वार नहीं था!

जिस सघन कुंज में
बनाया था, भाग्य से उसक
वर्ष पहले महाराजा की
एकाएक गिरकर मर गई
समझकर, वह राह केव
और यों वह प्रेत-कुंज कह

किरपालसिंह परेश
कर भेजा जाए, इन समझ

और तब अपने को
कर उसने एक नई तरक

प्रेत-कुंज से लगा

ओर माली अपना क
का ढेर लगा जाते थे.

किरपाल सिंह दिन
में अपने काम करता
तोड़कर खाता. कभी
कोई भी चीज चुराक
बाग में कुआं था ही.

प्रयत्न करता, उसी राह यमदूतों के रूप में प्रहरीगण खड़े पाता. निराश होकर वह फिर उसी सघन कुंज में लौट आया. वह एक ऐसे पिंजड़े में आ फंसा था, जिसका कोई द्वार नहीं था!

जिस सघन कुंज में उसने अपने छिपने का स्थान बनाया था, भाग्य से उधर कभी कोई नहीं आता था. चार वर्ष पहले महाराजा की इकलौती पंचवर्षीय पुत्री वहां एकाएक गिरकर मर गई थी. सभी ने इसे भूतों का कोड़ समझकर, वह राह केवल भूतों के लिए छोड़ दी थी. और यों वह प्रेत-कुंज कहलाने लगा.

किरपालसिंह परेशान था कि इस चक्रव्यूह को क्यों कर भेदा जाए, इन यमदूतों से कैसे निपटा जाए!

और तब अपने को लंबे समय के लिए कैदी मान-कर उसने एक नई तरकीब निकाली.

प्रेत-कुंज से लगा जो विशाल बाग था, उसके एक

ओर माली अपना काम खत्म करके फावड़ों-कुदालों का ढेर लगा जाते थे.

किरपाल सिंह दिन भर कुंज में सोता था और रात में अपने काम करता. भूख लगती, तो पेड़ों से फल तोड़कर खाता. कभी पहुंच हो जाती, तो रसोईघर से कोई भी चीज चुराकर खा आता. प्यास बुझाने को बाग में कुआं था ही.

और फिर सारी रात या तो कुछ नई चीजें चुराता या फावड़े और कुदाल से कुंज की धरती खोदता. इधर-उधर फिरता कोई प्रहरी कोई आवाज सुन लेता, तो भूत के डर से सिकुड़कर वहां से दूर भाग जाता. मौत से भी टक्कर लेने वाले, भूत के नाम से भाग खड़े होते थे.

रात में घूम-घूम कर किरपालसिंह ने अंदाज लगा लिया था कि किस दिशा में कितना गहरा और कितनी दूर तक खोदा जाए, तो वह सुरंग उसे उस किलेनुमा पिंजड़े से छुटकारा दिला देगी.

वैसे तो किरपालसिंह का बाप भी नामी चोर था, पर एक बार बाप और बेटे ने एक बड़े सेठ की हवेली में एक सुरंग बनाने के लिए मजदूर का काम किया था. प्रयोजन केवल यही था कि चोरी करने के लिए उन्हें

— लीला सरन

वहां के गुप्त स्थानों का पता लग जाए. सो बीस वर्ष पहले किए काम का गुप्त ज्ञान आज काम दे रहा था.

वह सुरंग खोदता जाता और उसकी नरम उप-जाऊ मिट्टी बाग की क्यारियों में फैला देता. माली लोग

देखते तो डरकर सिहर जाते. उनके लिए प्रेतगण अब खुलकर नृत्य कर रहे थे.

और एक दिन वह आया कि पृथ्वी के अंदर खोदी गई सुरंग ने उसे किले के बाहर की सुनसान खुली जगह पहुंचा दिया. सुरंग के अंदर से जब उसने ऊपर तारों-भरा स्याह आकाश देखा, तो प्रसन्नता के मारे वह नाच उठा.

पूरा एक वर्ष हो गया. आज फिर नन्हे राजकुमार का जन्म-दिन है. आज फिर प्रजा के लिए किले के फाटक खुलेंगे. आज फिर सारे दिन जश्न मनाए जाएंगे.

साल भर चोरी करके उसने बहुत सारा धन, कीमती वस्त्र, हीरे-जवाहरात और न जाने क्या क्या एकत्र कर लिये थे. वह धन तो उसकी तीन पुश्तों तक भी न चुकता.

एक बार उसने उसी समय वहां से निकलकर राज्य की सीमा पार कर लेने की बात सोची. फिर उसे जीवन भर कोई भय नहीं था.

पर तत्काल उसे राजकुमार के जन्म-दिन का ध्यान आया. उसने सोचा, क्यों न अपनी जन्मभूमि की आखिरी रात जश्न और नाच-गाने देख-सुनकर बिताई जाए. फिर तो इस धरती को छोड़ ही देना है.

वह फिर अपने कुंज में आकर सो गया. किंतु अचानक कुंज के निकट ही दो जनों की फुसफुसाहट सुनकर उसकी नींद खुल गई. डरके मारे उसकी सांस रुकने लगी. वर्ष भर का घोर परिश्रम जब सफल हो चुका है, तो क्या वह ऐसे सोते हुए पकड़ लिया जाएगा?

वह सांस रोके उन लोगों की बातें सुनने लगा. एक पुरुष स्वर कह रहा था—"सुनो, मोहिनी, यह काम बड़ी सफाई से होना चाहिए. किसी को कानों-कान खबर न हो."

नारी-कंठ कुछ कांप रहा था—"पर, सरकार, यदि किसी को पता लग गया, तो?"

"नहीं, मोहिनी, यह तुम्हारी ही कुशलता पर निर्भर है. महाराज का भोजन तुम स्वयं लगाती हो. बड़ी चतुराई से यह पुड़िया उनकी खीर में घोल देना. बस उसके बाद राजकुमार और रानी को समाप्त करना तो. . ." और उसने चुटकी बजा दी.

मोहिनी फिर जरा हिचकी—"पर. . ."

पुरुष कंठ जरा खुशामद के स्वर में बोला, "मोहिनी, तू इतनी चतुर है, इतनी अच्छी है! तुझे क्या यह दासी का जीवन बहुत प्यारा है? तू नहीं जानती कि कल सुबह तू इस राज्य की पटरानी होगी?"

मोहिनी हंस दी—"इसका क्या भरोसा, सरकार?"

"क्या कहती है, मोहिनी? ले, यह मेरी हीरे की अंगूठी पहन ले. यह अंगूठी केवल मेरी पटरानी के लिए ही है. मेरा विश्वास कर. सुंदरराय ने आज तक किसी के साथ दगा नहीं की," और वह धीरे से हंस दिया.

सांस रोके किरपालसिंह ने हौले से झांककर देखने का प्रयत्न किया, किंतु वे दोनों दो दिशाओं में मुड़कर चले गए थे.

वे तो चले गए, पर किरपालसिंह को जैसे अंधेरे गैस भरे कुएं में धकेल गए. बौखलाहट के मारे वह उठकर बैठ गया.

तो वह सुंदरराय था? महाराज सुमनसिंह का चचेरा भाई, जिसे वह अपने साथ छाया की भांति रखते हैं, जिसे महाराज प्राणों के समान प्यार करते हैं!

हुं! कहता है—'सुंदरराय ने किसी के साथ दगा नहीं की!' इससे भी अधिक भयानक 'दगा' का कोई रूप हो सकता है क्या?

महाराज सुमनसिंह, सचमुच सुमनसिंह थे. प्रजा उनको कितना चाहती है, यह कोई छिपी बात नहीं. चोर होते हुए भी किरपालसिंह के हृदय में अपने राजा के लिए आदर था. और आज उसी राजा की ऐसे धोके से हत्या हो जाएगी! जिस राजकुमार का जन्म-दिन मनाने को प्रजा उमड़ी पड़ रही है, उसी राजकुमार की रक्त सनी छटपटाती लाश देखेगी प्रजा!

नहीं, किरपालसिंह यह नहीं होने देगा. उसके रहते दुष्ट सुंदरराय अपना षड्यंत्र पूरा नहीं कर सकता.

और वह एक नई स्फूर्ति से उठ खड़ा हुआ. पर अचानक अपने ऊपर दृष्टि पड़ने पर उसके हाथ-पांव सुन्न पड़ने लगे. साल भर की बढ़ी दाढ़ी. . . मिट्टी में सने गंदे कपड़े. . . मैला-कुचैला शरीर.

कितना बेवकूफ था वह भी! जश्न मनाने यहां रुक गया. यह नहीं हुआ कि सुरंग से निकलकर, शहर जाकर, नए कपड़े खरीदकर, नहा-धोकर, आदमी बनकर बाहर फाटक से सबके साथ अंदर आता.

पर यदि वह ऐसा ही करता तो?. . . तो क्या उसे महाराज की हत्या के षड्यंत्र का पता चल पाता?

और तभी किरपालसिंह को याद आया कि उसे जिंदा या मुर्दा पकड़ लाने वाले के लिए महाराज ने एक सहस्र स्वर्ण मुद्राएं इनाम देने की घोषणा की थी.

उस जमाने के नियम बड़े कठोर थे. साधारण चोरी करने वाले को भी फांसी का दंड दे दिया जाता. और यदि किसी कारण फांसी न दी जाए, तो हाथ काट देना, आंखें फोड़ देना आदि साधारण बातें थीं.

किरपालसिंह को लगा कि उसके गले में फांसी का फंदा कसा जा रहा है, उसका दम घुट रहा है. उसकी

शीर्षक प्रति

ऊपर के चित्र
उत्तर एक सब से अ
के मूल्य की पुस्तकें पु
पते पर भेजिए : स

जीभ बाहर लटकी
बाहर निकले आ र
सिर हिला दिया.

क्या बेवकूफी
जाकर स्वयं अपनी
बुद्धिमानी है? उसे
तो उसकी बला से,
सिंह के पास रहे;
दोनों में से एक भी

वह फिर लेट रा
धोएगा, बढ़िया कपड़
और वह राज्य छ

उसने धीरे धी

शीर्षक प्रतियोगिता–२

छाया : देवीदास कसबेकर.

इस चित्र का शीर्षक बताइए

ऊपर के चित्र को देखिए और ज़रा सोचकर इसका एक बढ़िया और फड़कता हुआ शीर्षक बताइए. अपने उत्तर एक सब से अलग पोस्ट कार्ड पर लिखकर हमें २० अप्रैल तक भेज दीजिए. सबसे बढ़िया शीर्षक पर दस रुपए के मूल्य की पुस्तकें पुरस्कार में मिलेंगी. हां, कार्ड पर अपना नाम और पता लिखना मत भूलिए. शीर्षक के कार्ड इस पते पर भेजिए : **संपादक, 'पराग' (शीर्षक प्रतियोगिता–२), पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बम्बई-१**

जीभ बाहर लटकी पड़ रही है, उसकी आंखों के ढेले बाहर निकले आ रहे हैं. और घबड़ाकर उसने जोर से सिर हिला दिया.

क्या बेवकूफी की बात है! राजा को बचाने जाकर स्वयं अपनी मौत को निमंत्रण देना कहां की बुद्धिमानी है? उसे तो कल यह राज्य छोड़ ही देना है, तो उसकी बला से, राज्य सुंदरराय हड़प ले या सुमनसिंह के पास रहे; उसके लिए तो दया दिखाने वाला दोनों में से एक भी न होगा.

वह फिर लेट रहा. जब रात हो जाएगी तो नहाएगा-धोएगा, बढ़िया कपड़े पहनकर सदा को यह किला और यह राज्य छोड़ देगा.

उसने धीरे धीरे कुंज में इधर-उधर छिपाया चोरी का माल एकत्र किया. उसे बांधकर उसने सुरंग के बहुत अंदर जाकर रख दिया, जिससे आखिरी समय में कोई काम करने को न रह जाए.

और फिर अचानक उसका मन बेचैन होने लगा. वह सोचने लगा— मैं हूं चोर, बुरा हूं, तो राजा मेरे साथ भी बुरा व्यवहार ही करेंगे. किंतु महाराजा सुमनसिंह कितने दयालु हैं, कितने प्रजा वत्सल! उसे याद आने लगा कि एक बार जब भयंकर अकाल-सूखा पड़ा था, तो राजा ने सबका कर ही माफ नहीं कर दिया था, वरन अपने समस्त अन्न भंडार प्रजाजनों के लिए खुलवा दिए थे. एक दिन उन्होंने आंखों में आंसू भरकर महामंत्री से कहा था— "मेरी प्रजा का कोई भी

(देखिए पृष्ठ ४६)

ताक् धिनाधिन् ताक्

ताक् धिनाधिन् ताक्!
धड़-धड़ चलता चाक!
रामधनी को गुस्सा आया,
नौ मन गेहूँ पीस खिलाया;
हम रह गए अवाक!
ताक् धिनाधिन् ताक!

ताक् धिनाधिन् ताक!
रुपए पाऊँ लाख!
जीवन भर रसगुल्ले खाऊँ,
जो भी आए, उसे खिलाऊँ;
खूब जमाऊँ धाक!
ताक् धिनाधिन् ताक!

ताक् धिनाधिन् ताक!
उन की देखो नाक!
एक तीर-सी खड़ी हुई है,
काफी आगे बढ़ी हुई है;
ककड़ी की है फाँक!
ताक् धिनाधिन् ताक!

ताक् धिनाधिन् ताक!
बोले मिस्टर काक :
'कितने दूनी तेरह होते?
आता नहीं, मगर क्यों रोते?
जो हो, कहो तपाक!'
ताक् धिनाधिन् ताक!

ताक् धिनाधिन् ताक!
लिये डाकिया डाक :
'बोड़म जी का घर बतलाओ;
बुद्धू जी, चिट्ठी ले जाओ!
करता नहीं मजाक!'
ताक् धिनाधिन् ताक!

—श्रीप्रसाद—

छाया : सूर्यकांत एम. दुधेड़िया

kissekahani.com

डबल सीक्रेट एजेंट... (पृष्ठ ७ से आगे)

जोसेफ ने खड़े होने की कोशिश की.

"नो, नो, प्लीज, डोरियन—नाट हिअर (नहीं नहीं, यहां नहीं). सब लोग सड़क पर इकट्ठे हो जाएंगे और चीखने लगेंगे. ओह्, क्या पागलपन छाया हुआ है दुनिया पर! सबसे ज्यादा दीवानी कौम इन स्टुडेंट्स की होती है."

डोरियन चीखने से बाज रही. लेकिन खिलखिलाते हुए बोली—"अब तुम बूढ़े हुए, जोसेफ. तुमको तो अब संन्यास ले लेना चाहिए. यह दुनिया टीनेजरों की है, विद्यार्थियों की है. वे ही दुनिया पर शासन करेंगे—बाई लव—प्यार से. ऐंड नाउ, देअर गॉड्स आर कमिंग (और अब तो उनके खुदा ही साक्षात् चले आ रहे हैं)!"

"नेवर माइंड," कहते हुए जोसेफ जितना उठा था, उतना ही बैठ गया. रूमाल निकालकर उसने माथे का पसीना पोंछा. "फिकर मत करो."

"क्या तुम उन्हें पसंद नहीं करते, डिअर जे०?" डोरियन ने चिंतित स्वर बनाकर पूछा. वह क्षण क्षण में अपने स्वर और मुद्रा में परिवर्तन ला सकती थी. जोसेफ ने ध्यान से उसके अभिनय को देखा. सुपर्ब!

"डोंट बी सिली, डे (पागलपन मत दिखाओ)! तुम जानती हो कि इन चारों ओरिजिनल बीटिलों ने दुनिया को अपनी उंगलियों पर नचा रखा है और उन नाचने वालों में मैं भी हूं."

"इन स्पाइट आफ यौर हैप्पी-गो-लकी लैग्स, जे० (बावजूद अपनी मस्तानी टांगों के?)?"

एक हल्के-से कातर भाव ने क्षण भर के लिए जोसेफ का चेहरा काला कर दिया. उसकी टांगें उसकी सबसे बड़ी कमजोरी थीं. अब से पांच साल पहले तक वह एक बड़ी आटोमोबाइल (मोटर-कार) फर्म का मैनेजर था. पांच हजार रुपए मासिक तनखा उसको मिलती थी—इनकम टैक्स कट कटाकर. इटली में उसने आटो-इंजीनियरिंग पास की थी और भारत में आने पर उसे सीधे असिस्टेंट मैनेजर का पद मिल गया था, जो साल भर में ही एक सीढ़ी और उभर गया. वह सौ मील प्रति घंटा कार चलाकर भी अपने होश-हवास कायम रख सकता था. वह किसी भी कार के पुर्जे पुर्जे उधेड़कर उन्हें खिलौने की तरह जोड़ सकता था. वह कार को सूंघकर उसकी खराबी बता सकता था. उसका आदर होता था, सत्कार होता था, खुशामद होती थी. तब एक दिन आया वह दुर्दिन—जब सिर्फ चालीस मील—लगभग साठ किलोमीटर की रफ्तार पर उसकी कार का हैडलांग एक्सीडेंट हुआ—और उसकी दोनों टांगें—'मस्तानी' हो गईं. उसकी उमर तीस और चालीस के बीच में कहीं लटक रही थी. लेकिन जब वह चलता था, तो किसी औरंग-ओटांग का गुमान होता था.

इतनी बड़ी सरविस चंद दिनों के बाद छूट गई थी. छह महीने इलाज कराकर जब वह अस्पताल से निकला था, तो पास में बीस-पच्चीस हजार रुपया था, और लाचार टांगें थीं. उसने अब तक विवाह नहीं किया था, क्योंकि वह जन्म भर कुंवारा रहना चाहता था. वह पौप-संगीत का शौकीन था. जब वह इटली से आया था, बीटिल्स का मूल ग्रुप लिवरपूल में पैदा हो चुका था. इसके बाद जैसे जैसे दुनिया भर के नौजवानों तक बीटिल्स के पागल बना देने वाले, उत्तेजक गीत पहुंचे, वैसे वैसे भारत में भी इनके अनगिनत प्रशंसक पैदा होते चले गए. उनमें जोसेफ भी शामिल था. इससे पहले वह ट्विस्ट में अनेक धुरंधरों को मात दे चुका था. इटली में भी उसने ट्विस्ट में नाम पाया था.

और अब?—अब जोसेफ देश के बड़े बड़े शहरों में फैले एक बड़े भारी दल का संचालन कर रहा था. लेकिन अपने आप वह सिर्फ आठ-दस भरोसे के आदमियों के सामने आया था. उन्हीं में रोशनसिंह, चंदनसिंह और डे शामिल थी.

वह जानता था कि डे उसको टीज करना नहीं चाहती थी. उसका मजाक सीधा-सच्चा और सरल होता था, क्योंकि वह जोसेफ का ट्विस्ट उस समय देख चुकी थी, जब वह बारह बरस की छोकरी भर थी और जोसेफ की बांहों और जांघों के पुट्ठे कभी ट्विस्ट करते समय थकने का नाम ही नहीं लेते थे. वह घंटे घंटे, कभी कभी दो दो घंटे बराबर ट्विस्ट करता रहता था—और कभी तो पूरा फ्लोर ही खाली हो जाता था. उसके कूल्हे, बराबर, समगति से, कंधों और हाथों की हल्की-सी, लुभावनी भंगिमाओं के सहारे हिलते रहते थे.

"मैं तुम्हारा बॉस हूं, मिस डोरियन," जोसेफ ने सीधे होते हुए कहा.

"ओ. के., बॉस डिअर," मेज पर कुहनियां रखकर डोरियन डे ने होंठों से बाहर जीभ निकाल कर हिलाई और आंखें छोटी कर लीं.

जोसेफ ने इस पर ध्यान नहीं दिया.

"कॉलेज-क्लब में किस दिन इन चार बड़ों का प्रोग्राम रखा जाए, यह मैंने तय कर लिया है—रविवार सतरह मार्च—ठीक?"

"आल राइट, बॉस," डे ने उसी प्रकार शैतानी से आंखें नचाकर कहा.

"और उस में अभी पंदरह दिन बाकी हैं," जोसेफ ने उसकी शैतानी का नोटिस न लेकर कहा. "तब तक 'ड्रीम पिल्स' बंद रखी जाएंगी."

"इंपॉसिबिल, बॉस डिअर," डे ने उसी मुद्रा में बिना झिझक कहा.

"तुम नहीं समझती," जोसेफ परेशान-सा होकर बोला. "पुलिस को शक हो गया है. कम से कम मैं पुलिस पर शक करता हूं. दस और बारह बरस के दो लड़के, जिनके नाम राम और श्याम हैं, पुलिस ने विशेष रूप से ट्रेन किए हैं—और अगर यह बात नहीं है, तो मेरे दिमाग में जरूर खलल पैदा हो गया है. मेरा खयाल है किसी प्रकार उन्हें आधुनिक ढंग से लड़ने-भिड़ने की शिक्षा दी गई है, वरना वे जबरदस्त छोकरे—बनवारी और मनोहर—उनसे मात खाने वाले नहीं थे. मैं समझता हूं वे भी क्लब में शामिल होंगे."

"बुरी बात है," डे खिलखिला कर हंसी. "दस-बारह बरस का छोटा छोटा छोकरा लोग. आर्मी-मैन की तरह लड़ने वाला! खूबसूरत होगा न?"

"हो सकता है," जोसेफ ने इस लड़की की जिंदादिली से मन ही मन ईर्ष्या अनुभव करते हुए कहा. "मगर उतने ही प्राणलेवा भी हैं वे लोग. उस छोकरे उस्ताद बनवारी को पटखी खिला देना हर किसी के बस की बात नहीं."

"क्या तुम चाहते हो कि उनका काम तमाम कर दिया जाए?" डे ने आंखें सिकोड़कर इस तरह पूछा, मानो वे लड़के न हो कर मच्छर हों.

"नो," जोसेफ ने निश्चय के स्वर में कहा. "मैं चाहता हूं कि उन्हें जिंदा पकड़ा जाए..." फिर वह कुछ सोचता हुआ बोला, "मैंने तुम्हें आज तक नहीं बताया था, डे, मगर अब तुम मेरे साथ बहुत दूर तक आ चुकी हो—अब बताने में कोई हर्ज नहीं है. पुलिस समझती है कि उसका वास्ता किसी मामूली गुंडा-दल से पड़ा है. मगर उन्हें अपनी गलती तब महसूस होगी, जब पानी सिर से गुजर चुकेगा. इस योजना के पीछे करोड़ों रुपया लगा हुआ है."

"डोंट ब्लफ मी, डिअर जोसेफ! एक रुपये का नोट सौ में नहीं चलता!"

"काश कि तुम उससे आधा भी जानती, जितना मैं पचाए बैठा हूं," जोसेफ ने अंग्रेजी में कहा. "एक बहुत बड़ी हस्ती इस योजना के पीछे है, और उसके भी पीछे एक शक्ति उससे हजारों गुना बड़ी है. उस हस्ती के शौक और खेल तक पुराने रोमन बादशाहों के शौकों को मात करते हैं. यह एल-एस-डी इतने बड़े परिमाण में उसी के द्वारा एक बड़ी फैक्टरी में तैयार होती है—और, डे, उसके पास एक ऐसा आदमी है, जो ताजा कच्चा गोश्त खाता है—और अपने शिकार में इस बात का कोई फरक नहीं मानता कि वह जानवर है या आदमी. अक्सर जो लोग इस महान योजना में असफल होते हैं, या फिर विश्वासघात करते हैं, उन्हें उस बड़ी हस्ती की सेवा में

बुशशर्ट का उपयोग——

"कहा था न, कि मेरे जैसी छापेदार बुशशर्ट बनवा लो! गणित की परीक्षा के दिन काम आएगी!"

ही भेज दिया जाता है. वह अपनी मरजी और मूड के मुताबिक उसका उम्र भर के लिए इंतजाम कर देती है."

"तुम मुझे यह सब क्यों बता रहे हो, जोसेफ?" डे ने चिढ़कर कहा.

"इसलिए, डे, कि तुम यह समझ लो कि जिस खेल में तुम पड़ी हो, जिसे इतने शौक से खेल रही हो, वह बच्चों का खेल नहीं है—यह तुम्हें समय रहते पता लगना ही चाहिए. मैं चाहता था कि तुम यह अच्छी तरह समझ लो कि इस खेल में बहुत-सी चालें शतरंज की चालों की तरह ऐसी हैं, जिन्हें तुम्हारा डिअर जोसेफ नहीं चल रहा है—कोई और ही है, और उसके पीछे भी कोई और ही है, जो उन चालों को चल रहा है."

"मैं यह सब जानना नहीं चाहती," डे ने कठोर स्वर में कहा. "कभी उस बनमानुष के दर्शन करना नहीं चाहती, जो तुम्हारी किसी बड़ी हस्ती का गुलाम है, और जिसके लिए पशु और आदमी सब बराबर हैं. मैं तुम्हारे प्रति, और अपने काम के प्रति वफादार रहूंगी, लेकिन उस बनमानुष के डर से नहीं, गूंगी या बहरी हो जाने के डर से नहीं—बल्कि इसलिए, डिअर जोसेफ, कि मैंने

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

एक कहानी : घू-घू

उल्लू महाराज

रोज की तरह उस दिन भी खिलौनेवाला दूकान सजाता जा रहा था और गाता जा रहा था :

नन्ही-सी गुड़िया दस पैसे,
कुबड़ी-सी बुढ़िया दस पैसे,
हाथी औ' घोड़ा दस पैसे,
हंसों का जोड़ा दस पैसे,
हर खेल-खिलौना दस पैसे!

उसके गीत की आवाज सुन-सुनकर छोटे-बड़े बच्चे और रास्ता चलते राहगीर उसकी दूकान के सामने जमा होते जा रहे थे और वह गाए जा रहा था :

सरकस का जोकर दस पैसे,
मालिक औ' नौकर दस पैसे,
उल्लू औ' बौना दस पैसे,
तोता औ' मैना दस पैसे,
हर खेल-खिलौना दस पैसे !

जब काफी बच्चे और बड़े दूकान के सामने जमा हो गए, तो उसने गाना बंद कर दिया और बोला, "आज मैं आप सबको एक ऐसी कहानी सुनाऊंगा, जिसे सुनकर आप फड़क उठेंगे."

"तुम झूठ कहते हो," एक होशियार लड़के ने आगे बढ़कर कहा. "क्योंकि जब कहानी में रस आने लगता है, तो तुम्हें अपने खिलौने याद आ जाते हैं और तुम खिलौनों की बिक्री के चक्कर में हमें चक्कर में डाल देते हो. तुम कहानी अधूरी छोड़ देते हो और हम खिलौना पाकर खुशी खुशी पूरी कहानी सुने बिना अपने अपने घरों को लौट जाते हैं. अब हम इस तरह ज्यादा दिनों तक बेवकूफ नहीं बनेंगे."

बच्चे की बात सुनकर खिलौनेवाला सोच में पड़ गया. वह कहने लगा, "तुम सच कहते हो, मेरे बच्चे! झूठ बोलकर या धोखा देकर बहुत सारे लोगों को बहुत दिनों तक बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता. आज मैं ऐसी ही एक कहानी सुनाऊंगा."

"लेकिन अधूरी नहीं, हम पूरी कहानी सुनेंगे," बच्चे चिल्लाए.

"हां हां, पूरी कहानी. अब सब अपनी अपनी जगह पर बैठ जाओ."

खिलौनेवाले ने अपने खिलौनों की तरफ देखा और कहना शुरू किया : "यह उल्लू है. एक बार पक्षियों ने धोखे में आकर इसे अपना राजा बना लिया था. पर झूठ और धोखे का असर ज्यादा दिनों तक कायम न रह सका. इसका भंडाफोड़ हुआ और उल्लू को इसका फल भुगतना पड़ा."

इतना कहकर खिलौनेवाले ने सबकी तरफ नजरें घुमाकर देखा और कहा, "सारे बच्चे लोग तालियां बजाएं."

बच्चों ने तालियां बजाई और उसने आगे कहानी कहना शुरू किया, "उल्लू को रात के अंधेरे में दिखाई देता है. वह सुनसान बियाबान जंगल में पेड़ की सूखी डाल पर बैठा अपनी गोल गोल आंखों को इधर-उधर मटकाता अंधेरे में सब कुछ देखता रहता है. कभी कभी यह आबादीवाले इलाकों में भी आ जाता है और अपनी कर्कश आवाज से तुम बच्चों को डरा देता है."

"यह तो कहानी नहीं है. ऐसा लगता है कि तुम

उल्लू के बारे में
से बच्चे एक साथ
"नहीं, मैं तुम
उल्लू नहीं बनाय
उन्हें मूर्ख जरूर
मैं आगे कहानी
हाथ में हूं. देख
सबने उल्लू
अब खिलौनेव
एक उल्लू अंधेरी
था. दो नन्ही अबा
पास से निकली.
भटकते देख लिया
'तुम कहां जा रह
"उल्लू की
के मारे सहम गईं
उन्हें बड़ा ताज्जुब
देता है जब कि उ

उल्लू के बारे में बताकर हमें उल्लू बना रहे हो!" बहुत-से बच्चे एक साथ बोल पड़े.

"नहीं, मैं तुम्हें उल्लू नहीं बना रहा हूं. बच्चों को उल्लू नहीं बनाया जा सकता. हां, शैतानी करने पर उन्हें मुर्गा जरूर बनाया जा सकता है. इससे पहले कि मैं आगे कहानी कहूं, सब इस उल्लू की तरफ, जो मेरे हाथ में है, देख लें."

सबने उल्लू की तरफ देखा.

अब खिलौनेवाले ने कहानी आगे बढ़ाई, "एक बार एक उल्लू अंधेरी रात में एक सूखे पेड़ की डाल पर बैठा था. दो नन्ही अबाबीलें, जो अंधेरे में भटक गई थीं, उसके पास से निकलीं. उल्लू ने उन्हें अंधेरे में इधर-उधर भटकते देख लिया. वह कड़क आवाज में उनसे बोला, 'तुम कहां जा रही हो?'

"उल्लू की आवाज सुन कर दोनों अबाबीलें डर के मारे सहम गईं और एक तरफ पेड़ के सहारे दुबक गईं. उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ कि उल्लू को अंधेरे में भी दिखाई देता है जब कि उन्हें अंधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं देता. तब तो उल्लू सब पक्षियों में जरूर महान है.

"अगले दिन सवेरा होने पर दोनों अबाबीलों ने यह बात तोता, मैना, नीलकंठ, हुदहुद—सबको सुनाई. सभी दंग रह गए. उल्लू की इस खूबी को देखते हुए जंगल के पक्षियों ने यह तय किया कि उल्लू को अपना राजा चुन लिया जाए. इस प्रस्ताव पर एक कौए ने ऐतराज करते हुए कहा, 'उल्लू को राजा बनाने से पहले यह मालूम कर लिया जाए कि क्या उसे दिन में भी दिखाई देता है?'

"कौए की बात सुनकर सारे पक्षी नाराज हुए और उसकी अकल को कोसते हुए कहने लगे, 'दिन में तो सभी को नजर आता है. इसमें क्या नई बात है.'

"कौए ने कहा, 'मैं चाहूंगा कि यह बात उल्लू को राजा बनाने से पहले उससे तस्दीक कर ली जाए.'

"जब रात हुई, तो तोता, मैना, नीलकंठ, अबाबील और कौआ, पक्षियों की तरफ से पंच बनकर उल्लू के निवास-स्थान पर पहुंचे. उल्लू वहां पहले से ही शिकार की तलाश में बैठा था. उन्हें अपने पास आया देख

— हमीदुल्ला खां

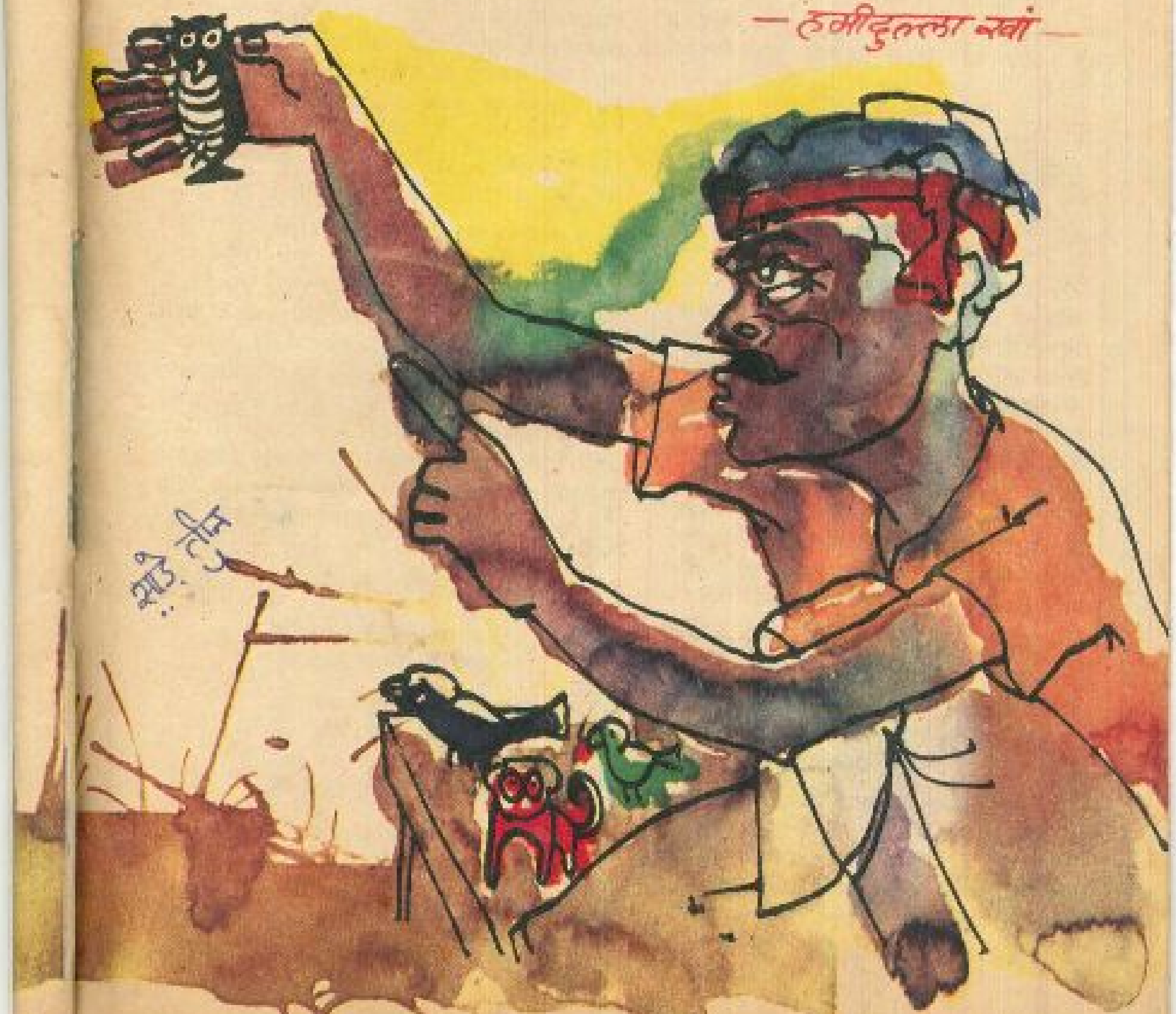

बहुत खुश हुआ. अबाबील चूंकि इन पक्षियों में सबसे छोटी चिड़िया थी, इसलिए उसे अपनी जान का खतरा ज्यादा था. वह दूर से ही चिल्ला कर उल्लू से कहने लगी, 'हम तुम्हें राजा बनाने आए हैं. हम आप का अभिनंदन करना चाहते हैं.'

"उल्लू खुश हो कर बोला, - 'अभिनंदन?'

'हां, आपका अभिनंदन.'

'हम आप सब के बड़े आभारी हैं.' उल्लू बोला.

'लेकिन आप एक बात बताएं. क्या आप को दिन में भी दिखाई देता है?' कौए ने अपनी शंका प्रकट करते हुए कहा.

'यह बात तुमने क्यों पूछी?' उल्लू ने कौए पर नाराज होते हुए कहा. वहां खड़े सभी पक्षी कौए की अकल पर तरस खाने लगे.

"कौए ने बात को संभालते हुए कहा, 'महाराज, कल दोपहर के वक्त दिन के उजाले में हम इस जंगल की एकमात्र सड़क पर आपका शानदार जुलूस निकालना चाहते हैं.'

'हमें दिन में अच्छी तरह दिखाई देता है. रात के अंधेरे से भी ज्यादा!' उल्लू बोला.

'ठीक है,' महाराज, हम जुलूस की तैयारी करते हैं. कल दोपहर को हम आप को यहां से गाजे-बाजे के साथ ले जाएंगे.'

"दूसरे दिन दोपहर में उल्लू की सवारी ठाठबाट के साथ जंगल की एकमात्र सड़क पर होकर गुजरने लगी. सबसे आगे उल्लू ठीक किसी दूल्हे की तरह, उसके पीछे ढेर सारे पक्षी बरातियों की तरह चल रहे थे."

"क्या उल्लू को दिन में भी दिखाई देता है?" बच्चों ने खिलौनेवाले को कहानी के बीच में ही टोकते हुए पूछा.

"नहीं, यही तो मैं बताने जा रहा हूं. उल्लू को दिन में दिखाई नहीं देता. इसलिए वह जुलूस के आगे आगे अंदाजे से चल रहा था और पक्षियों को धोखा दे रहा था. अब कहानी आगे सुनो. बीच में मत टोको. कौए के अलावा सारे पक्षी उल्लू के पीछे पीछे चल रहे थे. कौआ उनके ऊपर उड़ रहा था. अभी वे कुछ ही कदम चले होंगे कि कौए को दूर सड़क पर एक ट्रक आता दिखाई दिया. उसने सबसे कहा, 'मुझे सामने से एक ट्रक आता दिखाई दे रहा है. इसलिए आप सब सड़क पर से हट जाएं.'

"कौए की बात सुन कर कुछ पक्षी सड़क से हट गए, लेकिन उल्लू ने कौए की बात को सुनी-अनसुनी करते हुए सड़क पर आगे बढ़ना जारी रखा. उसे वैसे भी दिखाई कुछ नहीं दे रहा था. वह आता भी तो कहां? आखिर ट्रक उल्लू के बिलकुल नजदीक आ गया और उसे कुचलता हुआ आगे बढ़ गया. इस तरह उल्लू अपने झूठ से पक्षियों को अधिक धोखा न दे सका. बच्चो, कहानी खत्म हुई. अब सब तालियां बजाओ और याद रखो, कभी अपने मुंह से झूठे और बड़े बोल न निकालो. झूठे और बड़े बोल मुंह से निकालने की बजाए जेब से पैसे निकालो और कहो कि तुमको कौन-सा खिलौना चाहिए!"

यह कह कर खिलौने वाला जोर-जोर से गाने लगा :

"हर खेल खिलौना दस पैसे!
उल्लू औ' बौना दस पैसे!

यह मस्त कलंदर दस पैसे,
बंदरी और बंदर दस पैसे,
हाथी औ' घोड़ा दस पैसे,
हंसों का जोड़ा दस पैसे,

तोता औ' मैना दस पैसे,
हर खेल खिलौना दस पैसे!"

●

अनुवाद शाखा, विधि विभाग,
राजस्थान सचिवालय, जयपुर-५.

प्रति मास

नए पुरस्कार

बच्चो, इस अंक की कहानियां ध्यान से पढ़ो और हमें २० अप्रैल तक लिखो कि अपनी पसंद के विचार से कौन कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे. तुम्हें इस प्रकार सभी कहानियों पर अपनी पसंद बतानी है. इसमें एकांकी और धारावाही उपन्यास शामिल नहीं होंगे. केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख 'अतापता' में 'सरस कहानियां' के अंतर्गत आया है. जिन बच्चों की पसंद का क्रम बहुमत के क्रम से अधिकतम मेल खाता हुआ निकलेगा, 'पराग' में उन सब बच्चों के नाम छापे जाएंगे और उन्हें हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कार में भेजेंगे.

बाल पाठकों के द्वारा इस तरह इस अंक की जो कहानी सर्वश्रेष्ठ ठहरेगी, उसके लेखक को भी ५० रुपये का एक अतिरिक्त पुरस्कार प्रदान किया जाएगा. पहले यह घोषणा दिसंबर अंक तक के लिए थी, किंतु अब इसे आगे बढ़ाया जा रहा है.

अपनी पसंद एकदम अलग कार्ड पर लिखो—'अटपटे चटपटे' आदि के कार्डों पर नहीं. अपनी उम्र भी अवश्य लिखो. पता यह लिखो—संपादक, 'पराग (हमारी पसंद–२६)', पो. आ. बाक्स नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया, बंबई–१.

अकल - झिंझोड़ कहानी

घमंड के टुकड़े

किसी गांव में एक जुलाहा रहता था. गांव के सब लोग उसी से कपड़ा बुनवाते थे. वह बड़े सरल स्वभाव का था. मीठे बोल बोलकर लोगों का मन हर लेता था. क्रोध आने पर वह किसीपर नहीं बिगड़ता था.

एक बार कुछ लड़कों ने मिलकर तय किया कि देखें जुलाहे को गुस्सा कैसे नहीं आता. वे उसे गुस्सा दिला कर ही छोड़ेंगे. उनमें से सुनील नाम का लड़का बेहद शरारती था. वह एक धनी बाप का बेटा था, इसलिए घमंडी भी था. वह बिना किसीसे कुछ पूछे ही सीधा जुलहे के घर में घुस गया.

जुलाहा बड़े प्यार से बोला, "कहो, बेटे, कैसे आए?" सुनील ने उसकी बात पर ध्यान दिए बगैर सामने पड़ी साड़ियों में से एक साड़ी उठाकर अकड़ते हुए कहा— "मुझे यह साड़ी चाहिए. क्या दाम लोगे?"

जुलाहा बोला, "दस रुपए."

सुनील ने जुलाहे के सामने ही फाड़कर साड़ी के दो टुकड़े कर दिए. फिर उसी तरह वह अकड़कर बोला— "अब क्या लोगे?"

जुलाहे ने किसी प्रकार का गुस्सा किए बिना पहले ही की तरह शांत भाव से उत्तर दिया— "पांच रुपये."

सुनील उसी तरह साड़ी के टुकड़े करता चला गया और उसके दाम पूछता रहा. जुलाहा भी टुकड़ों के दाम शांत भाव से घटाता रहा. उसने लड़के को रोका भी नहीं.

थोड़ी देर में साड़ी चिथड़े चिथड़े हो गई. अब सुनील हंसकर बोला, "माफ करना, यह साड़ी अब मेरे किस काम की! इसलिए अब इसे मैं नहीं लूंगा."

जुलाहे ने कहा— "ठीक है, अब भला यह तुम्हारे किस काम आएगी. ये टुकड़े तुम्हारे ही क्या, अब किसी के भी काम नहीं आ सकते."

सुनील हैरान था कि साड़ी बेकार हो जाने पर भी जुलाहे को गुस्सा नहीं आया. उसे खुद पर शर्म आने लगी. वह बोला, "अच्छा लो, मैं तुम्हें तुम्हारी साड़ी की लागत दे रहा हूं." और उसने पांच रुपए जुलाहे की ओर बढ़ा दिए.

जुलाहे ने कहा— "जब ये टुकड़े तुम्हारे काम नहीं आ सकते, तो भला मैं इनकी कीमत कैसे ले सकता हूं. मैं इन टुकड़ों को फिर से जोड़कर काम में लाने की कोशिश करूंगा."

सुनील ने जुलाहे से कहा— "देखो, मुझे तो कोई फर्क नहीं पड़ता. इसमें तो तुम्हारा ही नुकसान है. तुम्हें गरीब जानकर मैं ये रुपए तुम्हें दे रहा हूं. मैंने तुम्हारा नुकसान भी तो किया है!"

सुनील का घमंड देखकर जुलाहा कुछ देर चुप रहा. फिर बोला, "तुम समझते हो कि पांच रुपये देकर मेरा नुकसान पूरा कर दोगे. किसान-मजदूर मेहनत से कपास पैदा करते हैं. रात-दिन एक करके, कपास से मेरी घरवाली ने सूत काता है. मैंने सूत को रंगा, सुखाया, फिर तरह तरह के कलापूर्ण डिजाइन डालकर मेहनत से इसे बुना. तब कहीं जाकर साड़ी तैयार हुई. तुमने वही साड़ी टुकड़े टुकड़े कर डाली, जो अब किसी

काम नहीं आ सकती. इतने लोगों की खून-पसीने की कमाई पर तुमने पानी फेर दिया! अब इस नुकसान को तुम पांच रुपये देकर पूरा करना चाहते हो! अगर तुम साड़ी खरीदकर ले जाते, और तुम्हारे घर पर उसे कोई पहनता, तो ही हमारी मेहनत सफल होती."

सुनील बड़े ध्यान से जुलाहे की बात सुन रहा था. पश्चात्ताप से उसकी आंखें भर आई थीं.

वह जुलाहे से बोला, "मुझे अपना बेटा समझकर माफ कर दो. आज तुमने मुझे नई रोशनी दी है."

जुलाहे ने सुनील को गले से लगा लिया.

—स्नेह अग्रवाल

द्वारा श्री जयप्रकाश भारती, ५ ए। १६ अंसारी रोड, दरियागंज दिल्ली-६.

एक कहानी मक्खरहार

अमरूदों की सौगात

kissekahani.com

मांग, और वह भी बीवी की! चंदन खरगोश को निर्णय करना पड़ा कि चाहे जहां से भी हो, वह अपनी बीवी की मांग अवश्य पूरी करेगा.

इधर कई दिनों से उसकी बीवी अमरूदों की मांग कर रही थी—ऐसे-वैसे नहीं, इलाहाबादी अमरूदों की! चंदन खरगोश कुछ दिनों तक तो बाजार से अमरूद खरीदकर उसे खिलाता रहा, पर जब उसकी मांग में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आई और वह रोज ही अमरूदों की रट लगाए रही, तो चंदन खरगोश को इस समस्या के विषय में नए सिरे से सोचना पड़ गया.

महंगाई के इस जमाने में नोन-तेल के बजाय केवल स्वाद की पूर्ति के लिए रोज रोज किसी वस्तु पर धन खर्च किया जाए, यह चंदन खरगोश को उचित नहीं लगा. पर, अपनी प्यारी बीवी की मांग को ठुकरा भी तो नहीं सकता था. वह कोई ऐसा उपाय खोजने लगा, जिससे उसकी बीवी की मांग की भी पूर्ति होती रहे और साथ ही उसके पैसे भी खर्च होने से बचे रहें.

तभी एकाएक उसका ध्यान धीरू भालू की ओर गया. उसके घर में इलाहाबादी अमरूदों के दस पेड़ हैं, जो कि मौसम के आरंभ से लेकर मौसम के अंत तक अमरूदों से लदे रहते हैं. लेकिन किसी के घर दस अमरूदों के पेड़ हैं और वे अमरूदों से लदे रहते हैं, केवल इतने से तो समस्या हल नहीं हो सकती. भला क्यों कोई किसी को मुफ्त में रोज अमरूद देने लगा.

अतः चंदन जी अपनी बुद्धि इधर-उधर दौड़ाने लगे कि उन्हें कोई ऐसा उपाय सूझ जाए, जिससे कि धीरू भालू के घर के पिछवाड़े लगे अमरूदों में उनका भी हिस्सा लगता रहे. और ऐसा उपाय खोजने में उन्होंने सवेरे से शाम कर दी.

इस सोच-विचार के ठीक चौथे रोज बाद चंदन खरगोश धीरू भालू के घर की ओर रवाना हो गया. धीरू भालू का घर उसी मोहल्ले में था जिसमें कि उसका. इसलिए धीरू के घर पहुंचते उसे कोई देर नहीं लगी.

जैसे ही वह धीरू के दरवाजे पर पहुंचा, उसे वह बगीचे में टहलता हुआ दिखाई दिया. उसके दोनों हाथ पीछे बंधे थे और माथे पर सलवटें पड़ी हुई थीं. चंदन खरगोश को यह अंदाजा लगाते देर नहीं लगी कि धीरू किसी चिंता में लीन है.

चंदन अभी इसी ऊहापोह में पड़ा था कि वह धीरू

भालू को पुकारे या
उसे देख लिया. चंदन
झट उसकी ओर लप
हाथ अपने हाथों में
दबाते हुए बोला, "तुम
मैं इस समय बड़ा परे
कि क्या करूं!"

"क्यों, भाई, क्या
होकर पूछा.

"मेरे साथ पिछ
धीरू भालू ने चंदन
आगे बढ़ते हुए कहा.

धीरू भालू उसे
ले जाते हुए मकान
बगीचा साफ था, उसी
था कि बगीचे में सुं
में फल और सब्जिय

"तुम अमरूदों के
भालू ने पिछवाड़े के
और इशारा करते हुए

"हां, लेकिन क्यों

"मैंने इन्हें बड़ी
प्राप्त किया था. औ
उतनी ही मेहनत

भालू को पुकारे या वापस लौट जाए कि धीरू भालू ने उसे देख लिया. चंदन को अपने दरवाजे पर देख वह झट उसकी ओर लपका. पास पहुंचकर उसने उसका हाथ अपने हाथों में लेकर पकड़ा और उसे जोरों से दबाते हुए बोला, "तुम ठीक समय पर आए हो,-चंदन, मैं इस समय बड़ा परेशान हूं. समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करूं!"

"क्यों, भाई, क्या हुआ?" चंदन खरगोश ने चकित होकर पूछा.

"मेरे साथ पिछवाड़े चलो. वहीं पर सब बताता हूं," धीरू भालू ने चंदन खरगोश के कंधे पर हाथ रखकर आगे बढ़ते हुए कहा.

धीरू भालू उसे अपने बगीचे के किनारे किनारे ले जाते हुए मकान के पिछवाड़े ले गया. जिस तरह बगीचा साफ था, उसी तरह पिछवाड़ा भी. अंतर इतना था कि बगीचे में सुंदर सुंदर फूल लगे थे, तो पिछवाड़े में फल और सब्जियां.

"तुम अमरूदों के ये पेड़ देख रहे हो न?" धीरू भालू ने पिछवाड़े के बीचोंबीच लगे अमरूदों के पेड़ों की ओर इशारा करते हुए कहा.

"हां, लेकिन क्यों?" चंदन खरगोश ने पूछा.

"मैंने इन्हें बड़ी कठिनाई से अपने एक मित्र से प्राप्त किया था. और इन्हें इतना बड़ा करने में मुझे उतनी ही मेहनत और परेशानियां उठानी पड़ीं, जितनी कि एक मां को अपने बच्चे को पालने-पोसने में उठानी पड़ती हैं." धीरू भालू ने उन पेड़ों के पास पहुंचते हुए कहा. चंदन खरगोश बड़े ध्यान से उसकी बात सुन रहा था. "अपने परिश्रम का उचित फल देखकर किसे प्रसन्नता नहीं होती? मुझे भी हुई, जब इतनी सेवा-टहल के बाद इन पेड़ों में अमरूद फलने लगे. अमरूद फलने के बाद से तो मैंने इन पेड़ों पर और भी ध्यान देना शुरू कर दिया. ठीक समय पर पानी देता, जब-तब बढ़िया से बढ़िया खाद डालता और कीटाणुनाशक दवाइयां भी छिड़कता. जिसका नतीजा यह हुआ कि पेड़ों पर शरीफे की तरह बड़े और मीठे अमरूद फलने लगे. मैं पूरे तीन वर्षों से अपने पेड़ों के अमरूद खाता आ रहा हूं. मजाल है कि कोई अमरूद मुझे कभी सड़ा मिला हो. पर इस वर्ष न जाने किस दुष्टात्मा की नजर इन पेड़ों पर पड़ गई.

"अभी अमरूद लगना शुरू भी नहीं हुए थे कि न जाने इन्हें क्या हो गया. जहां पेड़ों पर एक भी सड़ा-गला अमरूद नहीं दिखाई देता था वहां अब ढेर सारे भूमि पर सड़े-गले बिखरे हुए दिखाई देते हैं. यहां तक कि उनमें कीड़े भी लपलपाते नजर आते हैं. ऐसा पिछले तीन दिनों से हो रहा है. आज भी बहुत से अमरूद सड़े-गले मुझे यहां पर बिखरे हुए मिले, जिन्हें मैंने अभी अभी बाहर

—निखिलचंद्र जोशी—

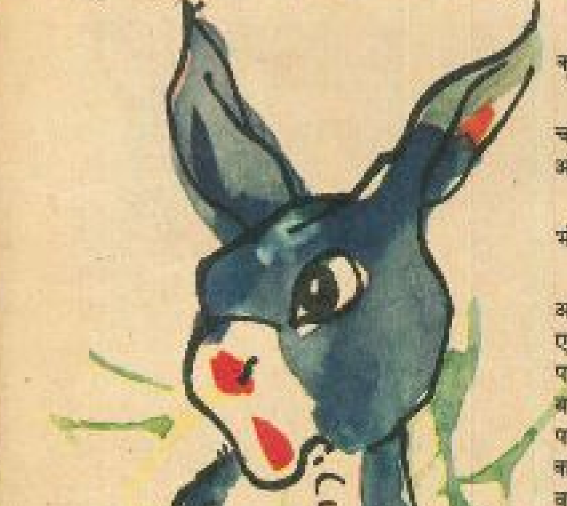

कूड़ेदान में फेंका है."

"तो यह बीमारी तुम्हारे पेड़ों को भी लग गई!" चंदन खरगोश ने 'तो' को लंबा करते हुए खोए खोए अंदाज में कहा.

"क्या ऐसी ही घटना किसी और के वृक्षों के साथ भी घट चुकी है?" धीरू भालू ने उत्सुकता से पूछा.

"हां, यही कोई दो या ढाई वर्ष पहले की बात है. मैं अपने एक मित्र सियार के यहां गया था. मेरे साथ मेरा एक पुराना साथी लोमड़ भी था. सियार के घर पहुंचने पर उसने हमें इसी प्रकार की घटना सुनाई कि उसके बाग में लगे अमरूदों के वृक्ष के अमरूद न जाने कैसे दिन पर दिन सड़-सड़कर भूमि पर झड़ रहे हैं. वह इस कारण बहुत परेशान है. मेरे मित्र लोमड़ ने, जो कि वनस्पति-विज्ञान के कुशल ज्ञाता हैं, जब यह सुना तो बताया कि अमरूदों का जानी दुश्मन है—टिप्रा. यह एक प्रकार का छोटा कीट होता है, जो कि अपनी पूरी पलटन के साथ रहता है. ये जहां भी अमरूदों का वृक्ष देखते हैं वहां भूमि में छेद करके वृक्ष की जड़ों में पहुंच जाते हैं और उसे चूसते हैं. इससे वृक्ष दिन पर दिन सूखने लगता है और उस पर लगे हुए फल सड़-सड़ कर गिरने लगते हैं.

"सियार के यह पूछने पर कि क्या इन कीटों के खत्म करने की कोई दवा नहीं होती, लोमड़ ने बताया था कि वह उसे एक मिश्रण बना कर देगा, जिसे वृक्ष की जड़ों में डालने पर कीट तुरंत मर जाएंगे.

"फिर लोमड़ ने उसी दिन एक मिश्रण तैयार किया और सियार से उसे पेड़ों की जड़ों में छिड़कने के लिए कहा. मिश्रण को पेड़ों की जड़ों में डाले अभी एक दिन ही हुआ था कि अमरूदों का सड़कर गिरना समाप्त हो गया. वृक्ष में पहले जैसा ही हरापन छा गया था." चंदन ने बताया.

"भाई, तुम्हारे वह लोमड़ मित्र कहां हैं? कृपा करके मेरे लिए भी उनसे वही मिश्रण तैयार करा दो." धीरू भालू ने विनय के साथ कहा.

"पर, वह लोमड़ तो यह जंगल छोड़कर बहुत पहले ही जा चुका है—यही कोई एक-डेढ़ साल पहले," चंदन खरगोश ने बताया.

"ओह! क्या तुम्हें उनका पता नहीं मालूम?" धीरू भालू ने उदासी और निराशा से पूछा.

"नहीं, मुझे नहीं मालूम. पर घबराते क्यों हो? उन्होंने वह मिश्रण मेरी ही उपस्थिति में तैयार किया था. मैं उसे स्वयं बना सकता हूं."

"सच कहते हो, चंदन, तुम?" धीरू भालू को विश्वास नहीं हुआ. "तुम मेरे पेड़ों की इस बीमारी को दूर कर सकते हो? भाई, अगर तुमने ऐसा कर दिया, तो मैं तुम्हारा सदैव के लिए कृतज्ञ रहूंगा. मैं इन वृक्षों पर अपना ही नहीं तुम्हारा भी अधिकार मानूंगा. तुम जब चाहोगे, यहां से अमरूद ले जा सकोगे, बल्कि यह कहो कि मैं स्वयं ही भिजवा दिया करूंगा. चंदन भाई, बस जैसे भी हो तुम मेरे पेड़ों को सड़ने से बचा दो. वरना मुझे अपने इतने वर्षों के परिश्रम के व्यर्थ जाने का दुःख सदा सताता रहेगा." यह कहते कहते उसकी आंखें गीली हो आईं.

"ठीक है, मैं कल ही वह मिश्रण तैयार करके तुम्हारे घर दे जाऊंगा," चंदन खरगोश ने सिर हिलाते हुए कहा.

"ओह भाई, तुम कितने अच्छे हो!" धीरू का गला अब भावावेश से भर आया था.

"अच्छा, तो मैं अब चलूं?" चंदन ने आगे बढ़ते हुए कहा.

"कुछ नाश्ता-वाश्ता कर लो, फिर जाना."

"इस समय नहीं, फिर कभी फुरसत से करूंगा."

"जैसी तुम्हारी मर्जी, भाई."

फिर दोनों ने हाथ मिलाए और चंदन खरगोश अपने घर वापस लौट पड़ा.

दूसरे दिन वह अपने वादे के अनुसार हाथ में एक पुड़िया लेकर धीरू भालू के घर पहुंच गया. उसने धीरू को वह पुड़िया सौंप दी. उसमें उसका तैयार किया हुआ मिश्रण था.

अगले दिन की बात है. चंदन खरगोश यह देखने के लिए कि उसके तैयार किए हुए मिश्रण से धीरू भालू के पेड़ों को कोई लाभ हुआ कि नहीं, वह धीरू भालू के घर जाना ही चाहता था कि स्वयं धीरू उसके घर आ पहुंचा. उसके हाथ में एक झोला भी था. वह आते ही चंदन खरगोश से लिपट गया. फिर उसने हाथ में पकड़े हुए झोले को चंदन के हाथों में सौंप दिया. चंदन खरगोश ने देखा कि वह अमरूदों से भरा था.

"भाई, तुम्हारे दिए हुए मिश्रण ने वाकई बड़ा गजब का काम किया. मैंने कल तुम्हारे जाते ही अमरूदों के पेड़ों की जड़ों में वह मिश्रण छिड़क दिया था. आज जब मैं अपने पिछवाड़े पहुंचा, तो उस समय मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा, जब मुझे एक भी सड़ा हुआ अमरूद भूमि में पड़ा नहीं दिखाई दिया. भाई, तुमने मेरे ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है. मैं तो बिलकुल ही निराश हो चुका था." वह क्षण भर को रुका, फिर पुनः बोला, "अच्छा, भाई, मैं इस समय चलूं. पर मैं कुछ मेहमान आए हुए हैं. और हां, मैं अपनी बात नहीं भूला हूं. तुम्हें रोज मैं अमरूद दे जाया करूंगा."

"ठीक है, ठीक है!" चंदन खरगोश ने कहा. दोनों ने पुनः हाथ मिलाए.

धीरू भालू के चले जाने के बाद चंदन खरगोश ने अपने मकान के किवाड़ बंद कर दिए. उसके बाद जैसे वह पलटा, अपनी बीवी को सामने खड़ा पाया.

"धीरू भालू इस झोले में क्या दे गया है?" उसने आश्चर्य से पूछा.

"अमरूद," चंदन ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया.

"अमरूद, और धीरू दे गया! यह भला कैसे संभव हो सकता है, जब कि वह अपने बगीचे का एक छोटा-सा फूल भी देने में कतराता है!" चंदन की बीवी ने आश्चर्य से पूछा.

चंदन खरगोश कुछ नहीं बोला. गोदाम में घुस गया. वहां से उसने एक काठ का बक्सा निकाला और अपनी बीवी के सामने ले जाकर उसका ढकना खोल दिया. बक्से में ढेर सारे सड़े अमरूद भरे थे.

"हाय रे! ये अमरूद कहां से आए?" चंदन की बीवी ने आश्चर्य से उछलते हुए पूछा.

"जहां से भी आए हों, पर इन्हीं सड़े अमरूदों से ये ताजे अमरूद मिले हैं और रोज मिलते रहेंगे."

चंदन की बीवी को अपने पति का यह पहेली-सा उत्तर समझ में नहीं आया. "जरा साफ साफ बताओ, तो मैं भी समझूं," उसने कहा.

छोटी छो

"लो, ये लोग तो
सोचा था कि

चंदन खरगोश हौले से मुस्कुराया. फिर खंखार कर गला साफ करते हुए बोला, "तुम रोज रोज 'अमरूद अमरूद' की रट लगाए थी. मैं तुम्हारी इस रट की उपेक्षा नहीं कर सकता था, लेकिन प्रतिदिन अमरूदों के लिए धन भी खर्च नहीं कर सकता था. अत: मैं सोचने लगा कि कहीं से मुझे कोई ऐसा उपाय सूझ जाए जिससे कि तुम्हें भी रोज अमरूद मिलते रहें और मेरे पैसे भी खर्च होने से बचे रहें. और इसके लिए मुझे भीरू भालू को बलि का बकरा बनाना पड़ा. मुझे याद आया कि उसके पिछवाड़े में अमरूदों के पेड़ हैं. बस मैंने एक चाल खेली. मैं तुरंत बाजार जाकर एक टोकरा भर सड़े हुए अमरूद सस्ते दामों में खरीद लाया. और रोज रात को ढेर सारे अमरूद उसके पिछवाड़े की चहार-दीवारी के बाहर से अमरूदों के पेड़ के नीचे फेंकने लगा. इस तरह मैंने लगातार चार दिनों तक किया.

"ठीक चौथे दिन यानी कि परसों उसके घर उससे मिलने के बहाने जा पहुंचा. जैसा कि मैं जानता था, वह मुझे देखते ही अपने अमरूदों की इस नवीन घटना की गाथा गाएगा. वैसा ही उसने किया. तब मैंने उसे बताया कि यह एक प्रकार की बीमारी है. ऐसी ही बीमारी मेरे एक मित्र सियार के अमरूद के पेड़ों को भी लग गई थी. पर जब मेरे मित्र लोमड़ का दिया हुआ मिश्रण उन पेड़ों की जड़ों में उसने डाला तो पेड़ों की वह बीमारी ठीक हो गई. मैंने उसे आश्वासन दिया कि मैं भी वह मिश्रण बना सकता हूं. मेरे इस आश्वासन पर वह बेहद प्रसन्न हो उठा.

"यह झांसा देकर मैं दूसरे ही दिन उसे अपना बनाया हुआ मिश्रण दे आया. मिश्रण क्या था बस खपरैल के टुकड़ों और चूने का मिला हुआ चूरा. उसने वही अपने पेड़ों की जड़ों में जाकर डाल दिया. इधर मैंने एक काम किया—रात को सड़े हुए अमरूद भीरू के पिछवाड़े में जो फेंकता था, वह कल नहीं फेंके.

"भीरू जब आज अपने पिछवाड़े में गया, तो उसे सड़े हुए अमरूद नहीं मिले. उसे विश्वास हो गया कि यह मेरे मिश्रण की करामात है. वह तुरंत हमारे घर दौड़ा आया और मुझे ये अमरूद दे गया. इसी तरह रोज हमें अमरूद मिला करेंगे. कहो कैसा बनाया मैंने भीरू को मूर्ख?"

"मूर्ख क्यों? 'अप्रैल फूल' कहो!" उसकी बीवी मुस्करा कर बोली.

"वह क्यों?" चंदन खरगोश ने कुछ न समझते हुए कहा.

"वह इसलिए कि यह अप्रैल का महीना है. तुमने इस महीने में भीरू को मूर्ख बनाया है, अत: अप्रैल फूल हुआ कि नहीं?"

चंदन खरगोश खिलखिला कर हंस पड़ा, "अप्रैल फूल! अप्रैल मूर्ख. . .! हो. . हो!"

फिर मियां के साथ-साथ बीवी का भी अट्टहास गूंज उठा. ●

८ साउथ रोड, सिविल लाइंस, इलाहाबाद

छोटी छोटी बातें—— —सिम्स

"लो, ये लोग तो आ पहुंचे जन्म-दिन की पार्टी उड़ाने; सोचा था कि पहली अप्रैल को कौन आएगा!"

"चलो, यह भी अच्छा हुआ. मियां की जूती मियां के सिर पड़ी! बच्चू, अब तुम्हीं 'अप्रैल फूल' बने!

पहाड़ियों से उतरता हुआ घना अंधकार पूना शहर पर छा गया है. महाराष्ट्र केसरी शिवाजी महाराज अपने महल में, अपने पलंग पर सो रहे हैं. अंदर-बाहर सर्वत्र मराठा सिपाही नंगी तलवार लिये पहरा दे रहे हैं. कहीं भी, कोई भी आवाज नहीं सुनाई दे रही है.

शिवाजी के शयन-कक्ष का पहरा उनके खास सेनापति तानाजी दे रहे हैं. शयन-कक्ष में अंधेरा है, किंतु खिड़कियों से हल्का-हल्का प्रकाश अंदर आ रहा है. तभी शिवाजी के पलंग के नीचे कुछ खड़खड़ाहट हुई.

तुरंत शिवाजी उठकर खड़े गए. इस खड़खड़ाहट को सुन तानाजी भी अंदर चले आए. और दोनों ने देखा—पलंग के नीचे एक छोटा बालक हाथ में नंगी तलवार लिये लेटा है. तानाजी और शिवाजी दोनों को खड़े देख, वह पलंग के नीचे से बाहर आ गया.

अन्य दूसरे सेवकों ने रोशनी जलाई. रोशनी के तेज प्रकाश में वह बालक मुंह नीचा किए खड़ा है. उसके हाथ में नंगी तलवार ज्यों की त्यों है.

तानाजी बोल उठे, "लड़के! तलवार लेकर महाराज को मारने आए थे?"

लड़के ने धीरे से पलकें उठाकर कहा, "हां!"

"क्यों, बेटा, मैंने तुम्हारा क्या अपराध किया था?" शिवाजी बोले.

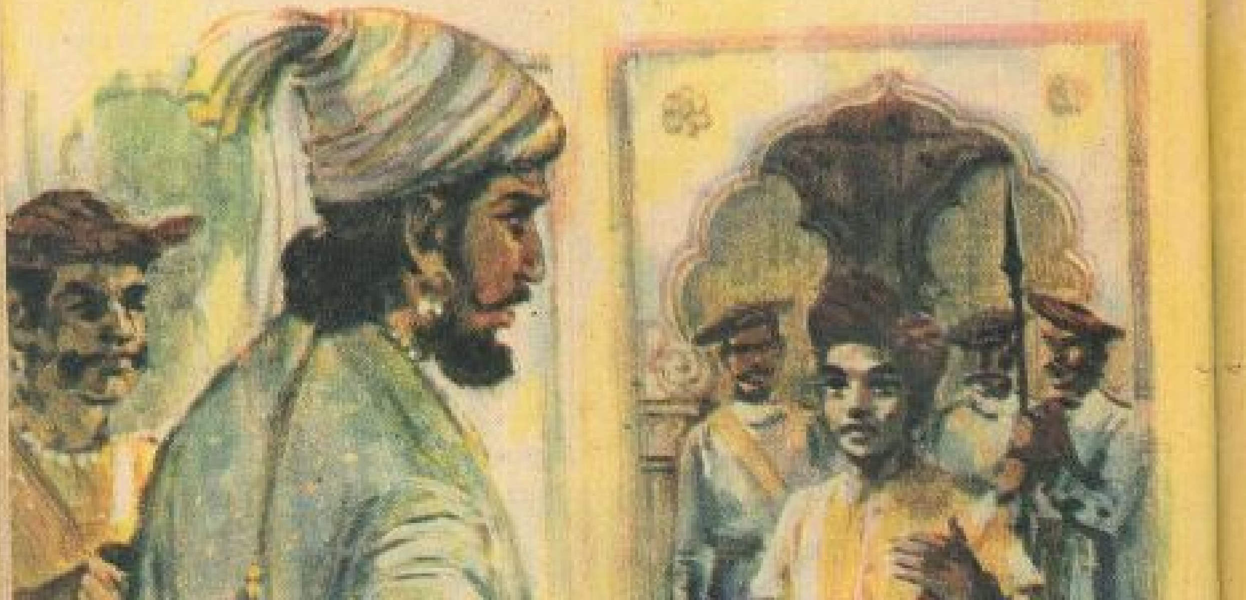

इस स्नेहभरे
हाथ की तलवार
गई. उसने याचना
कर कहा, "कुछ
"तब पलंग के
"कहां? किस
"हां, बेटा,
बच्चे कभी झूठ न
"मेरी एक
"पिता?"
"पिता नहीं
हैं. कुछ भी खाना
हैं. कोई धंधा भी
अचानक आपका
मेरी हालत जान
सुधारनी है?'
"मैंने कहा,
बालक जरा
तानाजी रात के
उसकी बात सुन
"हां, बेटा,
बालक से आगे की
"फिर, महा
जीवन भर की
मिल सकता है, य
"मैंने कहा,
कहें वह काम कर
'आज रात चाहे
उनका सिर उड़ा
रात के अंध
तानाजी की आं
दारों के हाथ तल

कहानी

क

शिवाजी बोले,
"मैंने सिर
यह धरती पर
महल के गुप्त
आपके पलंग
यहां तक लुकरा

कहानी

वचन

— गोपालदास नागर

इस स्नेहभरे संबोधन से बालक पिघल गया. उसके हाथ की तलवार 'खनन्-खनन्' करती धरती पर गिर गई. उसने याचनापूर्ण चेहरे से शिवाजी की तरफ देख-कर कहा, "कुछ भी नहीं, महाराज!"

"तब पलंग के नीचे छिपकर मुझे मारने का कारण?"

"कहूं? विश्वास करेंगे, महाराज?"

"हां, बेटा, कहो. विश्वास करूंगा. महाराष्ट्र के बच्चे कभी झूठ नहीं बोलते."

"मेरी एक मां है..."

"पिता?"

"पिता नहीं है. मेरी मां और मैं चार दिनों से भूखे हैं. कुछ भी खाना नहीं मिला है. पहनने को वस्त्र भी नहीं हैं. कोई धंधा भी नहीं है. मां दुःख से पीड़ित थी. तभी अचानक आपका दुश्मन सुभगराय मुझे मिला. उसने मेरी हालत जानकर मुझसे कहा, 'लड़के, अपनी हालत सुधारनी है?'

"मैंने कहा, ऐसी हालत भला किसे पसंद होगी?"

बालक जरा देर रुका. सामने ही शिवाजी और तानाजी रात के निस्तब्ध वातावरण में स्थिर खड़े उसकी बात सुन रहे हैं.

"हां, बेटा, फिर?" शिवाजी महाराज ने उस बालक से आगे की बात जानने के उद्देश्य से पूछा.

"फिर, महाराज, सुभगराय ने मुझसे कहा, 'तुम्हारे जीवन भर की दरिद्रता मिट जाए—इतना धन तुम्हें मिल सकता है, यदि एक काम तुमसे हो सके, तो?'

"मैंने कहा, 'भूख का दुःख सहन नहीं होता, आप कहें वह काम करूंगा.' इस पर उसने धीरे से कान में कहा, 'आज रात चाहे जैसे भी शिवाजी के महल में घुसकर, उनका सिर उड़ा दो'."

रात के अंधकार में बालक के ये शब्द भयंकर लगे. तानाजी की आंखें विस्मय से फटी की फटी रह गईं. चौकी-दारों के हाथ तलवारों पर चले गए. पर तभी शांतिपूर्वक शिवाजी बोले, "फिर, बेटा, आगे कहो."

"मैंने सिर हिलाकर स्वीकार किया और सुभगरायने यह धरती पर पड़ी तलवार मेरे हाथ में दी और आपके महल के गुप्त रास्तों का, आपके शयन-कक्ष का और आपके पलंग का वर्णन किया, जिसके आधार पर मैं यहां तक लुकता-छिपता आ पहुंचा. फिर जो हुआ वह आपके सामने ही है. अब मैं जानता हूं कि मुझे मौत की सजा होने वाली है." और फिर कुछ रुक कर वह बोला, "किंतु, महाराज, मेरी एक इच्छा है. मरने से पूर्व अपनी भूखी मां का अंतिम बार मुख देखना चाहता हूं."

शिवाजी महाराज फौरन तेजी से कदम उठाकर उस बालक के करीब पहुंचे और बोले, "बेटा, सत्य पर टिके रहने और सत्य बोलने की तुम्हारी भावना से मेरे हृदय में बहुत खुशी हुई है और उसे सुख मिला है. ऐसी प्रजा के हाथों में मेरा देश अधिक सुरक्षित रहेगा. जाओ, बेटा, जाओ, अपनी मां से खुशी से मिलो." और उन्होंने उसे पांच अशर्फियां भी दिलवाईं.

बालक ने शिवाजी महाराज को झुककर प्रणाम किया और वह तलवार वहीं छोड़कर चला गया.

दूसरे दिन शिवाजी महाराज दरबार में बैठे थे, तभी दरबान ने आकर समाचार दिया : "महाराज, एक स्त्री और बालक आपसे मिलने आए हैं."

रात की घटना को तब तक शिवाजी भूल चुके थे. बोले, "दोनों को अंदर आने दो."

पहरेदार मां-बेटे दोनों को अंदर ले आया.

दृष्टि बालक पर पड़ते ही शिवाजी को रात की बात याद हो आई. उन्होंने बालक से पूछा, "क्यों, बेटे, अब क्या बात है?"

"क्यों, भूल गए? रात को मैंने अपनी मां का मुख देखने के बाद मौत की सजा पाने के लिए वापस आने का वचन दिया था न?"

शिवाजी को सारा प्रसंग याद हो आया. मौत के लिए भी वचन का पालन करने वाले इस बालक को देख उनकी छाती गज-गज भर फूल उठी.

"तुम्हें मौत का डर नहीं है?"

"नहीं, महाराज! अब मुझे मौत की सजा दें. मैं इसी सजा के योग्य हूं."

"हां, महाराज! आप जैसे देश-सेवक पर हमला करने वाला मेरा पुत्र मौत की सजा के योग्य ही है." अब उसकी मां ने शिवाजी के सामने माथा झुकाकर कहा.

"मां! मां! ऐसे सत्यप्रिय और निर्भय बालक ही इस देश की शोभा हैं. इसे मौत की क्या, हलकी चपत लगाने की सजा भी नहीं दी जा सकती. इसे मैं माफ करता हूं." और फिर तुरंत तानाजी की तरफ देखकर बोले, "सेनापति जी, इस बालक को इसी समय से सेना में भरती कर शिक्षा की व्यवस्था करें. यह बड़ा होगा तब देश की शान बढ़ाएगा और वीर कहलाएगा."

बालक हाथ जोड़ शिवाजी के पैरों पर गिर पड़ा.

२६ । १६ ए, चौखंबा, वाराणसी-१

आखिरी रात. . .(पृष्ठ ३१ से आगे)

मनुष्य भूख से तड़पकर मर जाएं, उससे पहले मैं स्वयं मर जाना पसंद करूंगा."

तो क्या अपने इन तुच्छ प्राणों का मोह करके वह अपने देश के इतने प्रिय राजा का ऐसा सर्वनाश होते देखेगा? प्रजा का इतना अहित करेगा?

और किरपालसिंह जैसे दो टुकड़ों में बंट गया—एक अच्छा किरपालसिंह, एक बुरा किरपालसिंह.

अच्छा कहता—'जिस राजा ने प्रजा के लिए अपना सुख-दुख नहीं समझा, उसको बचाना ही चाहिए.'

बुरा कहता—'चुपचाप भाग चलो, क्यों मौत को बुलावा देते हो?'

फिर अच्छा समझाता—'मौत तो एक दिन आनी ही है. जीवन भर पाप और अपयश कमाया है; एक पुण्य-कार्य से जन्म-जन्मांतर के पाप धुल जाएंगे.'

बुरा तुरंत डपट देता—'जाओ जाओ, इस जन्म के सारे सुख ठुकराकर, अगले जन्म की बात मत करो.'

और अच्छे किरपालसिंह और बुरे किरपालसिंह के इस युद्ध में रात हो गई. पर हार किसी ने न मानी.

अब किरपालसिंह को जोर की भूख लगने लगी. वह उठा और धीरे से बाहर निकल आया. दूर से उसने देखा, हजारों लोग पंगत में बैठकर छत्तीसों व्यंजनों का मजा ले रहे हैं. नाना प्रकार के पकवानों की सुगंध नथुनों में घुस कर उसके पेट में और अधिक उत्पात मचाने लगी.

लुकते-छिपते वह और आगे बढ़ा. देखा, महाराज सुमनसिंह स्वयं इधर-उधर फिर-फिरकर, आदेश दे-देकर सामान मंगवा रहे हैं और जबरदस्ती लोगों के मना करने पर भी भोजन-सामग्री बांट रहे हैं.

हूं! एक उधर जबरदस्ती भोजन परसा जा रहा है, एक वह इधर भूखों मर रहा है. उसका जी चाहा कि उसी रूप में आगे बढ़कर राजा के आगे हाथ फैला दे.

किंतु अंदर का चोर घुड़क देता, कि इस रूप में, इस वेश में जाकर लोगों के आकर्षण का केंद्र बनने से अधिक मूर्खता और नहीं होगी.

और वह वहीं बुर्ज से सटा खड़ा रह गया.

लोग खा-पी चुके, तो बड़ी-सी खुली छत पर महाराज, मंत्रीगण और राज-परिवार के लोग भोजन करने बैठे.

वे लोग खाते जा रहे थे और हंसते जा रहे थे. बातें और हंसी-मजाकें. वहीं उसने देखा कि राजा की दाहिनी ओर उनका चचेरा भाई सुंदरराव भी बैठा है और दोनों बड़े प्रेमपूर्वक हंस-हंसकर बातें कर रहे हैं.

ओफ! तो मौत राजा के सामने ही नहीं आने वाली है, दाहिने भी बैठी है!

बाईं ओर नन्हा राजकुमार महारानी के साथ बैठा था. मां के रोकने पर भी वह स्वयं थाल में हाथ डाल-डालकर भोजन सामग्री बिखरा देता था. फिर भी रानी प्रसन्न थी और राजा ठहाके लगाकर हंस रहा था.

किरपालसिंह की आंखों से दो बूंद आंसू चू पड़े. उसे स्वयं आश्चर्य हुआ. आज ये आंसू कैसे? इतना कठोर हृदय का वह. . . उसका तो जब बाप मरा था, तब भी वह रोया नहीं था. आज राजा, रानी और फूल जैसे नन्हे राजकुमार के प्रति यह स्नेह, यह ममता!

हां, बुराई के प्रति बुराई कठोर रहती है. फिर चाहे बुराई के रूप में बाप ही क्यों न हो.

और अच्छाई की ओर ही सदा ममत्व झुकता है. राजा दुष्ट होता, तो यह आंसू न आते.

अच्छे किरपालसिंह ने घबड़ाकर आगे बढ़कर राजा के सामने जाने के लिए कदम उठाया कि बुरे किरपालसिंह ने जैसे गले में फांसी का फंदा कस दिया. कदम वहीं के वहीं रुक गए.

और तभी उसने सांस रोककर देखा कि सबको सुगंधित खीर के पात्र दिए जा रहे हैं.

सोलह श्रृंगार किए एक सुंदरी दासी ने राजा, रानी, राजकुमार तथा आसपास के कई लोगों के आगे खीर के पात्र रख दिए.

किरपालसिंह एक ओर दुबका हुआ सांस रोके सब देख रहा था, वह चोर था, किंतु उसने हत्या कभी न की थी. और उसकी जानकारी में इस प्रकार ये हत्याएं हो रही हैं! उसे लगने लगा कि वह स्वयं भी इस हत्याकांड का साझीदार है. वह परेशान था, किंतु बुरा किरपालसिंह उसके हाथ-पांव कसकर जकड़े था.

अन्य लोगों के साथ महाराज ने भी खीर का पात्र हाथ में उठा लिया.

बुरा किरपालसिंह भी सहम गया और उसकी जकड़ शिथिल हो गई, कि अच्छा किरपालसिंह कूदकर महाराज के सामने आ गया— "ठहरो!"

सबके हाथ जहां-के-तहां रुक गए. सबके सामने एक बेहद गंदा, घिनौना व्यक्ति खड़ा था.

कई लोगों के हाथ अपनी तलवारों पर चले गए. महाराज ने अपना खीर का पात्र नीचे धर दिया.

"कौन हो तुम! यहां क्या कर रहे हो?" महाराज गरजे.

kissekahani.com

सहमकर उसने देखा, सुंदरराय ने अपनी म्यान से आधी से अधिक तलवार खींच ली है. उसकी समझ में ही नहीं आया कि सुंदरराय ने वह तलवार राजा को मारने को खींची है या स्वयं किरपालसिंह को.

किसी के लिए भी हो. . . वह किसी की मौत नहीं चाहता. भय से वह थर-थर कांपने लगा.

उसकी दृष्टि का अनुसरण कर राजा ने सुंदरराय की खिंची तलवार को देखा.

अचानक महाराज को लगा कि यह आनेवाला घिनौना व्यक्ति कोई पागल है, जो यहां चला आया है.

बड़े स्नेह से राजा ने उससे पूछा, "क्या चाहते हो तुम? . . . भूख लगी है?"

किरपालसिंह क्षण भर वैसे ही खड़ा रहा. अचानक उसको जिंदगी का एक बहुत बड़ा मजाक सूझा. उसने हाथ जोड़कर राजा से कहा, "महाराज, आज राजकुमार के जन्म-दिन पर जिसने जो चाहा, सो पाया. . .एक प्रार्थना इस भिखारी की भी है."

"कहो, क्या है?" राजा ने मुस्करा कर कहा.

"आप. . . आप सभी लोग जितने भी यहां बैठे हैं, अपने अपने खीर के पात्रों को अदल-बदल कर खीर खाएं. जैसे आप अपना पात्र श्रीमंत सुंदरराय से, महारानी जी राजकुमार से और. . और. . ." उसने अपनी दृष्टि सुंदरराय पर टिका दी.

कैसी अद्भुत प्रार्थना थी! मांगने वाले ने अपने लिए कुछ भी न मांगा था. कुछ लोग भुनभुनाए भी. पर राजा ने हंसकर अपना खीर का पात्र उठाकर सुंदरराय के सामने रख दिया और स्वयं उसका उठा लिया.

"यदि इसकी तृप्ति इसी में है और हमारा कुछ नहीं बिगड़ता, तो क्या हानि है!" कहकर उन्होंने फिर खीर का पात्र मुंह की ओर बढ़ाया. सुंदरराय खीर का पात्र ज्यों-का-त्यों रखे बैठा, किरपालसिंह की ओर आग्नेय नेत्रों से देख रहा था.

अचानक एक चीख से सारा भवन गूंज उठा. राजा के हाथ का पात्र छूटते छूटते बचा. तभी खीर परोसने वाली दासी ने महाराज के हाथ से खीर का पात्र छीनकर झट से दूर फेंक दिया और रोती हुई, पागलों की भांति वहीं लोटने लगी.

रहस्य इतना उलझ चुका था कि लोग बौखला गए थे. पर सबसे अधिक बौखला गया किरपालसिंह, जो कभी महाराज की ओर देखता, कभी धरती पर लोटती दासी की ओर कभी सुंदरराय को.

परंतु सुंदरराय के सम्मुख सब स्पष्ट हो गया था. उसने वहां से खिसकने में ही हित समझा.

पर किरपालसिंह सजग था. झपटकर उसने सुंदरराय को दबोच लिया. पूरे भवन में हंगामा मच गया.

तब दासी ने उठकर बताया कि किस प्रकार पटरानी बनाने का लोभ देकर सुंदरराय ने महाराज के खीर के पात्र में विष मिलाने का षड्यंत्र किया था. पर दासी के हृदय ने अपने महाराज, महारानी और फूल से शिशु की हत्या करने की गवाही नहीं दी.

आग्नेय नेत्रों से उसने सुंदरराय की ओर देखकर कहा, "महाराज, यह आपका चचेरा भाई है, आपको प्रिय है. आज इसकी बात न सुनूं, तो यह मुझे भी मरवा सकता है. कल यह फिर कोई दूसरा षड्यंत्र रचेगा. इसी कारण वह विष मैंने इन्हीं सुंदरराय के पात्र में मिला दिया था. . . पर. . . इस भिखमंगे ने!"

"ओह, तो यह माजरा है. . ." राजा ने चैन की सांस ली. "इसका सबूत?"

सबूत देने के लिए किरपालसिंह की कहानी भी थी. और मोहिनी दासी की उंगली में पड़ी हीरे की अंगूठी भी.

सुंदरराय तब तक बंदी बना लिया गया था.

बुरा किरपालसिंह अच्छे किरपालसिंह को कोंच रहा था—बड़ा तीर मार लिया तूने बीच में कूदकर! मजे से खड़े खड़े सुंदरराय को मरते देखते! अब भुगतो!

अच्छा किरपालसिंह फिर भी सीना ताने खड़ा था. पर बुरे किरपालसिंह में तो जैसे खड़े रहने की भी शक्ति न रही थी.

बंदी सुंदरराय को कुछ लोग एक ओर ले गए और राजा के इशारे पर किरपालसिंह को कुछ अन्य लोग बिल्कुल विपरीत दिशा में.

क्यों? . . . सुगंधित-कक्ष में स्वादिष्ट भोजन कराने के लिए, अब उसे भूख भी तो जोरों से लग आई थी न! ●

६ डी नेहरू रोड, सदर बाजार, लखनऊ (उ. प्र.).

मई अंक के आकर्षण

नौ सरस कहानियां

भूतों का इंस्पेक्टर	:	मस्तराम कपूर
मनोज घूम होता है	:	विद्वान् के. नारायणन्
आंसुओं का घड़ा	:	मंगरूराम मिश्र
आ, ततैया, मुझे काट	:	विजयलक्ष्मी
कान पकड़ती हूं	:	शीला इंद्र
इज्जत की चोरी	:	राजेशकुमार जैन
अपनी खोज करो	:	गोपालदास नागर
चतुराई	:	रेवा दास
मेंढकों का राजा	:	सावित्रीदेवी वर्मा

धारावाही 'स्पाई थ्रिलर'

डबल सीक्रेट एजेंट ००१।२ (पांचवीं किस्त): चंदर

अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लीजिए.

१९६८ के विशेष डाक-टिकट

— गजराज जैन

प्रिय मित्रो, १९६९ का वर्ष हमारे लिए २१ विशेष टिकटों का उपहार ले कर आएगा, तब तक हमें १९६८ के २३ विशेष टिकटों को अपनी संग्रह-पुस्तिका में क्रम से लगा लेना चाहिए. आजादी के बाद से १९६८ के अंत तक कुल १९८ विशेष टिकट निकल चुके हैं, जिनमें सबसे अधिक १९६८ में ही निकले हैं. जिन अवसरों पर इनका प्रकाशन किया गया उनका संक्षिप्त परिचय यहां दिया जा रहा है :

१५ मई १९६८ से डाक दरों में भारी परिवर्तन हुआ. इसलिए इस तारीख के पहले के विशेष टिकट १५ पैसे मूल्य के और बाद वाले टिकट २० पैसे मूल्य वाले हैं. इस गड़बड़ी के कारण अप्रैल, मई और जून—इन महीनों में कोई विशेष टिकट जारी नहीं किया जा सका.

इस वर्ष का सबसे पहला विशेष टिकट पहली जनवरी '६८ को 'मानवाधिकार वर्ष' की स्मृति में निकाला गया. संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने २० वर्ष पहले १० दिसंबर १९४८ को मानव अधिकारों की विश्व-व्यापी घोषणा को स्वीकार किया था. संसार भर में यह वर्ष 'मानवाधिकार वर्ष' के रूप में मनाया गया. गहरे हरे रंग के इस टिकट पर ग्लोब के चारों ओर मनुष्यों को एक दूसरे का हाथ पकड़े दिखाया गया है (चित्र नं. १२).

इस वर्ष का दूसरा विशेष टिकट 'द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय तमिल अध्ययन संगोष्ठी' के अवसर पर दिनांक ३ जनवरी १९६८ को निकाला गया. यह सम्मेलन मद्रास में ३ जनवरी से १० जनवरी तक हुआ जिसमें देश-विदेश के लगभग ४०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया. बैंगनी रंग में छपे इस टिकट पर 'तिरुकुरल', ग्लोब एवं मंदिर का गोपुरम् अंकित है (चित्र ७).

द्वितीय संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन नई दिल्ली में पहली फरवरी से २८ मार्च तक वाणिज्य मंत्री श्री दिनेशसिंह की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें ११८ देशों के १६०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया. मैले नीले रंग के इस टिकट पर संयुक्त राष्ट्र का चिह्न एवं जहाज तथा वायुयान अंकित हैं. यह टिकट पहली फरवरी को जारी किया गया (चित्र ४).

कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले समाचार-पत्र 'अमृत बाजार पत्रिका' की शताब्दी के अवसर पर २० फरवरी '६८ को जो विशेष टिकट निकाला गया, वह सुनहरे पीले और भूरे रंग में छापा गया जिस पर पत्रिका का शताब्दी चिह्न 'धनुष और पंख' अंकित है (चित्र २).

रूस के महान क्रांतिकारी लेखक मैक्सिम गोर्की की जन्म-शताब्दी के अवसर पर हमारे डाक विभाग ने २८ मार्च '६८ को जो विशेष टिकट जारी किया उस पर बैंगनी भूरे रंग में गोर्की का चित्र अंकित है. अनेक प्रगतिवादी लेखकों को प्रेरणा देने वाले गोर्की जीवन भर कहानियां, उपन्यास, नाटक व आत्मकथा लिखते रहे. उनका देहांत सन् १९३६ में हुआ (चित्र ९).

भारतीय ललित कला अकादमी ने नई दिल्ली में १० फरवरी से ३१ मार्च तक प्रथम त्रैवार्षिक कला-प्रदर्शनी का आयोजन किया. इसमें ३२ देशों के चुने हुए कलाकारों की ग्राफिक कृतियां, चित्र एवं मूर्तियां प्रदर्शित की गईं. इसके अंतिम दिन जो विशेष टिकट छापा गया उस पर नीले और नारंगी रंगों में एक गोला और प्रदर्शनी का प्रतीक चिह्न अंकित है (चित्र ८).

पहली जुलाई '६८ को ब्रह्मपुर चौरास्ता (बिहार) में केंद्रीय संचार मंत्री डा. रामसुभगसिंह ने देश के एक लाखवें डाकघर का उद्घाटन किया. इस अवसर पर प्रकाशित नीले और लाल रंग के टिकट पर 'पोस्ट बाक्स' का चित्र अंकित है (चित्र १०).

खेती के क्षेत्र में सुधरे बीजों एवं वैज्ञानिक साधनों के कारण १९६७-६८ में लगभग १६० लाख टन गेहूं पैदा हुआ. पैदावार में हुई इस क्रांति की स्मृति में १७ जुलाई १९६८ को जो विशेष टिकट निकाला गया उसका रंग हरा और भगवा है. इस पर गेहूं की बालियां, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान तथा १९५१ और १९६८ के गेहूं उत्पादन का तुलनात्मक रेखाचित्र अंकित है (चित्र १३)

प्रसिद्ध चित्रकार गगनेंद्रनाथ ठाकुर की १०१ वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में १७ सितंबर '६८ को जो गहरे पीले और लाल बैंगनी रंग का टिकट निकाला गया, उसपर स्वर्गीय ठाकुर का छाया चित्र अंकित है. श्री रवींद्रनाथ ठाकुर के भांजे इस कलाकार का जन्म १८ सितंबर १८६७ में हुआ था. इस महान कलाचार्य का देहांत सन् १९३८ में हुआ (चित्र १७).

विख्यात असमिया साहित्यकार श्री लक्ष्मीनाथ बेज बरुआ की जन्म शताब्दी के अवसर पर दिनांक ५ अक्तूबर '६८ को गहरे भूरे रंग का टिकट निकाला गया जिस पर उनका चित्र अंकित है. श्री बेज बरुआ का जन्म ५ अक्तूबर १८६८ को हुआ था. नाटक, कहानी, कविता के रचनाकार श्री बेज बरुआ को अपनी हास्य-व्यंग्य-पूर्ण रचनाओं के लिए १९२३ में 'रसराज' की उपाधि दी गई. इस साहित्य महारथी का देहांत ७० वर्ष की

दिनांक १९ अक्तूबर '६८ को निकाला गया. सरदार भगतसिंह का जन्म सन् १९०७ में पंजाब के विख्यात देशभक्त परिवार में हुआ. शिक्षा समाप्त कर आपने विदेशी नौकरशाही को खत्म करने के लिए हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी का गठन किया. साइमन कमीशन का बहिष्कार करने वाले लाला लाजपतराय पर लाठी चलाने वाले कैप्टन सांडर्स और सरदार चाननसिंह को गोली से उड़ाने और विधान सभा भवन में बम फेंकने के अपराध में सरदार भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को २३ मार्च १९३१ को फांसी दे दी गई. इस प्रकार सोए हुए देश को जगाने वाला यह तरुण क्रांतिकारी असमय में ही शहीद हो गया (चित्र १४).

नेता जी सुभाषचंद्र बोस ने भारत की आजादी के लिए सशस्त्र आजाद हिंद सेना का गठन किया और २१ अक्तूबर '४३ को सिंगापुर में अस्थायी आजाद हिंद सरकार की स्थापना की. इस सरकार को नौ विदेशी सरकारों ने मान्यता भी दे दी थी, परंतु जापान के अचानक पतन के कारण पासा पलट गया. इस महान ऐतिहासिक घटना की २५ वीं वर्षगांठ के अवसर पर २१ अक्तूबर को गहरे नीले रंग का जो टिकट निकाला गया है, उसपर आजाद हिंद सरकार के झंडे के नीचे सुभाषचंद्र बोस को आजाद हिंद सरकार की स्थापना का घोषणा-पत्र पढ़ते हुए दिखाया गया है. अपनी आजाद हिंद सरकार के लिए नेता जी द्वारा छपाए गए विशेष टिकटों का वर्णन 'पराग' के जनवरी '६५ अंक में तुम पढ़ ही चुके हो (चित्र १६).

भगिनी निवेदिता की जन्म-शताब्दी के अवसर पर दिनांक २७ अक्तूबर '६८ को हरे रंग का टिकट निकाला गया, जिस पर कुमारी निवेदिता का चित्र अंकित है. निवेदिता का वास्तविक नाम मार्गरेट ई. नोबल था. इनका जन्म २८ अक्तूबर १८६७ को उत्तरी आयरलैंड में हुआ. स्वामी विवेकानंद के प्रवचनों से प्रभावित होकर आप उनकी शिष्या बन गई और १८९८ में भारत चली आई. पूरी तरह भारतीयता को अपना कर आप जीवन भर नारी शिक्षा एवं रामकृष्ण मिशन का काम करती रहीं. भारत के आध्यात्मिक एवं राजनैतिक जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाली इस महान नारी का देहांत १३ अक्तूबर १९११ को हुआ (चित्र १९).

विश्व विख्यात वैज्ञानिक महिला मेरी क्यूरी की जन्म-शताब्दी के अवसर पर भारतीय डाक विभाग ने बैंगनी रंग का टिकट जारी किया, जिसके आधे भाग में मेरी क्यूरी का चित्र और आधे में क्यूरी द्वारा आविष्कृत रैडियम द्वारा रोगी की चिकित्सा का चित्र अंकित है. मेरी स्कलोडोवस्का का जन्म ७ नवंबर १८६७ में पोलैंड में हुआ. साधनों के अभाव के कारण मेरी क्यूरी को अपने पति पियरे क्यूरी के साथ भारी कठिनाइयों में अपनी वैज्ञानिक खोज का काम करना पड़ा. वह संसार की एक मात्र महिला थीं जिन्हें रेडियम व रेडियो सक्रियता की खोज के लिए विश्व विख्यात नोबल पुरस्कार दो बार मिला. बाद में इनकी पुत्री आईरेने को भी कृत्रिम रेडियो-सक्रियता की खोज के लिए सन् १९३४ में यह पुरस्कार मिला. इसके बाद शीघ्र ही मैडम क्यूरी का देहांत हो गया (चित्र ६).

अंतर्राष्ट्रीय भौगोलिक कांग्रेस का २१ वां अधिवेशन पहली दिसंबर से ८ दिसंबर तक नई दिल्ली के विज्ञान भवन में डा. शिवप्रसाद चटर्जी की अध्यक्षता में हुआ. इसमें ७१ देशों के लगभग १६०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया. इसके पश्चात् ९ से २३ दिसंबर तक इसके सदस्यों ने देश के विभिन्न नगरों में भ्रमण करते हुए १७ बैठकों और २४ विचार गोष्ठियों में भाग लिया. इस महत्वपूर्ण अवसर पर दिनांक पहली दिसंबर '६८ को जो विशेष टिकट जारी किया गया, वह नीले रंग का है और उसपर इस संस्था का प्रतीक चिह्न ग्लोब अंकित है (चित्र ११).

कोचीन स्थित यहूदियों के उपासना-गृह कोचीन सिनागोग के चौथे शताब्दी समारोह के अवसर पर १५ दिसंबर '६८ को एक विशेष टिकट जारी किया गया, जिसपर उपासना-गृह के भीतरी भाग का दृश्य लाल रंग में अंकित है (चित्र १८).

दिनांक १५ दिसंबर '६८ को ही दूसरा विशेष टिकट नौ सेना दिवस पर जारी किया गया है. इसपर मझगांव डॉक लिमिटेड द्वारा निर्मित पहले युद्धपोत आई. एन. एस. नीलगिरी का चित्र अंकित है. इसका जलावतरण २३ अक्तूबर '६८ को प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने किया था (चित्र १५).

वर्ष के अंतिम दिन अर्थात् ३१ दिसंबर '६८ को अचानक चार भारतीय पक्षियों के चित्र वाली टिकट माला निकाल कर डाक विभाग ने संग्रह-कर्ताओं को प्रसन्न एवं चकित कर दिया. इस माला का पहला टिकट २० पैसे मूल्य का है और इस पर बैंगनी व लाल रंग में पवित्र पक्षी नीलकंठ का चित्र है. दूसरा टिकट ५० पैसे का है और इस पर लाल व काले रंग में कठफोड़वा का चित्र है. तीसरा एक रुपये वाला नीला व केसरिया टिकट टिटहरी के चित्र से युक्त है. और चौथा टिकट दो रुपये मूल्य का है जिस पर लाल व हरे रंग में शक्करखोरे का चित्र अंकित है (चित्र २०, २१, २२, २३).

इन २३ विशेष टिकटों के अलावा प्रचलित सामान्य टिकट माला के दो और टिकट इस वर्ष निकाले गए. पहला टिकट ४ पैसे वाला १५ मई १९६८ को डाकदरों में परिवर्तन हो जाने से पोस्ट कार्डों पर लगाने के लिए छापा गया. गेरुआ रंग के इस टिकट पर 'काफी फल' दिखाए गए हैं. दूसरा टिकट २ अक्तूबर को कलकत्ता के बड़े डाकघर की शताब्दी के अवसर पर निकाला गया." ४० पैसेवाले इस गहरे बैंगनी टिकट पर डाक घर की इमारत का चित्र अंकित है. ●

हिंदी विभाग राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)

ट्विस्ट

बहुत दिनों के बाद मौज में
चूहे मामा आए,
बोले, "देखो 'ट्विस्ट' हमारा,
क्या कमाल दिखलाए!"

तभी पैर फिसला मामा का,
आई पग में मोच,
उठ कर बोले, "अब न रहा वो
पहले जैसा लोच!"

—शाहिद अब्बास अब्बासी

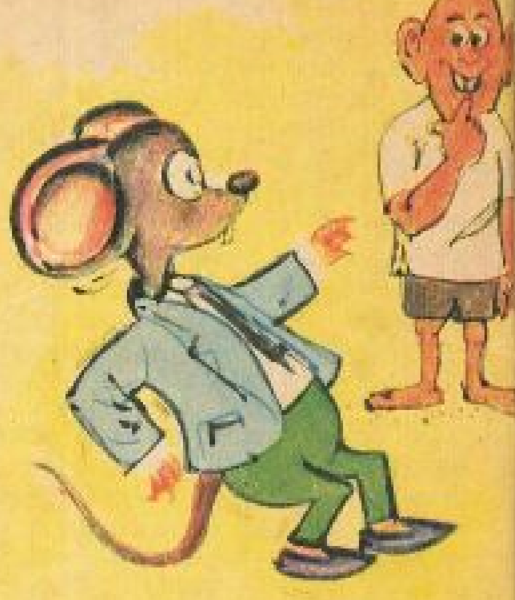

पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु गीत दिए जा रहे हैं. इन शिशु गीतों के चयन में बड़ी सावधानी बरती जाती है. क्योंकि शुद्ध शिशु गीत लिखना उतना आसान नहीं है जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं. ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चार से छह साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें. इन से मुहावरेदार हिंदी सरलता से जबान पर चढ़ जाती है.

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

टक्कर

गधा साइकिल पर चढ़ निकला,
घोड़ा ले कर कार,
बंदर को कुछ भी न मिला तो
ट्रक पर हुआ सवार!

चौराहे पर पहुंच सभी में,
हुई जोर की टक्कर!
घोड़ा, बंदर दोनों भागे,
गधा मर गया दबकर!

—मंगलराम मिश्र

बंदर से
आते ही
बंदर ने
शक्कर

बिल्ली
चूहे स
मन ही
झपटी

गुड़ की चाय

बंदर से मिलने को आए,
भालू और सियार;
आते ही दोनों ने पूछा —
"कहो हाल क्या, यार!"

बंदर ने तब दुखड़ा रोया—
"हाल बुरा है, हाय!
शक्कर पर 'कंट्रोल' लगा है,
गुड़ की पीता चाय!"

—करनजीतसिंह सरन

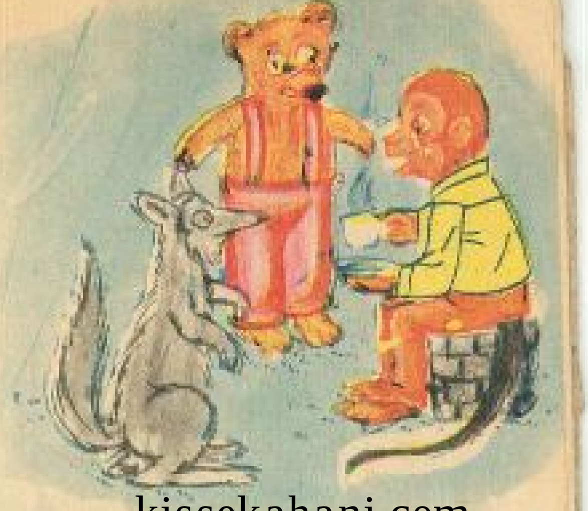

kissekahani.com

सीता की खोज

सोच सोच कर पप्पू हारा,
मगर नहीं कुछ सूझा,
आखिर जा अपने पापा से
उसी प्रश्न को बूझा :

"जरा बताओ तो, पापा जी,
भला कौन थी सीता?"
पापा बोले, "अभी बताता,
ला तो भगवद्गीता!"

—यादराम 'रसेंद्र'

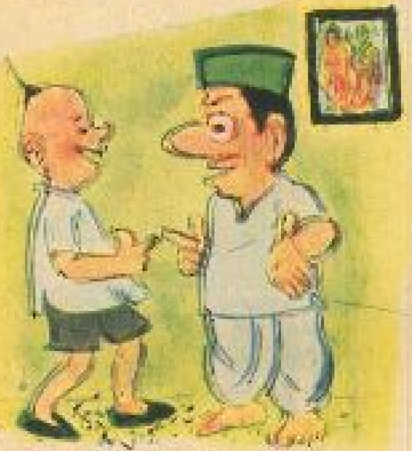

kissekahani.com

बिल्ली का सपना

बिल्ली ने सपने में देखा :
प्रभु ने दी बख्शीश;
चूहे सब गिनती में निकले,
ठीक चार-सौ-बीस!

मन ही मन वह लगी सोचने,
आज हुए पौ-बारह!
झपटी तो पाया कि हो चुके
चूहे नौ-दो-ग्यारह!

—नारायणलाल परमार

क्रिकेट खेलने का "सही तरीक़ा" यह है....
और दाँतों की रक्षा का सही तरीक़ा — फ़ोरहन्स

हर बच्चे के जीवन में एक ऐसा समय आता है जब वह हर काम सही तरीक़े से करना चाहता है। उसे दाँतों की उचित देखभाल सिखाने का भी यही समय है.... फ़ोरहन्स से।

फ़ोरहन्स टूथपेस्ट मसूढ़ों की तकलीफ़ों और दंत-क्षय को रोकने में मदद करता है। दाँतों के डाक्टर के बनाये हुए इस टूथपेस्ट में मसूढ़ों को मजबूत करने वाले विशेष तत्व होते हैं। यह आपके लिए भी अच्छा है— और आपके बच्चे के लिए भी। इसलिए उसे अपने दाँत रोज़— रात को और सवेरे— ब्रश करना सिखाइये— फ़ोरहन्स से.... ताकि उसके दाँत जीवन भर स्वस्थ रहें।

फ़ोरहन्स से दाँतों की देखभाल जितनी जल्दी सिखा दें उतना ही अच्छा है।

"दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" नामक रंगीन सचित्र पुस्तिका P. 10
१० भाषाओं † में प्राप्त है। डाक खर्च के लिए लिख रहे हैं १५ पैसे का टिकट भेजिए:—
मैनर्स डेन्टल एडवाइजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१
नाम ____________________
पता ____________________
† जिस भाषा में चाहिये उस के नीचे कृपया लकीर खींच दीजिये: हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, उर्दू, बंगाली, तामिल, तेलुगु, मलयालम या कन्नड़।

"आप के बच्चे के हित के लिए शायद यह पुस्तिका सबसे ज़्यादा उपयोगी हो सकती है!"

फ़ोरहन्स
टूथपेस्ट—एक दंत चिकित्सक द्वारा निर्मित

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता ८२

बच्चो, नीचे का चित्र है न मजेदार! काश यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० अप्रैल तक भेज दो. हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्र की पृष्ठभूमि को तुम अपनी कल्पना से और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करने की तुम्हें स्वतंत्रता है. सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियों को एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमें से दो के चित्रों को छापा भी जाएगा. लेकिन रंग भरने वालों की उम्र १६ साल से अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोग में लाने चाहिएं. चित्र के नीचे वाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है. पूर्तियां भेजने का पता : संपादक, 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ८२), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया, बंबई-१.

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता – ८२

नाम और उम्र ______________________

पूरा पता ______________________

____

यहां से काटो

यहां से काटो

कोलगेट से सांस की दुर्गंध रोकिये और दंत-क्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये !

क्यों कि : एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेंटल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंत-क्षय पैदा करने वाले ८५प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है, और कोलगेट-विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का... अधिक दंत-क्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह बेमिसाल घटना है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है।

इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है—इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेंटल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं

आप को यदि पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी वे सभी लाभ मिलेंगे—एक डिब्बा महीनों चलता है।

अब ! सुपर साइज खरीदिये ... पैसा बचाइये !

ज्यादा साफ़ व तरोताजा सांस और ज्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...

दुनिया में अधिक लोगों को दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही पसंद है।

DC.G.38 HN

kissekahani.com

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ७९ का परिणाम

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ७९ में जिन तीन चित्रों को पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमें से दो को यहां छापा जा रहा है. पुरस्कार विजेताओं के नाम और पते इस प्रकार हैं :

● कुमारी प्रभा खानझोड़े, ५८/९८ आकाश दीप, ५वां रास्ता, सांताक्रुज (पूर्व), बम्बई-५५.

● कुमारी रजनी जालान, द्वारा जालान एंड कंपनी, अंबाला रोड, पो. बा. नं. ६३, सहारनपुर (उ. प्र.).

● हीरालाल तुलसीदास बलवा, द्वारा कच्छ कांच हाउस, गांधी धाम (कच्छ).

ऊपर वाला चित्र कुमारी प्रभा खानझोड़े का है और नीचे वाला कुमारी रजनी जालान का. दोनों प्रतियोगियों ने बच्चों की आंखों में भय, विस्मय और हास्य के भावों को सफलता-पूर्वक झलकाया है. रंगों का चुनाव भी बढ़िया हुआ है. वस्त्रों को रंगने में कुमारी प्रभा ने खास मेहनत की है.

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चों में से इनके प्रयास अच्छे रहे :

नवीन वर्मा और अनिलकुमार शर्मा, लखनऊ; अनिलकुमार अरोड़ा, बीकानेर; कु. तारा मिर्चा, जोधपुर; विकास विट्ठलराव विसने, नागपुर; कु. रेणु अग्रवाल, रायपुर; विवेकानंद गुप्त, नेवरी (रांची); सत्यव्रत तिवारी और विश्वनाथ मिश्र लखीमपुर खीरी; अशोककुमार, वर्मा, काठगोदाम; जिप्पी कुमार सचदेवा, नई दिल्ली; कु. किरण श्रीवास्तव, कांकेर (जि. बस्तर); कमलेशचंद्र गोयल, अमरोहा; ऐजाज अहमद, रुड़की; कु. राधा, देवबंद; देवकीनंदन शर्मा, डूंगरपुर; नजीरखान महमूदखान, सिक्का पोर्ट; कु. लतिका चौहान, रायपुर; अनिलकुमार खन्ना, कोटा; अजयसिंह, इंदौर-१; दिग्विजय सिंह गोयल, उदयपुर; कृष्णकुमार प्रजापति, हमीरपुर; कमल कुमार जैन, मेरठ; मोहनराव माडतकर तथा कुमारी मधुमति माडतकर, हैदराबाद-२७. ●

दुखी राजकुमारी
सूर्य राजा के राज्य में किसी के मन में सुख नहीं··· फूलों-सी सुन्दर राजकुमारी की मधुर हँसी न जाने कहाँ चली गई
राजा की परेशानी का कोई ठिकाना नहीं। अपने मंत्रियों की सलाह लेने पर सब बेकार...
कितने ही दामी उपहार लाकर दिये, लेकिन राजकुमारी के चेहरे पर हँसी नहीं आई...
...अब राज्य में मानो दुख की छाया उतर आई
एक दिन, एक सुंदर राजकुमार घोड़े पर सवार उधर से जा रहा था, तो उसकी आँखें अचानक दुखी राजकुमारी पर पड़ी।
महल के अन्दर...
Brooke Bond Tea
हर पैकेट से खुशियों से भरी अधिकाधिक प्यालियाँ चाय बनती हैं
राज्य में जैसे खुशियों की एक लहर दौड़ गई...
आज से मेरे राज्य में सबको खुश रखने के लिये चाहिये ब्रुक बॉन्ड रेड लेबल चाय।